एस.सी.ई.आर.टी., बिहार
द्वारा विकसित

F8

दो वर्षीय सेवापूर्व डिप्लोमा इन एलिमेन्ट्री एजुकेशन

हिन्दी का शिक्षणशास्त्र

भाग - 1 (प्राथमिक स्तर)

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.),
महेन्द्रू, पटना, बिहार

बिहार सरकार

एस.सी.ई.आर.टी., बिहार द्वारा विकसित

दो वर्षीय सेवापूर्व
डिप्लोमा इन एलिमेण्ट्री एजुकेशन

हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1

(प्राथमिक स्तर)

F-8

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी),
महेन्द्रू, पटना, बिहार . 800006

तकनीकी सहायता: Implementation Support Agency, SCERT Bihar

प्रकाशक

शिक्षा निदेशालय
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.), महेन्द्रू, पटना, बिहार

© शिक्षा निदेशालय, (एस.सी.ई.आर.टी.), बिहार

विश्व बैंक सम्पोषित परियोजना के अन्तर्गत
डी.एल.एड. (फेस–टू–फेस) के साधनसेवियों एवं प्रशिक्षुओं हेतु

आमुख

भाषा मनुष्यों के विचार विनिमय का सशक्त माध्यम है। विद्यालयीय शिक्षा के संसार मे हिन्दी भाषा–शिक्षण एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। प्रायः भाषा शिक्षण का अर्थ महज इतना समझा जाता है कि इस शिक्षण द्वारा शुद्ध–शुद्ध बोलने, लिखने और पढ़ने की योग्यता हासिल कर ली जाए। पर हिन्दी शिक्षण का क्या केवल यही अभिप्राय है? इन योग्यताओं में स्वाधीन अभिव्यक्ति, प्रासंगिक भाषायीअभिव्यक्ति और किसी रचना की आद्योपान्त समझ की सामर्थ को शामिल करने की योग्यता से हम एक हद तक चुक जाते है। उसी तरह बिहार और भारत के बहुभाषिक परिदृश्य से हम हिन्दी–शिक्षण के गहरे रिश्ते की भी अनदेखी करते है। हम यह तो कहते हैं कि हिन्दी साहित्य के इतिहास मे विद्यापति, सूरदास, मल्लिक मोहम्मद जायसी, फणीश्वर नाथ रेणु जैसे दिग्गज रचनाकारों की मौजूदगी है, पर इन रंगतों वाली भाषा से हम परहेज करते नहीं अघाते। उसी तरह हमारे लिए व्याकरण शिक्षण का मतलब आम तौर पर यही होता है कि कुछ नियमों को याद कर संदर्भहीन प्रस्तुति कर दी जाए। पर संदर्भहीन व्याकरण हमारा साथ उसी तरह छोड़ देती है जैसे महज सैद्धांतिक जानकारी के आधार पर कोई व्यावहारिक प्रस्तुति संभव नहीं। हिन्दी–शिक्षण की इस सामग्री से गुजरते हुए इन पहलुओं पर आप की व्यापक समझ बनेगी।

प्राथमिक शिक्षक की तैयारी का विद्यालयी पाठ्यक्रम के साथ समन्वय करना समय की माँग है। किन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्राथमिक विद्यालयों में हिन्दी का शिक्षण किया जाना है उनको केंद्र में रखकर इस पाठ्य–वस्तु की इकाईयाँ तथा उनकी उप इकाईयाँ तैयार की गई है। प्रशिक्षु हिन्दी भाषा के संरचनागत विशेषताओं के बारे में समझ बनाएँगे जो विशेष कर पहली से पाँचवीं कक्षा के विद्यर्थियों को पढ़ाने में मददगार होंगी। यह पाठ्यपुस्तक प्रशिक्षुओं की क्षमताओं को इस दिशा में अग्रसर करने के अवसर प्रदान करता है। प्रशिक्षु सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने की कुशलताओं और क्षमताओं के बारे में समझ बनाएँगे। वे इन संकल्पनाओं का अर्थ विकसित होने की प्रक्रिया तथा कक्षा में उपयोग करने के तरीकों के बारे में समझ बनाएँगे। शिक्षक होने के लिए यह एक अनिवार्य शर्त है कि वे जिन कुशलताओं और क्षमताओं का विकास विद्यार्थियों में करना चाहते हैं, वे कुशलताएँ और क्षमताएँ स्वयं उनके व्यक्तित्व का हिस्सा हों। इस संदर्भ में यह पाठ्यपुस्तक प्रशिक्षुओं में सम्बन्धित कुशलताओं और क्षमताओं के विकास को महत्त्वपूर्ण स्थान देता है।

प्रशिक्षुओं को ऐसे अवसर उपलब्ध करवाए जाएंगे जिनकी मदद से वह सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने की संकल्पनाओं के बारे में बनी समझ को प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए उपयुक्त शिक्षण प्रक्रियाओं में कर सकेंगे। प्रशिक्षु बच्चों का सतत एवं समग्र मूल्यांकन करने की प्रक्रिया एवं तरीकों के बारे में समझ बनाएंगे। मूल्यांकन के उपागम तथा एक दो बार ली जाने वाली परीक्षा के आधार पर किए जाने वाले मूल्यांकन के बीच शिक्षणशास्त्रीय अंतर के बारे में समझ बनाएँगे। वे समझ पाएंगे कि मूल्यांकन बच्चों की गलतियाँ पकड़ने के लिए न करके वैयक्तिक रूप से उनकी मदद करने के लिए किया जाता है। प्रशिक्षु शिक्षण हेतु सीखने की योजना की जरूरत के बारे में समझ बनाएँगे। उनसे यह अपेक्षा है कि रचनात्मक उपागम के अन्तर्गत पाठ योजना का महत्त्व और सीमाएँ क्या है। वे इस बारे में भी समझ बनाएँगे कि यदि कक्षाओं को गतिविधि आधारित बनाना है तो कक्षा की प्रक्रियाओं के कौन से रूप तथा उनकी क्या चुनौतियाँ हो सकती हैं। आशा है कि इस पाठ्यपुस्तक की मदद से प्रशिक्षु प्राथमिक कक्षाओं में हिन्दी पढ़ने–पढ़ाने की चुनौतियों का सामना बेहतर तरीके से कर पाएँगे।

निदेशक

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

पाठ्य पुस्तक विकास समूह
पत्र–F-8
(हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1 "प्राथमिक स्तर")

दिशाबोध	श्री दीपक कुमार सिंह, भा.प्र.से., अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना श्री सज्जन राजसेकर, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, महेन्द्रू, पटना, बिहार डॉ० एस.पी.सिन्हा, सलाहकार, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना
समन्वयक	डॉ० सुरेन्द्र कुमार, विभाग प्रभारी, भाषा एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, एस.सी.ई. आर.टी., बिहार, पटना
लेखक समूह	डॉ० सुमन कुमार सिंह, उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय, कौड़िया बसंती, भगवानपुर हाट, सीवान
	श्री क्रीत प्रसाद, मध्य विद्यालय, गौढ़ापर, चंडी, नालंदा
	श्री सच्चिदानंद सिंह, साधुलाल पृथ्वीचंद उ० मा० विद्यालय, छपरा, सारण
	श्री चन्द्र किशोर ठाकुर, प्रतिनियुक्त व्याख्याता, प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय बाढ़,पटना
समीक्षक	श्रीमती निशा यादव, व्याख्याता, प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय बाढ़,पटना
	डॉ० विक्रांत भास्कर, व्याख्याता, डायट, खगड़िया

पाठ–सूची

इकाई	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
1	प्राथमिक स्तर पर हिन्दी : प्रकृति एवं उसके शिक्षण के उद्देश्य	08- 21
2	प्राथमिक स्तर की हिन्दी: पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की समझ	23 - 40
3	भाषायी क्षमताओं का विकास : सुनना व बोलना	42 - 62
4	पढ़ने की क्षमता का विकास	64 - 87
5	संदर्भ सूची	88

इकाई 1

प्राथमिक स्तर पर हिन्दी : प्रकृति एवं उसके शिक्षण के उद्देश्य

बिहार एक ऐसा हिन्दी प्रदेश है जिसमें अनेक क्षेत्रीय भाषाएँ बोली जाती हैं। क्षेत्रीय भाषाएँ (मैथिली, भोजपुरी, मगही, अंगिका, वज्जिका आदि) के कारण हिन्दी शिक्षण का परिदृश्य समृद्ध भी होता है और उपभाषाओं से अनेक चुनौतियाँ भी पैदा होती हैं। प्रायः शिक्षार्थी इन क्षेत्रीय भाषाओं के परिवेश में ही जन्म लेते हैं और उनका आरंभिक पालन पोषण होता है। वे इन्हें ही मातृभाषा के रूप में अर्जित करते हैं। मातृभाषा से यह यात्रा आगे की ओर बढ़ती है। बच्चों की दुनिया में हिन्दी की यह यात्रा जब और आगे बढ़ती है तब वह अभिव्यक्ति के अनेक कौशलों से रू–ब–रू होता है।

इस इकाई में बच्चों की दुनिया में हिन्दी के व्यापक फ़लक पर एक नज़र डालने का प्रयास किया गया है। हिन्दी भाषा की प्रकृति सह–भाषाओं यानि मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि से उनका रिश्ता ऐसे संदर्भ हैं जिन्हें समझना अन्य उद्देश्य हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 और बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 में हिन्दी शिक्षण के विभिन्न पहलुओं को समाहित किया गया है, उनका विश्लेषण सहित हिन्दी भाषा के उद्देश्यों को समझना भी इस इकाई का उद्देश्य है।

बच्चों की दुनिया में हिन्दी–

बिहार में बरती जाने वाली हिन्दी को समृद्ध बनाने में बिहार की भाषाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान है। राज्य में बोली जाने वाली भाषाओं (संथाली आदि भाषाओं को छोड़कर) और हिन्दी में एक ही भाषा परिवार की भाषाएँ होने के कारण एक स्वाभाविक संबंध है। अतः बिहार में प्रथम भाषा के रूप में स्वाभाविक पसंद हिन्दी ही है। बच्चे जो घरेलू भाषाएँ उपयोग में लाते हैं उनमें हिन्दी शब्दों की प्रचुरता काफी होती है। इसकी झलक इस वार्तालाप में देख सकते हैं–

रेहाना – तहार घर कहाँ बा?
राजू – हमार घर मोहन चाचा के घर के बगल में बा।
रेहाना – तू कहाँ पढ़ेलअ?

राजू – पुरबारी टोला स्कूल/इस्कूल में।

ऊपर दिए गए उदाहरण में ये स्पष्ट दिख रहा है कि बच्चे अपनी मातृभाषा में संवाद तो कर रहे हैं लेकिन जो शब्द उपयोग में लाए जा रहे हैं उनमें हिन्दी के शब्दों, यथा– घर, कहाँ, चाचा, बगल, टोला आदि शब्दों की बहुलता (कोड मिक्सिंग) है। कहने का तात्पर्य है कि हिन्दी भाषा परोक्ष रूप से उनके दैनिक बोलचाल में शामिल है। ज़रूरत इस बात की है कि बच्चे/बच्चियों की इस भाषायीसमृद्धि का हिन्दी शिक्षण में उपयोग किया जाए।

'आज विद्यालय के दायरे में पहली पीढ़ी के छात्र के रूप में बड़ी तादाद में उन बच्चों को लाया जा रहा है जिनकी भाषा स्थानीय बोली है और यही उनके घरों में बोली जाती है।' यह कथन बिहार की भाषा संबंधी विविधता की ओर संकेत करता है। हम एक विविधतापूर्ण बहुभाषी समाज में रहते हैं जहाँ सभी भाषाएँ मूल्यवान संसाधन हैं। अपने छात्र–छात्राओं को उनके घर की भाषा का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने से उन्हें विद्यालय में आत्मविश्वासी और सहज महसूस करने में मदद मिल सकती है और इससे उन्हें अपनी हिन्दी सुधारने में मदद मिल सकती है।

(TESS India द्वारा विकसित भाषा और साक्षरता, इकाई 6)

इसके अतिरिक्त बच्चे पत्र–पत्रिका, बाल–साहित्य आदि को हिन्दी में पढ़ते या पढ़ने की कोशिश करते हैं। बच्चे शिक्षकों सहित परिवार, सगे–संबंधियों आदि के बातचीत हिन्दी में सुनते, करते या करने की कोशिश करते हैं। इसी तरह वे टेलीविजन, रेडियो आदि के कार्यक्रम हिन्दी में सुनते, समझते और हिन्दी में ही अभिव्यक्त करने के प्रयास करते दिखाई देते हैं। अधिगम में इस समझ को शामिल कर बेहतर भाषायीपुल का निर्माण संभव है।

हिन्दी में आंचलिक भाषाओं की सुगंध इसे और भी सुवासित, सशक्त और समृद्ध बनाती है। सभी प्रमुख विधाओं और ज्ञान के क्षेत्रों में इसका समृद्ध साहित्य भंडार है। – 38:2008, बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एस.सी.ई.आर.टी., पटना)

हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं प्राथमिक स्तर की हिन्दी की समझ

भाषा एक व्यवस्था है और यह व्यवस्था स्वयं उस भाषा की आंतरिक प्रकृति है। भाषा वैज्ञानिक आधारों पर तो भाषा को एक संरचना के रूप में स्वीकार किया गया है। यहीं संरचना, भाषा को व्यवस्थित बनाए रखती है। यह संरचनाजन्य व्यवस्था भाषा की अपनी विशिष्टता है और वह उसके बिखरे तत्त्वों के भीतर सीमित होती है। हिन्दी भाषा के साथ भी ऐसा ही है।

भाषा सामाजिक वस्तु है

भाषा किसी एक व्यक्ति की नहीं हो सकती। यह पूर्णतः सामाजिक वस्तु है। इसकी प्राथमिक शर्त है सामाजिक स्वीकृति और प्रचलन। मान लीजिए मैं अपने उपयोग के लिए किताब को पत्थर, पानी को फूल और कागज को आकाश कहता हूँ और इसी प्रकार मैं स्वयं के उपयोग के लिए वस्तुओं के लिए उपलब्ध प्रतीकों को बदल देता हूँ। इतने सारे

प्रतीकों को बिना सामूहिक सदंर्भ तथा सहायता के याद रखना संभव नहीं है। दूसरी बात यह कि यदि मुझे स्वयं से बात करनी है तो इसके लिए मुझे प्रतीक गढ़ने की क्या आवश्यकता है? प्रतीक गढ़ने का अर्थ ही है कि मैं उसका उपयोग किसी और को समझाने के लिए करूँ। इन आधारों पर भाषा को सामाजिक वस्तु माना जाता है।

भाषा अर्जित संपति है

भाषा को परिवेश से अर्जित किया जाता है। भाषा किसी को अनुवांशिक रूप में नहीं मिलती। हाँ भाषा सीख सकने की क्षमता मनुष्य में जन्मजात होती है लेकिन उस क्षमता के द्वारा भाषा का अर्जन हो सके इसके लिए परिवेशगत भाषा में लोगों के साथ अन्तःक्रिया करनी पड़ती है। जो लोग जिस परिवेश में रहते हैं वे भाषा सीख सकने की जन्मजात क्षमता के आधार पर उस परिवेश में बोली जाने वाली भाषा/भाषाएँ सीख सकते हैं।

भाषा की नियमबद्ध व्यवस्था

एक अहम सवाल है क्या दुनिया में बोली जानी वाली सभी भाषाएँ नियमबद्ध हैं या उनमें से कुछ ही भाषाएँ? क्या भारत या दुनिया में अलग–अलग समूहों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा बिना नियमों के चलती है? यहाँ पर भाषा के नियमों के बारे में बात करने का मकसद किसी भाषा–विशेष के नियमों को सीखना नहीं है बल्कि कुछ भाषाओं के कुछ नियमों से वह आधार तैयार करना है जिससे विभिन्न भाषाओं के नियमों का विश्लेषण किया जा सके।

ध्वनि संरचना

भाषा मूल रूप मे बोली जाती है यानि वह वाचिक होती है। प्रत्येक भाषा में ध्वनियों का वर्गीकरण मिलता है। हिन्दी में स्वर और व्यंजन दो वर्ग हैं। शब्द में पाई जाने वाली ध्वनियाँ किन्ही नियमों का पालन करती हैं। अलग–अलग भाषाओं में स्वरों तथा व्यजंनों की संख्या भिन्न होती है लेकिन संसार की हर भाषा में स्वर तथा व्यंजन होते हैं। शब्द में हर सार्थक ध्वनि का महत्व होता है जिन ध्वनियों के प्रयोग से शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं वे सार्थक ध्वनियाँ कहलाती हैं, जैसे– मिल, मील।

प्रत्येक भाषा की तरह हिन्दी भाषा के शब्दों में स्वर तथा व्यंजन ध्वनियों की व्यवस्था नियमबद्ध है। यदि स्वर के लिए C तथा व्यंजन के लिए V संकेत माने तो यह व्यवस्था सामान्यतः CVCV की होती है यानि दो व्यंजन ध्वनियों के बीच एक स्वर ध्वनि आती है, जैसे– कब में क्+अ+ब्+अ । हर भाषा में ऐसे शब्दों की संख्या बहुत कम होती है जिनमें तीन या उससे अधिक व्यंजन एक साथ आते हों।

शब्द संरचना

हर भाषा में शब्दों के भेद होते हैं उनमें शब्दों को रूपान्तरित किया जा सकता है तथा हर भाषा में नए शब्द–निर्माण की खास प्रक्रिया होती है, जैसे– शब्दों को संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, संबंध बोधक, प्रश्न वाचक, लिंग, वचन, कारक, विभक्ति, आदि कोटियों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे– किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, या भाव का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा की कोटि में रखा जाता है। अगर हम किसी पाठ का एक अनुच्छेद लें और उसमें ऐसे शब्दों की पहचान करें जो संज्ञा की कोटि में शामिल होने लायक हैं तो हम पाएंगे कि छूट गए शब्दों को किन्हीं और कोटियों में रखा जा सकता है। ऐसी कोटियाँ संसार की सभी भाषाओं में बनती हैं। इस आधार पर समस्त भाषाओं में

एकरूपता पाई जाती है। संसार की सभी भाषाओं की तरह हिन्दी में भी शब्दों का रूपान्तरण होता है, जैसे–

संज्ञा	विशेषण
रंग	रंगीला
खर्च	खर्चीला

वाक्य संरचना

किसी भी भाषा के वाक्य में मौजूद बुनियादी घटक, जैसे– कर्त्ता, कर्म, और क्रिया की व्यवस्था से किसी वाक्य की संरचना बनती है। चाहे भोजपुरी हो, मैथिली, मगही या कोई अन्य भाषा। प्रत्येक में वाक्य के घटक किसी निश्चित क्रम में होने पर ही वाक्य की रचना करते हैं, जैसे– इकबाल आम खाता है। हिन्दी में वाक्य संरचना का क्रम संज्ञा+कर्म+क्रिया होता है।

प्राथमिक स्तर की हिन्दी की समझ

किसी भी बच्चे/बच्ची के जीवन की शुरुआत घरेलू भाषाओं से होती है। पर उस भाषा के साथ जैसे ही वे अपने स्कूल में दाखिल होते हैं, प्रायः उनकी भाषाओं के साथ दुराव का व्यवहार किया जाता है। जबकि सच यह है कि स्कूल में आने से पहले बच्चे के पास, घर में बोली जाने वाली भाषा के व्याकरण और उसकी भंगिमाओं की समझ हो चुकी होती है। इसके लिए ज़रूरी है कि ऐसे परिवेश का निर्माण किया जाए, जिसमें उसकी भाषा के प्रति दुराव का नहीं, बल्कि अपनाव का व्यवहार हो। यहीं यह समझ लेना चाहिए कि बच्चे/बच्ची के घर की भाषा के स्वीकार का मतलब मानक हिन्दी का अस्वीकार नहीं है। इसका मतलब केवल इतना है कि आरंभिक कक्षाओं में उनकी घरेलू भाषा को स्वीकार कर आगे की कक्षाओं में मानक हिन्दी की तरफ यात्रा की जाए। घरेलू भाषा का इस्तेमाल हिन्दी व्याकरण और उसकी भाषा–भंगिमा को सिखाने में पुल की तरह किया जाए ।

यह आवश्यक है कि प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा घरेलू भाषा अथवा स्थानीय बोली को स्वीकार किया जाए। हिन्दी के साथ ऐसे बच्चों का परिचय बढ़ाया जाना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि शिक्षक मानक हिन्दी अथवा सही उच्चारण का प्रयोग ही न करें, क्योंकि आज की परिस्थितियों में शिक्षार्थियों के लिए हिन्दी आगे बढ़ने का महत्त्वपूर्ण आधार होगी। (37:2008, बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एस.सी.ई.आर.टी.पटना)

आखिर हिन्दी की आदर्श प्राथमिक कक्षा हम किसे मानते हैं और क्यों? क्या इस पर पुनर्विचार की ज़रूरत नहीं है? हम ऐसा प्रायः देखते हैं कि कोई हँसता–खिलखिलाता विद्यार्थी जैसे ही विद्यालय पहुँचता है, उसकी हँसी गुम हो जाती है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं। एक कारण यह भी है कि उसे विद्यालय की भाषा घर की भाषा से प्रायः अलग नज़र आती है। बात इतनी भर नहीं, सुबह से शाम तक बच्चा या बच्ची अनेक बार तो इस बात के लिए डाँट सुनता/सुनती है कि उसने अशुद्ध शब्द या वाक्य का प्रयोग किया। क्या

प्राथमिक कक्षा की ऐसी कक्षाई स्थितियाँ बच्चे या बच्ची की भाषा शिक्षण के लिए उचित और ऊर्वर ज़मीन उपलब्ध करा पाती है? आइए एक कक्षाई स्थिति को समझें –

सलमान और रेहाना भाई–बहन हैं। उनकी मातृभाषा मगही है। वे गणित को गनित, शाम को साम, मार को माड़ बोलते हैं। इसी तरह की अन्य उच्चारणगत व्यवस्था उनकी भाषा में स्वभावतः मौजूद है। इसके लिए उनकी भोजपुरी भाषी हिन्दी अध्यापिका लता पाण्डेय काफी भला–बुरा कहती हैं। महज दो महीने बाद ही रेहाना और सलमान विद्यालय की कक्षाओं में उदास रहने लगे हैं। अब अधिगम प्रक्रिया में वे कल्पनाशीलता और रचनात्मकता से दूर हो गए हैं। शिक्षिका का मानना है कि वे कक्षा के कमजोर छात्र/छात्रा हैं।

यह कक्षाई स्थिति अपने पीछे कुछ महत्त्वपूर्ण सवाल छोड़ जाती है, मसलन

- क्या सलमान और रेहाना पढ़ाई में कमजोर हैं?
- क्या प्राथमिक स्तर के शिक्षण में भाषा की शुद्धता के अतिवादी आग्रह के कारण अधिगम के महत्त्वपूर्ण पक्षों की प्रायः उपेक्षा हो जाती है?
- क्या हिन्दी भाषा शिक्षण में घरेलू भाषाओं की आवाजाही से कुछ पक्ष जुड़ जाते हैं?

दरअसल स्कूल में जिस मानक हिन्दी भाषा का प्रयोग होता है, वह भाषा प्रायः घरेलू भाषा से भिन्न होती हैं। ऐसे में पहली और दूसरी कक्षा के शिक्षकों के लिए यह चुनौती हो जाती है कि वे किन भाषाओं में संवाद कायम करें ताकि घर और स्कूल के मध्य भाषा पुल की तरह इस्तेमाल की जा सके। इस दिशा में किए गए शोध यह बतातें हैं कि भाषा शिक्षण का यह अहम् पहलू है कि शिक्षक, घर और स्कूल के परिवेश के मध्य एक संवाद स्थापित करने में सफल हो। आइए निम्नांकित अवतरण को पढ़ें –

हमारी पाठ्यपुस्तकें और यहाँ तक कि कहानी की किताबें भी सामान्यतया मुख्यधारा की भाषा में या राज्य की मानक भाषा में होती हैं। पर अक्सर सामाजिक रूप से पिछड़े समुदायों से आने वाले बच्चों की भाषायीपृष्ठभूमि (बोलियों, शब्दावली और विन्यास की दृष्टियों से) भिन्न होती है। ऐसे बच्चों को स्कूल से जोड़ने वाले पुलों की जरूरत है। उनके और उनके परिवारों के लिए न केवल उनका स्कूल आना एक नई बात होती है, बल्कि अक्सर तो जिस नई दुनिया में वे आ पहुँचते हैं उसमें ठीक से स्थापित होने के लिए उन्हें एक नई भाषा की भी आवश्यकता पड़ती है। ज्ञात से अज्ञात की इस यात्रा का दिशा निर्देशन काफी सावधानी से किए जाने की जरूरत होती है। इस पूरे दौर में,जब वह घर से स्कूल की दुनिया और फिर मुख्य धारा की मानक भाषा की दुनिया की ओर बढ़ता है, बच्चे के भाषायीविकास की जिम्मेदारी कक्षा 1 तथा 2 के शिक्षकों की होती है। –**रूक्मिणी बैनर्जी, भाषा–शिक्षण की चुनौतियाँ और जूझने के तरीकेः कक्षा में राज कुमार** By Learning Curve जुलाई 29, 2012

इस अवतरण से हमें पता चलता है कि भाषा शिक्षण के जिन उदेश्यों की चर्चा इस इकाई के आरंभ में की गई है, उन लक्ष्यों को प्राप्त करने में पहली और दूसरी कक्षा में पढ़ाने वाले शिक्षकों की संवेदनशील भाषा दृष्टि बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस क्रम में नीचे दिये गए बिन्दुओं पर विचार किया जा सकता है–

- हिन्दी भाषा और साहित्य के निर्माण में जिन भाषाओं की गहरी भूमिका है उनके प्रति शिक्षक प्रायः उपेक्षा का रवैया क्यों अपनाते हैं?
- क्या आंचलिक भाषाओं में रचे गए साहित्य को हिन्दी शिक्षण का अंग बनाना उचित है?
- भाषा शिक्षण के प्रमुख अवयवों–, सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, को हासिल करने में घरेलू भाषाएँ कौन–सी भूमिका निभाती हैं?

पाठ्यचर्याओं के आलोक में हिन्दी भाषा शिक्षण

भाषा का काम महज भावों की अभिव्यक्ति नहीं है, वह जीवन को समझने, उससे जुड़ने और जीवन जगत को प्रकट करने के लिए एक बृहत्तर आयाम को सम्भव करती है। हिन्दी भाषा शिक्षण केवल साहित्यिक विधाओं का अध्ययन न रह जाए, बल्कि वह जीवन, समाज, संस्कृति और रोज़गार के कहीं अधिक बड़े सरोकारों से जुड़े, पाठ्यचर्याओं की यह विशेष चिंता है। हिन्दी भाषा शिक्षण के विभिन्न कौशलों, जैसे– मौखिक अभिव्यक्ति, पढ़ कर समझना, लिख कर अभिव्यक्त करना आदि की नींव प्राथमिक कक्षाओं में ही तैयार होती है, जिनका उत्तरोत्तर विकास होता है। फिलहाल हिन्दी भाषा शिक्षण के विविध पक्षों के विश्लेषण से सम्पन्न राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 और बिहार पाठ्यचर्या 2008 का अध्ययन अपेक्षित है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 और हिन्दी भाषा शिक्षण

किसी बच्चा/बच्ची के व्यक्तित्त्व निर्माण में मातृभाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। भाषा के इस रूप को बच्चे अपने माता–पिता, परिजनों से सुनकर और उस माहौल में रहकर अनायास ही सीख जाते हैं। वे जब स्कूल जाते/जाती हैं तब उनके पास इस भाषा का समृद्ध संसार होता है। साथ ही स्कूल की भाषा का भी एक रूप होता है। कुल मिलाकर उनके पास अनेक भाषाओं का संसार होता है। इसे समाज की बहुभाषिक स्थिति कह सकते हैं। दरअसल बहुभाषिकता भारतीय समाज के भाषा बोध की रचनात्मक सच्चाई है। वह हमारी परम्परा और संस्कृति का अभिन्न अंग है। बच्चे की मौलिकता एवं सहज रचनाशक्ति को सामने लाना हिन्दी भाषा शिक्षक का प्राथमिक दायित्व है। लिहाजा आत्मीय माहौल बनाना उसका ज़िम्मेदारी है। इस माहौल में ही विभिन्न भाषायीकौशलों का विकास संभव है। कहना न होगा हिन्दी शिक्षण का दायरा इतना व्यापक होना चाहिए कि उसमें उल्लिखित सारे सरोकार शामिल हों। भाषा बच्चे के रोज़मर्रा के जीवन का हिस्सा है, यह समझे बिना स्कूल में हिन्दी शिक्षण की कोई अवधारणा नहीं बन सकती।

भाषा शिक्षण के लिए स्कूल में कोई कार्यक्रम शुरू होता है तो हमें बच्चे की सहज भाषायीक्षमता को पहचानना होगा और समझना होगा कि भाषाएँ सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से बनती हैं एवं हमारे प्रतिदिन के व्यवहार से बदलती है। – 41: 2005 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली

हिन्दी अनेक रूपों में प्राथमिक बच्चे/बच्चियों के जीवन का हिस्सा बनती है। कहीं वह माध्यम भाषा के रूप में तो कहीं विषय के रूप में। इस तरह हिन्दी शिक्षण को केवल साहित्य तक सीमित करना, उसके व्यापक दायरे को संकुचित करना होगा। विभिन्न विषयों के अध्ययन के दौरान समझ, अवधारणाएं भाषा में ही बनती है। लिहाजा अन्य विषयों के अध्ययन के दौरान भी हिन्दी की भूमिका है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या इसे विशेष तौर पर रेखांकित करती है ।

भाषा शिक्षण केवल भाषा कक्षा तक ही सीमित नहीं होता है। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा सीखने का अवसर प्रदान करता है। किसी विषय को सीखने का मतलब है उसकी अवधारणाओं को सीखना, उसकी शब्दावली को सीखना, उनके बारे में आलोचनात्मक ढंग से चर्चा करना और उनके बारे में लिख सकना।

– 42: 2005 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली

हिन्दी भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में यह समझ लेना चाहिए कि पुरानी कक्षाएं प्रायः पाठ आधारित अधिगम तक केंद्रित थीं। पर राष्ट्रीय पाठयचर्या 2005 और बिहार पाठयचर्या 2008 इस बात पर जोर देती है कि भाषा शिक्षण की पारम्परिक अवधारणा यानि पाठ्यपुस्तक केन्द्रित अधिगम से बाहर निकलकर भाषा-शिक्षण के उस व्यापक लक्ष्य को हासिल किया जाए जिससे जीवन के वृहत्तर सरोकार प्रकट किये जा सकें। नीचे दिया गया उदाहरण इसे और स्पष्ट करता है–

एक प्राथमिक विद्यालय में भाषा की शिक्षिका ने कक्षा तीन के विद्यार्थियों को उनकी पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानियों में से एक कहानी सुनाने का टेस्ट लिया। कक्षा में कुल 30 बच्चे थे। मयंक के अलावा सभी बच्चों ने पाठ्यपुस्तक में से कहानी सुनाई। अधिकांश बच्चों ने 10 में से 6 अंक प्राप्त किए। सबसे ज्यादा प्रकृति को 8 अंक मिले और मयंक के सबसे कम 2 अंक आए। शिक्षिका ने जब सभी बच्चों को अंक बताए तो मयंक के अंक सुनकर सभी बच्चे हँसने लगे तथा चिढ़ाने लगे। मयंक को यह समझ में नहीं आ रहा था कि उसके इतने कम अंक क्यों आए?

सभी की तरह उसने भी कहानी सुनाई थी। वह उदास होकर चुपचाप बैठ गया। कुछ देर बाद शिक्षिका से कक्षा के बाहर जाकर पूछा कि मैडम मेरे सबसे कम अंक क्यों आए हैं? शिक्षिका ने कहा– ''मैंने पुस्तक में से कहानी सुनाने के लिए कहा था। अपने मन से कुछ भी बोलने के लिए नहीं।'' उसके बाद मयंक ने कभी भी कक्षा में अपनी खुशी से कक्षा की

किसी भी गतिविधि में भाग नहीं लिया और न ही खुशी से स्कूल आना चाहा। उसके माता–पिता को बड़ी मुश्किल से उसे स्कूल के लिए तैयार करना पड़ता था।

उदाहरण–2 यह भी उदाहरण हिन्दी भाषा की कक्षा 3 का है। जहाँ शिक्षक ने बच्चों को 'गाय' विषय पर पाँच वाक्य लिखवाए–

1. गाय हमारी माता है।
2. उसके चार पैर होते हैं।
3. वह हरी घास खाती है।
4. गाय दूध देती है।
5. गाय के गोबर से उपले बनते हैं।

शिक्षक ने लिखाने के बाद कहा कि उन पाँचों वाक्यों को याद कर लो टेस्ट में लिखना होगा। 1 वाक्य पर एक नम्बर मिलेगा और जो पाँचों वाक्यों को सही लिखेगा उसे पूरे–पूरे नम्बर मिलेंगे।

शिक्षक के निर्देश के अनुसार सभी बच्चे याद करने में लग गए। टेस्ट हुआ, अधिकांश बच्चों ने शिक्षक के द्वारा लिखवाए गए वाक्यों को हू–ब–हू लिखा। नीलम ने भी 5 वाक्य लिखे। किन्तु ये शिक्षक के द्वारा लिखवाए गए वाक्यों से अलग थे।

1. गाय हमारी माता है।
2. उसके चार पैर होते हैं।
3. मेरे घर में बहुत सारी गायें हैं।
4. गाय के दूध से पैसे मिलते हैं।
5. जीतू की गाय के छोटा–सा बच्चा है।

अधिकांश बच्चों को 5 में से 5 नम्बर दिए गए। नीलम को सिर्फ 2 नम्बर दिए गए। जबकि उसने भी बाकी बच्चों की तरह 5 वाक्य लिखे। वाक्यों के लिखने में कोई गलती नहीं की फिर भी कम नम्बर दिए गए। **2011 : 3 ,2) प्रारम्भिक कक्षाओं में भाषा सीखना–सिखाना ,प्रारम्भिक शिक्षा में डिप्लोमा, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयीय शिक्षा संस्थान**

ऐसे उदाहरण इस बात को पुष्ट करते हैं कि भाषा शिक्षण की पारम्परिक कक्षाएं प्रायः तनाव, असुरक्षा और भय पैदा करती हैं, अधिगम की ऐसी प्रक्रियाएँ स्वाधीन भाषा अभिव्यक्ति को बाधित करती है। हम जानते हैं कि स्वाधीन अभिव्यक्ति के लक्ष्य को हासिल करना भाषा शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण सरोकार है।

बिहार पाठ्यचर्या 2008 और हिन्दी भाषा शिक्षण

बिहार पाठ्यचर्या यह साफ तौर पर रेखांकित करती है कि भाषा केवल संवाद और सम्प्रेषण का काम ही नहीं करती अपितु वह शिक्षण के सम्पूर्ण कार्यकलापों के लिए माध्यम की भूमिका का भी निर्वहन करती है। समाजीकरण और संस्कृतिकरण की प्रक्रियाएँ भी भाषा के द्वारा सम्पन्न होती हैं। समाजीकरण और संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में जिस सांस्कृतिक अस्मिता का निर्माण होता है उसके निर्माण में विभिन्न भाषिक परिवेशों, जो जन्म के साथ ही घरेलू, सामाजिक और विद्यालयी वातावरण से प्राप्त होती है कि आधारभूत भूमिका होती है।

बिहार पाठ्यचर्या इस बात की चिंता करती है कि स्कूल में अपनी शुरुआत और फिर विकास करने वाले छोटे शिक्षार्थियों के भाषायीकौशल को कैसे विकसित किया जाए और समृद्ध बनाया जाए? सहानुभूति पूर्वक संवाद और संवेदना से समृद्ध ज्ञान के आधार पर ही भाषायीकौशल का विकास किया जा सकता है। पाठ्यचर्या की टिप्पणी गौरतलब है, बच्चा व्यक्ति, स्थान और विषय के अनुसार अपने भाषिक व्यवहार में परिवर्तन कर सकता है, लेकिन वह भाषा की इन जटिल संरचनाओं के नियम नहीं बता सकता। कक्षा में बच्चे की इन विशेषताओं को ध्यान में रखकर उसके भाषायीकौशल का विकास सहानुभूति संवाद तथा संवेदनात्मक ज्ञान के द्वारा किया जाना चाहिए। (37:2008 बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एस.सी.ई.आर.टी., पटना)

कहना न होगा भाषायीजटिलताओं को समझने और प्रसंगानुकूल उनके व्यवहार की बारीकियों से रू–ब–रू हुए बिना विभिन्न भाषायीकौशलों को अर्जित करना संभव नहीं।

हिन्दी भाषा का अध्ययन अपने परिवेश की विविधताओं–विशेषताओं को समाहित करते हुए हो तब वह रचना के समृद्ध अनुभव सन्दर्भों को सहज ही संभव कर सकती है। कहानी, कविता, संस्मरण, रिपोर्ताज जैसी अनेक विधाएँ तभी जीवंत होतीं हैं, जब उनमें अपने परिवेश की भाषा की सुवास हो। लोकतंत्रिक चेतना के सृजन में भाषायीउदारवाद का बड़ा योगदान है।

भाषा शिक्षण को धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता और ज़रूरतमंद की चिंता जैसे मूल्यों के अंगीकार के लिए भी मददगार होना चाहिए। अतएव पाठों के चयन तथा अध्यापन विधि, दोनों मामलों में काफी ध्यान देने की ज़रूरत है।

(39:2008, बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एस.सी.ई.आर.टी., पटना)

बिहार जैसे बहुभाषिक प्रदेश के लिए बहुभाषिकता न सिर्फ ताकत है अपितु एक कारगर संसाधन भी है। इसके सन्दर्भ का उपयोग हिन्दी शिक्षण में भी संभव है। संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, बांग्ला, भोजपुरी, वज्जिका, मैथिली, अंगिका, मगही जैसी भाषाएँ बिहार के भाषायीपरिदृश्य में स्वाभाविक रूप से घुली–मिली हैं। इन भाषाओं का प्रभाव यहाँ रचे गए हिन्दी साहित्य में भी दिख जाते हैं। उन तत्त्वों की छानबीन हिन्दी शिक्षकों का दायित्व है। इनका उपयोग और सर्वेक्षण हिन्दी शिक्षण का अंग है। विभिन्न रचनाकारों की अलग–अलग तरह की रंगतों वाली हिन्दी (विद्यापति, तुलसीदास, सूरदास, राजा राधिका रमण प्रसाद, शिवपूजन सहाय, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु इत्यादि) को जानना–समझना और उनका सर्जनात्मक उपयोग करना भी हिन्दी शिक्षण का अंग है।

हिन्दी भाषा शिक्षण से अर्जित दक्षताएँ

भाषा एक ऐसा औजार है, जिसका उपयोग ज़िन्दगी को समझने, उससे जुड़ने और जीवन जगत को प्रकट करने के लिए करते हैं, तब सहज ही हमारा ध्यान भाषा शिक्षण से अर्जित कौशलों की तरफ जाता है। उन कौशलों की पहचान हम सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना के रूप में करा सकते हैं। यह क्यों ज़रूरी है? एन.सी.ई.आर.टी. के हिन्दी पाठ्यक्रम में इसे ज्यादा स्पष्ट तरीके से कहा गया है। उसे यहाँ उद्धृत करना तर्कसंगत होगा–

"विद्यार्थियों में बोलने का कौशल इस सीमा तक विकसित हो चुका हो कि औपचारिक चर्चाओं व वाद विवाद में बेझिझक होकर बोल सकें। वे अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट, व्यवस्थित और असरदार ढंग से अभिव्यक्त कर सकें। भाषा पर उनका इतना अधिकार हो चुका हो कि वे जीवन की विविध स्थितियों से आत्मविश्वासपूर्वक गुज़र सकें। विभिन्न प्रकार के औपचारिक व अनौपचारिक सन्दर्भों के अनुसार उचित शैली चुन सकें। वे सहज, कल्पनाशील, प्रभावशाली और व्यवस्थित ढंग से किस्म–किस्म का लेखन कर सकें। भाषा को जानदार बनाने के लिए उर्दू के और आंचलिक शब्दों का इस्तेमाल करने की समझ उनमें हो। पढ़ना, सुनना, लिखना, बोलना इन चार प्रक्रियाओं में विद्यार्थी अपने पूर्वज्ञान की सहायता से अर्थ की रचना कर पाएँ और कही गई बात के निहितार्थ को भी पकड़ पाएँ। (9:2007 हिन्दी, कक्षा 1–5 प्रांभिक कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली) प्रायः इन कौशलों पर हम फौरी तौर पर राय दे देते हैं। ज़रूरी है कि हम इन कौशलों को और गहराई से समझें। सुनने की क्षमता को तार्किक ढंग से विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि कक्षाई गतिविधियों में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों, जैसे– लोककथाओं, कहानियों, सामुदायिक गान, नाटक जैसे सन्दर्भों का सृजनात्मक उपयोग किया जाए। भाषा के जरिए हम एक दूसरे के अनुभवों से जुड़ते हैं। इसमें बोलने की अहम भूमिका होती है। पारंपरिक कक्षाओं में भाषा शिक्षक शुद्धता पर अतिवादी रुख अपनाते हैं। पर यह बोलने की दुनिया का आरम्भिक चरण नहीं है। आरम्भिक चरण है उस माहौल की रचना करना, जिसमें बच्चे/बच्चियाँ खुल कर राय दे सकें। शुद्धता का सवाल इसके बाद आता है। जिसे धीरे–धीरे अवसरानुकूल परिस्थितियों में हासिल किया जा सकता है। कक्षा में बोलना कौशल के लिए विभिन्न समूह बनाकर चर्चा कराई जा सकती है। चित्र नक्शे आदि का उपयोग भी सम्भव है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बोलने की प्रक्रिया में लोग एक–दूसरे से जुड़ते हैं साथ ही वे एक–दूसरे के साथ घटित को महसूस भी करते हैं। बोलने की दक्षताओं में इन सन्दर्भों के शामिल करने पर सकारात्मक परिणाम निकलने की सम्भावनाएं बन सकती हैं ।

भाषा शिक्षण से अर्जित होने वाले एक और कौशल को हम पढ़ना के रूप में देखते हैं। सवाल है पढ़ना क्या है'? लोग बड़ी आसानी से ऐसा कहते हुए मिल जाते हैं– बच्चे/बच्चियाँ पढ़ना नहीं चाहते/चाहतीं, पढ़ाई में उनकी रुचि नहीं आदि। यदि वास्तव में इस तरह के प्रसंग परेशान करते हैं तो हमें सबसे पहले यह समझना होगा कि पढ़ना आखिर है क्या? पढ़कर समझना ही पढ़ना है। नीचे लिखे वाक्य को ब्लैक बोर्ड पर लिखें–

अस्धग्त्ग क्ज्यर्त्व ल्ख्ध्र प्रुनीता!

अब बच्चे/ बच्चियों से कहें कि वे इसे पढ़ें। अब विद्यार्थियों और पढ़ने वाले से पूछें कि जो उन्होंनें जो पढ़ा क्या वह समझ में आया? यदि नहीं पढ़े तो क्यों नहीं पढ़ पाए? असल में पढ़ना तभी संभव है, जब उसे समझा भी जाए। अन्यथा वह ज्यादा से ज्यादा बांचना है।

पढ़ने का मतलब सिर्फ अक्षरों से जुडी ध्वनियाँ उत्पन्न करना नहीं है, बल्कि लिखी हुई चीज़ का अर्थ निकालना है। बच्चा पढ़ने के लिए स्वतः उत्प्रेरित हो इसके लिए आवश्यक है कि उसे पढ़ने के लिए वैसी सामग्री दी जाए जो रोचक एवं आकर्षक हो, उसके स्तर का हो। पढ़ने के कौशल के विकास के लिए बाल पत्रिकाएँ, पत्र, विज्ञान पत्रिकाएँ, कहानी, उपन्यास इत्यादि का संसाधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

(40:2008 बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एस.सी.ई.आर.टी. पटना)

हिन्दी भाषा शिक्षण में भाषायीकौशल का एक उल्लेखनीय सन्दर्भ 'लिखना' है। लिखना रटे हुए को उगलना नहीं है। यह अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि लिखना कहने का एक ख़ास अंदाज़ है। इसमें स्वाधीन अंदाज़ की इज्जत करने की भूमिका का खासा महत्त्व है। इस सन्दर्भ में निम्नांकित टिप्पणी उल्लेखनीय है –

लेखन पढ़ी हुई चीज़ को उगलना नहीं है, यह तो तोता-रटन्त या पुनर्प्रस्तुति है। लिखना दरअसल अनुभवों और विचारों का, हर पढ़ी हुई चीज़ का बेहतर विवेचन है। इन्हें अपनी विशिष्ट जुबान में कैसे कहा जाए, ताकि बात भी कह दी जाए और बात पर अपनी छाप भी लग जाए– यह लेखन की कला है जिसे अभ्यास से साधा जा सकता है, बशर्ते अभ्यास में आज़ादी हो लिखने की, विविध भंगिमाओं से खेलने की। तभी हम सिर्फ अच्छा लिखने वाले विद्यार्थी से आगे जाकर लेखक–लेखिका पैदा करा सकेंगे, जिन्हें अपनी रचना पर फ़क्र होगा। (19:2013, भाषा की समझ, प्रशिक्षण सामग्री के.जी.बी.वी. उच्च प्राथमिक स्तर के हिन्दी शिक्षकों के लिए)

इस प्रकार भाषा शिक्षण से अर्जित दक्षताओं को समग्रता में समझना ज़रूरी है।

समेकन–

हिन्दी भाषा शिक्षण पर आधारित इस इकाई में हमने बखूबी समझा कि भाषा महज नियमों द्वारा संचालित सिर्फ व्यवस्था ही नहीं है न ही संप्रेषण का माध्यम भी। यह मानवीय व्यवहार का वह अटूट हिस्सा है, जिसमें सपने, संघर्ष और यथार्थ की अभिव्यक्ति होती है। विभिन्न भाषायीकौशलों को अर्जित करना स्कूली शिक्षा का अनिवार्य हिस्सा है। किसी भी बच्चे/ बच्ची के जीवन की शुरुआत घरेलू भाषाओं से होती है, पर उस भाषा के साथ जैसे ही वे अपने स्कूल में दाखिल होते हैं, प्रायः उनकी भाषाओं के साथ दुराव का व्यवहार किया जाता है। जबकि सच यह है कि स्कूल में आने से पहले बच्चों के पास, घर में बोली जाने वाली भाषा के व्याकरण और उसकी भंगिमाओं की समझ हो चुकी होती है। इसके लिए ज़रूरी है कि ऐसे परिवेश का निर्माण किया जाए, जिसमें उसकी भाषा के प्रति दुराव का नहीं, बल्कि अपनाव का व्यवहार हो।

प्राथमिक कक्षाओं में हिन्दी भाषा शिक्षा को कारगार बनाने के लिए, बिहार और भारत के बहुभाषिक परिदृश्य को समझना आवश्यक है। हिन्दी अनेक रूपों में प्राथमिक बच्चे बच्चियों के जीवन का हिस्सा बनती है। कहीं वह माध्यम भाषा के रूप में तो कहीं विषय के रूप में। इस तरह हिन्दी शिक्षण को केवल साहित्य तक सीमित करना, उसके व्यापक दायरे को संकुचित करना होगा। विभिन्न विषयों के अध्ययन के दौरान समझ, अवधारणाएं भाषा में ही बनती है। लिहाजा अन्य विषयों के अध्ययन के दौरान भी हिन्दी की भूमिका है। बिहार जैसे बहुभाषिक प्रदेश के लिए बहुभाषिकता न सिर्फ ताकत है अपितु एक कारगर संसाधन भी है। इसके सन्दर्भ का उपयोग हिन्दी शिक्षण में भी संभव है। संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, बांग्ला, भोजपुरी, वज्जिका, मैथिली, अंगिका, मगही जैसी भाषाएँ बिहार के भाषायीपरिदृश्य में स्वाभाविक रूप से घुली–मिली हैं। इन भाषाओं का प्रभाव यहाँ रचे गए हिन्दी साहित्य में भी दिख जाते हैं। उन तत्त्वों की छानबीन हिन्दी शिक्षकों का दायित्त्व है।

भाषा एक ऐसा औजार है, जिसका उपयोग ज़िन्दगी को समझने, उससे जुड़ने और जीवन जगत को प्रकट करने के लिए करते हैं, तब सहज ही हमारा ध्यान भाषा शिक्षण से अर्जित कौशलों की तरफ जाता है। उन कौशलों की पहचान हम सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना के रूप में करा सकते हैं। सुनना, पढ़ना, बोलना, लिखना, इन चार प्रक्रियाओं में विद्यार्थी अपने पूर्वज्ञान की सहायता से अर्थ की रचना कर पाएँ और कही गई बात के निहितार्थ को भी पकड़ पाएँ। सुनने की क्षमता को तार्किक ढंग से विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि कक्षाई गतिविधियों में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों, जैसे– लोककथाओं, कहानियों, सामुदायिक गान, नाटक जैसे सन्दर्भों का सृजनात्मक उपयोग किया जाए। भाषा के जरिए हम एक दूसरे के अनुभवों से जुड़ते हैं। इसमें बोलने की अहम भूमिका होती है। बोलने की प्रक्रिया में लोग एक–दूसरे से जुड़ते हैं साथ ही वे एक–दूसरे के साथ घटित को महसूस भी करते हैं। बोलने की दक्षताओं में इन सन्दर्भों के शामिल करने पर सकारात्मक परिणाम निकलने की संभावनाएं बन सकती हैं। लिखना दरअसल अनुभवों और विचारों का, हर पढ़ी हुई चीज़ का बेहतर विवेचन है। इन्हें अपनी विशिष्ट ज़ुबान में कैसे कहा जाए, ताकि बात भी कह दी जाए और बात पर अपनी छाप भी लग जाए। यह लेखन की कला है जिसे अभ्यास से साधा जा सकता है। पढ़ने का मतलब सिर्फ अक्षरों से जुडी ध्वनियाँ उत्पन्न करना नहीं है, बल्कि लिखी हुई चीज़ का अर्थ निकालना है। बच्चा पढ़ने के लिए स्वतः उत्प्रेरित हो इसके लिए आवश्यक है कि उसे पढ़ने के लिए वैसी सामग्री दी जाए जो रोचक एवं आकर्षक हो, उसके स्तर का हो।

महत्वपूर्ण लिंक

- www.ncert.nic.in
- www.nuepa.org
- http://www.educationbihar.gov.in
- http://mhrd.gov.in/elementaryeducation

मूल्यांकन

1. भाषा शिक्षण क्या है? क्या भाषा शिक्षण केवल व्याकरणिक विशेषताओं का अध्ययन है?
2. हिन्दी भाषा की प्रकृति पर प्रकाश डालें।
3. क्या दुनिया में बोली जानी वाली सभी भाषाएँ नियमबद्ध हैं? सोदाहरण स्पष्ट करें।
4. अन्य भाषाओं की तरह हिन्दी भाषा के शब्दों में भी स्वर तथा व्यंजन ध्वनियों की व्यवस्था नियमबद्ध है। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करें।
5. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा और बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा के आलोक में हिन्दी शिक्षण क्या है?
6. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा और बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा के आलोक में हिन्दी भाषा के उद्देश्यों पर प्रकाश डालें।
7. हिन्दी भाषा शिक्षण में साहित्यिक रचनाओं की क्या भूमिका है?

8. बिहार में बोली जाने वाली भाषाओं से संबंधित हिन्दी रचनाओं पर विचार कीजिए और उनकी विशेषताओं का दस्तावेजीकरण कीजिए।

सन्दर्भ

- भाषा–शिक्षण की चुनौतियाँ और जूझने के तरीकेः कक्षा में राजकुमार

  जुलाई 29, 2012
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 , एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली
- बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा2008 , एस.सी.ई.आर.टी., पटना
- भाषा की समझ, प्रशिक्षण सामग्री के.जी.बी.वी. उच्च प्राथमिक स्तर के हिन्दी शिक्षकों के लिए
- कक्षा 1–5 प्रारंभिक कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली
- प्रारम्भिक कक्षाओं में भाषा सीखना–सिखाना प्रारम्भिक शिक्षा में डिप्लोमा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयीय शिक्षा संस्थान
- कोंपल, भाग–3, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना, बिहार ।

परियोजना कार्य

क्यू. आर कोड को स्केन कर परियोजना कार्य से संबंधित विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

- स्कूल की प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे/बच्चियों की हिन्दी और हिन्दी से अलग विषयों की कक्षाओं में प्रयुक्त होने वाले वाक्यों/शब्दावलियों का अध्ययन कीजिए और बताइए कि हिन्दी शिक्षण के विभिन्न रूपों के स्वरूप क्या हैं ?
- किसी एक विद्यार्थी को लगभग 200 शब्दों का एक अपठित गद्यांश देकर उससे पढ़ने को कहें। उसके आधार पर उसके पढ़ने की क्षमता का आकलन करने के लिए आप क्या और कैसे करेंगे? एक रिर्पोट तैयार कीजिए।
- किसी कहानी को नाटक रूप में कक्षा– 3 से 5 के बच्चों से करवाइए। इसके लिए बच्चों के साथ मिलकर संवाद बनाइए, फिर बच्चों को उस पर अभिनय करवाइए। अपने अनुभव का विवरण दीजिए।
- बड़े आकार के दस ऐसे चित्रों का चुनाव कीजिए जिनका उपयोग पहली कक्षा के विद्यार्थियों को बातचीत के अवसर उपलब्ध करवाने हेतु किया जा सकता है। प्रत्येक चित्र के साथ उसके चुनाव के कारण देते हुए फाइल तैयार कीजिए।

- कक्षा–4 या 5 के कुछ विद्यार्थियों को हिन्दी का लगभग 200 शब्दों का एक अपठित गद्यांश देकर उनसे पढ़ने को कहें। उसके आधार पर उनके पढ़ने की क्षमता का आकलन करते हुए एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।
- कक्षा एक व दो की हिन्दी पाठ्य–पुस्तक में से बच्चों को कौन सी कहानी ज्यादा अच्छी लगी। इसके बारे में बच्चों से बातचीत कीजिए कि यह कहानी क्यों अच्छी लगी?
- अपने आसपास के 3–4 वर्ष के बच्चों द्वारा बोले जाने वाले 10 वाक्यों को लिखिए और विश्लेषण करके लिखिए कि भाषा के नियम की दृष्टि से वह बच्चा क्या–क्या जानता है।

इकाई 2

प्राथमिक स्तर की हिन्दी: पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की समझ

क्या है शिक्षा? इस एक सवाल के इर्द–गिर्द ऐसे और भी अनेक सवाल हैं जिनके जवाब खोजने की कवायद में और भी अनेक बिंदु उजागर होंगे। दरअसल शिक्षा के स्वरूप पर ही निर्भर करता है कि हम बच्चों को शिक्षा के 'बहाने' उन्हें क्या देना चाहते हैं और क्यों देना चाहते हैं? यदि शिक्षा जीने की तैयारी है या बेहतर तरीके से जीना है तो बच्चों की पूरी शिक्षा इसी एक उद्देश्य के इर्द–गिर्द घूमती है। यदि शिक्षा का अर्थ बेहतर रोज़गार उपलब्ध कराना है तो फिर पूरी तैयारी इसी लक्ष्य के आस–पास घूमती है और हम ऐसे विषयों को पढ़ाने की पैरवी करते हैं जिनसे रोज़गार के अवसरों में बढ़ोतरी होती है। अंततः यह सवाल उठता है कि यह कौन तय करता है कि शिक्षा क्या है? हम बच्चों को क्या पढ़ाएँ और कैसे पढ़ाएँ? आकलन की प्रक्रिया का स्वरूप क्या हो? इन्हीं सब मुद्दों पर इस इकाई में चर्चा की गई है। इस इकाई में प्राथमिक स्तर पर हिन्दी की पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक के स्वरूप, उद्देश्य एवं संरचना की अवधारणागत समझ के साथ–साथ प्राथमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों एवं अभ्यास प्रश्नों की प्रकृति पर भी समझ बनाने की कोशिश की गई है। विद्यालय में पढ़ी–पढ़ाई जाने वाली पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की प्रक्रिया को समझना भी बेहद ज़रूरी है। यह समझना भी ज़रूरी है कि पाठ्यपुस्तक किस प्रकार स्वतंत्र होते हुए भी किन्हीं मानदंडों के साथ बंधी हुई है।

बिहार के प्राथमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम के उद्देश्य –

हम अपनी–अपनी कक्षाओं में हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों को पढ़ते रहे हैं। इन पाठ्यपुस्तकों में अनेक प्रकार की कहानियाँ, कविताएँ, पत्र, जीवनी आदि पाते हैं और उन्हें पढ़ते हैं। सम्भव है कि यह सवाल मन में आए कि हिन्दी की पाठ्यपुस्तक का निर्माण किस आधार पर किया गया होगा? यह सवाल भी मन में आता होगा कि पाठ्यपुस्तकों में अभ्यास कार्य देने का क्या औचित्य है? आपने बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा के बारे में सुना–पढ़ा होगा जो बार–बार बच्चों के सीखने–सिखाने के तरीकों और विभिन्न विषयों को पढ़ाने के

औचित्य और तरीकों पर चर्चा करती है। बिहार की विद्यालयीय शिक्षा हेतु नवीन पाठ्यक्रम में विभिन्न कक्षाओं में विभिन्न विषयों को पढ़ाने की विषय–वस्तु तय की गई है। कक्षाओं में हिन्दी भाषा का आकलन जिस तरह से करते हैं वह तरीका और समझ कहाँ, से आई? शिक्षक किसी कहानी या कविता को पढ़ाते समय उसके कुछ उद्देश्य भी निर्धारित करते हैं और पूरा प्रयास करते हैं कि बच्चों को 'बात' समझ में आ जाए।

विचारणीय बिन्दु –1

1.1 –कक्षाओं में हिन्दी–शिक्षण की जरूरत क्यों है?

1.2 –क्या हम पहली कक्षा के हिन्दी पाठ्यपुस्तक को तीसरी एवं तीसरी कक्षा की हिन्दी पाठ्यपुस्तक को पहली कक्षा में पढ़ा सकते हैं? क्यों?

दरअसल **पाठ्यचर्या** एक ऐसा दस्तावेज़ है जिसमें बृहद् रूप से बच्चों की विद्यालयी शिक्षा के बारे में हर परिप्रेक्ष्य में गहन विचार किया जाता है। बच्चों की शिक्षा के स्वरूप को तय करते समय राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक ज़रूरतों पर ध्यान दिया जाता है। यही कारण है कि शिक्षा को परिवर्तनकारी औज़ार के रूप में लेते हुए मूल्य–संवर्धन की चर्चा की गई है। बच्चों में वह क्षमता का विकास करने की बात भी प्रमुख रूप से उजागर होती है जो उन्हें सही और गलत में निर्णय लेना सिखाए, उन्हें परिस्थितियों का दास बनने की बजाय उनका सामना करना सिखाए और ज्ञान का अर्जन करने के तरीके सिखाए। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पाठ्यचर्या राष्ट्रीय और सामाजिक सरोकारों को केंद्र में रखने के साथ–साथ बच्चों को ऐसे नागरिक बनाना चाहती है जो स्वयं के विकास के साथ राष्ट्र और समाज का विकास कर सकें। बच्चों की क्षमताओं में भरपूर विश्वास व्यक्त करते हुए पाठ्यचर्या उन्हें सबल व्यक्तित्व के रूप में विकसित होने के अवसर देने पर बल देती है।

प्रायः पाठ्यचर्या को (curriculum) पाठ्यक्रम (syllabus) के रूप में समझ लिया जाता है। जबकि दोनों में मूलभूत अंतर है। माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार *'पाठ्यचर्या का अर्थ रूढ़िवादी ढंग से पढ़ाए जाने वाले बौद्धिक विषयों से नहीं है परंतु उसके अंदर वे सभी क्रियाकलाप आ जाते हैं जो बच्चों को कक्षा के बाहर तथा भीतर प्राप्त होते हैं।'* पॉल हिर्स्ट ने पाठ्यचर्या को परिभाषित करते हुए कहा है कि उन सभी क्रियाओं का स्वरूप जिनके द्वारा बच्चे शैक्षिक लक्ष्यों अथवा उद्देश्यों को प्राप्त कर लेंगे पाठ्यचर्या की संज्ञा दी जाती है।

राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005 के संदर्भ में गठित 'पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों' के लिए राष्ट्रीय फोकस ग्रुप के अपने आधार–पत्र *(2009:11–12)* में पाठ्यचर्या को इस प्रकार परिभाषित किया है– *'पाठ्यचर्या का सर्वोत्तम अर्थ योजनाबद्ध गतिविधियो का ऐसा समुच्चय है जिसे पाठ्य की विषय–वस्तु तथा सुविचारित ढंग से पोषित किए जाने वाले ज्ञान, कौशल व अभिवृत्तियों के साथ–साथ विषय–वस्तु के चयन के लिए सिद्धांत वक्तव्य और पद्धतियों, सामग्री तथा मूल्यांकन के चयन के अर्थों में एक खास शैक्षिक लक्ष्य– लक्ष्यों के समुच्चय– को क्रियान्वित करने के लिए बनाया जाता है।....यह नियोजित संपोषित नियमित अधिगम जिसे गंभीरतापूर्वक लिया गया हो, जिसकी एक सुनियोजित विषयवस्तु हो और जो अधिगम की अवस्थाओं के साथ चलता हो।...सोचे–समझे रूप में शैक्षिक अनुभवों के नियोजित समुच्चयों का सम्पूर्ण योग पाठ्यचर्या है, जो बच्चों को*

विद्यालय द्वारा दिए जाते हैं। ....पाठ्यचर्या शैक्षिक उद्देश्यों को क्रियान्वित करने की योजना है।'

बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 में कुगेलमास के कथन को उद्धृत किया गया है– *'पाठ्यचर्या के दायरे में हर वह चीज़ आती है जिसे बच्चा स्कूल के अंदर सीखता है, इसमें पाठ्यचर्येतर क्रियाकलाप तथा सामाजिक और वैयक्तिक रिश्ते भी शामिल हैं। पाठ्यचर्या की परिभाषा को विस्तारित कर इसमें कथित 'प्रछन्न पाठ्यचर्या ' अथवा विद्यार्थियों को मानकों, मूल्यों और प्रवृत्तियों ..... का अव्यक्त शिक्षण भी समाविष्ट कर लिया गया है।*

(बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008:2)

इस प्रकार पाठ्यचर्या शैक्षिक अनुभवों का लेखा–जोखा है जिसके माध्यम से शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति की जाती है।

विचारणीय बिन्दु –2

बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 में से ऐसे पाँच–पाँच बिंदुओं का उल्लेख कीजिए जो बिहार के संदर्भ विशेष में सामाजिक सरोकारों, बच्चों, विद्यालयों, सीखने के तरीकों और शिक्षकों के बारे में चर्चा करते हैं।

पाठ्यक्रम पाठ्यचर्या का एक हिस्सा है, जिसमें विभिन्न अनुशासनों या विषयों के खास उद्देश्यों, शिक्षण–पद्धतियों और आकलन की चर्चा की जाती है। यूँ भी कहा जा सकता है कि पाठ्यचर्या के आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है। *कभी–कभी 'पाठ्यक्रम' शब्द का प्रयोग सीमित ढंग से 'पाठ्यचर्या' के अर्थ में कर लिया जाता है। वास्तव में यह अपेक्षाकृत संकीर्ण शब्द है जिसका आशय है शिक्षण की विषयवस्तु का विशिष्ट आलेखन जो पाठ्यक्रम या परीक्षा की अवधि जैसे सावधिक मूल्यांकन तंत्र से जुड़ा होता है। पाठ्यचर्या अधिक अमूर्त श्रेणी है जबकि पाठ्यक्रम पाठ्यपुस्तकों के रूप में ठोस आकार ग्रहण कर लेता है।*

(बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008:3)

पाठ्यक्रम वास्तव में यह बताता है कि किसी विषय विशेष को पढ़ाने के उद्देश्य क्या हैं, किसी विषय विशेष की स्तरानुसार विषयवस्तु क्या होगी,उसे बेहतर तरीकों से कैसे पढ़ाया जा सकता और उस विषय का आकलन करने के तरीके क्या होंगे?

एक उदाहरण के द्वारा इसे समझा जा सकता हैं –

ज्ञान विस्तार– स्वभावतः विद्यालीय शिक्षण में हिन्दी भाषा साहित्य के शिक्षण के लिए विशेष सजगता, सावधानी और गंभीरता की आवश्यकता है। वह निर्धारित पाठ्यपुस्तकों सहित किसी अन्य रचना को पढ़कर उसके बारे में स्वतंत्र राय बनाने के आत्मविश्वास के साथ उसके बारे में अपनी भावनात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया दे सके।

कौशल–विस्तार– शिक्षार्थी अपनी अर्जित भाषिक दक्षता और कौशल के बल पर वाद–विवाद, चर्चाओं, भाषणों इत्यादि में समर्थ प्रतिभागिता का प्रमाण दे सके तथा व्यवस्थित एवं असरदार तरीके से अपने विचारों, भावों एवं संवेदनाओं को बोलकर और

लिखकर अभिव्यक्त कर सके।

रुचि और रुझान– भाषा का शिक्षण ऐसा होना चाहिए कि शिक्षार्थी में बिहार कि क्षेत्रीय भाषाओं कि विविधिता के प्रति स्वीकृति और सद्भाव सम्मान का भाव बने तथा हिन्दी के सहारे अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं के साहित्य के प्रति उत्सुक और जिज्ञासा का भाव विकसित हो।

कक्षा 1 एवं 2 का समेकित पाठ्यक्रम–

- अपने अनुभव और विचार को साझा करना।
- ध्यानपूर्वक सुनना और सहज भाव से बोलना/प्रतिक्रिया देना।
- समझ के साथ पढ़ना।

मूल्यांकन प्रक्रिया

प्राथमिक स्तर पर मूल्यांकन के निम्नांकित मानदंड सुझाए गए हैं–
मासिक– आठ (जून, सितम्बर, दिसम्बर और मार्च छोडकर)
अर्द्धवार्षिक– सितम्बर माह के अन्त तक निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार
वार्षिक– मार्च माह तक निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार

परीक्षा का स्वरूप

लिखित

मौखिक/आन्तरिक मूल्यांकन

प्रत्येक इकाई शिक्षण के पश्चात् इकाई जाँच की जाएगी।

प्रगति–पत्रक का संधारण एवं प्राप्त प्रतिपुष्टि (फीडबैक) के आधार पर सीखने की योजना का निर्माण।

अपेक्षित अधिगम क्षमता

बच्चे को हिन्दी भाषा से आनंद मिले, इस अनुभूति का विकास।
कल्पनशीलता, सृजनशीलता, तार्किक क्षमता/चिंतन इत्यादि का विकास।

निदानात्मक परीक्षण में

प्रत्येक विद्यार्थी के अधिगम–स्तर की पहचान करना।

विचारणीय बिन्दु 3

3.1–बिहार द्वारा विकसित प्रारंभिक स्तर के पाठ्यक्रम में किन–किन बिंदुओं का उल्लेख किया गया है और क्यों?

3.2– ये बिंदु एक शिक्षक की किस रूप में सहायता करते हैं?

बिहार द्वारा विकसित प्रारंभिक स्तर के पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों के बारे में अनेक महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गई है। विषय की महत्ता के बारे में बताते हुए एक विस्तृत

भूमिका लिखी गई ताकि विषय के स्वभाव और विद्यालय में उसकी उपयोगिता के बारे में समझ विकसित हो सके। पाठ्यक्रम में विषय के उद्देश्यों, शिक्षण–विधि और मूल्यांकन के बारे में भी सिलसिलेवार तरीके से बताया गया है। पाठ्यक्रम शिक्षकों को विषयों के अध्यापन के बारे में एक प्रकार से दिशा–निर्देश देता है कि पाठ्यचर्या में उल्लिखित लक्ष्यों को पूरा किया जा सके।

पाठ्यपुस्तकें पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषयगत उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करती हैं। पाठ्यपुस्तकें स्तरानुसार बनाई जाती हैं और विभिन्न अभ्यासों के माध्यम से आकलन की प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है। पाठ्यपुस्तकें शिक्षकों और बच्चों के लिए दिशा–निर्देश का कार्य करती हैं कि विषय विशेष के अंतर्गत किस स्तर पर कितनी अवधारणाओं को स्थान दिया जाना है और किस प्रकार उन अवधारणाओं को बच्चों तक सम्प्रेषित किया जाना है। बच्चे स्वयं ज्ञान का निर्माण करते हैं और शिक्षक की भूमिका सुगमकर्ता के रूप में होती है। ठीक इसी प्रकार पाठ्यपुस्तक में भी बच्चों के अनुभव संसार को समुचित स्थान दिया जाता है ताकि वे अपने अनुभवों के आधार पर ज्ञान की पुनर्रचना कर सकें। चूँकि बच्चों का परिवेश और संसार बेहद महत्वपूर्ण हैं अतः पाठ्यपुस्तकों में भी स्थानीयता का पुट झलकता है।

विचारणीय बिन्दु– 4

4.1– प्रारंभिक स्तर पर अपनी किसी भी विषय की पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण कीजिए और बताइए कि ये पाठ्यक्रम के किन उद्देश्यों को पूरा करती हैं।

4.2– एक शिक्षक के रूप में आप पाठ्यपुस्तक को कितना उपयोगी मानते हैं और क्यों?

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें एक–दूसरे के साथ परस्पर सम्बद्ध हैं और शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहयोगी हैं। एक–दूसरे के सहयोग और तालमेल के अभाव में कोई भी अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकेगा। ये अवयव न केवल एक–दूसरे की मदद करते हैं बल्कि एक–दूसरे को प्रभावित भी करते हैं। एक के लक्ष्य दूसरे के निर्माण का आधार बनते हैं। अतः यह ज़रूरी है कि पाठ्यचर्या, जो मूल आधार है– को सोच–समझकर निर्धारित किया जाए। इसी प्रकार पाठ्यचर्या के आधार पर निर्मित होने वाले पाठ्यक्रम–निर्माण में सही नज़रिया और विचार होना चाहिए तभी बेहतर पाठ्यपुस्तकों का निर्माण संभव हो सकेगा। शैक्षिक लक्ष्यों की पूर्ति में तीनों की सहभागिता और एकरूपता आवश्यक है।

जैसा कि आप समझ ही चुके हैं कि *'पाठ्यचर्या के दायरे में हर वह चीज़ आती है जिसे बच्चा स्कूल के अन्दर सीखता है, इसमें पाठ्यचर्येतर क्रियाकलाप तथा सामाजिक और वैयक्तिक रिश्ते भी शामिल हैं।* इसका अर्थ यह है कि हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या में हिन्दी भाषा के महत्व, उसके बदलते स्वरूप और उसके माध्यम से पूर्ण होने वाले कार्यों का बढ़ता दायरा आदि के बारे में एक साझी समझ बनाने की कोशिश की जाती है। हिन्दी भाषा की ज़रूरत केवल संवाद में नहीं होती बल्कि उसके माध्यम से चिंतन भी किया जाता है और अवधारणाओं का निर्माण भी। सवाल उठता है कि पाठ्यचर्या में उल्लिखित बिंदुओं को कैसे प्राप्त किया जाए? पाठ्यचर्या की अगली कड़ी – पाठ्यक्रम के माध्यम से। पाठ्यचर्या में हिन्दी भाषा की महत्ता/उद्देश्य आदि जिस रूप में व्याख्यायित किए जाते हैं, उन

उद्देश्यों की प्राप्ति का योजनाबद्ध और सुनियोजित दस्तावेज़ है– पाठ्यक्रम! हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम में जिन बिंदुओं का उल्लेख होता है वे सभी किसी न किसी रूप में पाठ्यचर्या से ही जुड़े होते हैं और अपेक्षित विस्तार पाते हैं। हिन्दी भाषा सीखने–सिखाने के उद्देश्यों को उनकी गहनता और विस्तार को वर्गानुसार या कक्षानुसार इस तरह से नियोजित किया जाता है जो बच्चों की अवस्था, उनकी क्षमताओं और परिवेश के अनुरूप हों। पाठ्यक्रम में उल्लिखित वर्गानुसार उद्देश्यों, शिक्षण–पद्धतियों और आकलन के तौर–तरीकों को ध्यान में रखकर हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया जाता है। हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ही रचनाओं, विधाओं अभ्यास–प्रश्नों के स्वरूप को तय किया जाता है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षक हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य प्रकार की भी दृश्य–श्रव्य सामग्री का प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं। लेकिन फिर भी पाठ्यपुस्तक कक्षा में संपादित होने वाली गतिविधियों का आधार तो रहती ही हैं।

इन तीनों में सामंजस्य हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करता है।

प्रारंभिक कक्षाओं में हिन्दी की पाठ्यचर्या

हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या को समझने से पहले यह समझ लें कि पाठ्यचर्या में सामान्य रूप से भाषा की महत्ता और उसके शिक्षण के उद्देश्यों के बारे में उल्लेख किया जाता है। अतः जब आप बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा को देखेंगे तो पाएँगे कि उसमें ***भाषा*** शीर्षक के अंतर्गत हिन्दी और अंग्रेज़ी के साथ–साथ बिहार की अन्य भाषाओं के महत्व एवं उनके शिक्षण की चर्चा की गई है। आइए, एक उद्धरण द्वारा हिन्दी की पाठ्यचर्या को समझने का प्रयास करते हैं –

स्कूली भाषा के संदर्भ में भाषा पाठ्यचर्या का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। संवाद और संप्रेषण के अनिवार्य प्राथमिक कार्यों के अतिरिक्त शिक्षण के संपूर्ण क्रिया–कलापों में भाषा की माध्यम बनती है तथा अवधारणाओं के निर्माण एवं ज्ञान के सृजन में बुनियादी भूमिका निभाती है। ..... विचारपूर्वक देखें तो एक हद तक निजी और संपूर्ण रूप में सभी सामाजिक गतिविधियों का संचालन भाषा की ही सहायता से संभव हो पाता है। समाजीकरण और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए तो भाषा सर्वाधिक सुलभ, सुविधाजनक और विश्वस्त उपकरण है। .... भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात होती है और भाषा हमें विरासत में प्राप्त होती है। किंतु उसके विशेष पक्षों को व अन्य भाषाओं को सतत प्रयास द्वारा शिक्षा के क्रम में उपार्जित करना होता है। ....बिहार में अनेक बोलियों/ भाषाओं का जीवंत सह–अस्तित्व है। घरेलू भाषा के रूप में हिन्दी, उर्दू, मैथिली, भोजपुरी, मगही, अंगिका, वज्जिका, संथाली के अतिरिक्त सीमित रूप में बांग्ला जैसी भाषाएँ/बोलियाँ हैं। हिन्दी/उर्दू स्थानीय न होकर भी घरेलू भाषा के रूप में उपस्थित हैं। ..... हिन्दी के साथ ऐसे बच्चों का परिचय बढ़ाया जाना चाहिए, लेकिन उनकी भाषा, उच्चारण तथा शब्दावली को शुरू में बगैर सुधारे स्वीकार कर लिया जाना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं कि शिक्षक मानक हिन्दी अर्थ अथवा सही उच्चारण का प्रयोग ही न करें, क्योंकि आज की नई परिस्थितियों में शिक्षार्थियों के लिए हिन्दी आगे बढ़ने का महत्त्वपूर्ण आधार होगी।.... बिहार के विद्यालयों में प्रथम भाषा के रूप में स्वाभाविक पसंद हिन्दी ही है। राज्य में बोली जाने वाली प्रायः घरेलू भाषाएँ एक ही भाषा परिवार की हैं और हिन्दी के साथ उनका स्वाभाविक संबंध है। ... व्यक्तित्व विकास,

चिंतन, वाद–विवाद, अभिव्यक्ति की क्षमता अर्जित करने के प्रयास में हिन्दी विद्यार्थियों को सुनहरा अवसर प्रदान करती है। बिहार हिन्दी भाषी क्षेत्र है। हिन्दी इस क्षेत्र में लम्बी अवधि में विकसित सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान का प्रतिनिधित्व करती है। यह राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के समावेशी आदर्शों से युक्त विरासत का भी वहन करती है जिस पर गर्व करने के यथेष्ट कारण हैं। हिन्दी का ज्ञान अर्जित करके हमारे विद्यार्थी ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों, वैज्ञानिक मिज़ाज और तकनीकी शिक्षा के अनुसरण के लिए तैयार हो सकते हैं, इसलिए भाषा शिक्षण को सिर्फ साहित्य पर केंद्रित नहीं रखना चाहिए.. भाषा शिक्षण को धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता और ज़रूरतमंद की चिंता जैसे मूल्यों के अंगीकार के लिए भी मददगार होना चाहिए। अतएव पाठों के चयन तथा अध्यापन विधि, दोनों मामलों में काफी ध्यान देने की ज़रूरत है।

(बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2008,35–39)

विचारणीय बिन्दु –5

5.1–बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा में भाषा शिक्षण के संदर्भ में किन–किन बिंदुओं पर चर्चा की गई है? किन्हीं दस बिंदुओं का उल्लेख कीजिए।

5.2–ये बिंदु हिन्दी भाषा शिक्षक के रूप में आपके शिक्षण में किस प्रकार उपयोगी हैं?

बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2008 के पृष्ठ–संख्या 35–39 में इन बिंदुओं बल दिया गया है–

- संवाद और संप्रेषण के रूप में भाषा का महत्व।
- अवधारणाओं के निर्माण और ज्ञान के सृजन में भाषा की भूमिका।
- सामाजिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में भाषा एक उपकरण के रूप में।
- भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता में विश्वास।
- बिहार में मौजूद भाषिक विविधता की चर्चा।
- हिन्दी भाषा के साथ परिचय बढ़ाना।
- शुरुआती वर्षों में हिन्दी भाषा शिक्षण के संदर्भ में उच्चारणगत शुद्धता के प्रति कठोर रवैया न अपनाने की ताकीद।
- विद्यालय में प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी का स्थान।
- व्यक्तित्व विकास और विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने के संदर्भ में हिन्दी भाषा का महत्व।

इन सभी बिंदुओं में भाषा/ हिन्दी भाषा के शिक्षण के उद्देश्यों की चर्चा की गई है और यह समझने–समझाने की कोशिश की गई है कि हिन्दी भाषा केवल आपसी बातचीत का माध्यम ही नहीं है बल्कि ज्ञानार्जन और विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति का भी माध्यम है। अतः हिन्दी भाषा शिक्षण में केवल साहित्य पर ही बल न दिया जाए बल्कि विविध क्षेत्रों की जानकारी के लिए उसे माध्यम भी बनाया जाए। हिन्दी भाषा शिक्षण का एक और उत्तरदायित्व है कि वह मूल्यों को आत्मसात करने में भी मदद करे। इस रूप में हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या बृहद् रूप से भाषा सीखने–सिखाने के उद्देश्यों की चर्चा करती है। हिन्दी के साथ–साथ यह किसी भी भाषा की पाठ्यचर्या पर लागू किया जा सकता है। हिन्दी भाषा क्यों सिखाई जाए, इसका अन्य विषय–क्षेत्रों के साथ क्या जुड़ाव है, इसके शिक्षण में किन अन्य बिंदुओं को सम्मिलित किया जाए इत्यादि बिंदुओं की जानकारी और एक समेकित, विस्तृत समझ विकसित करने का दायित्व हिन्दी की पाठ्यचर्या का है। हिन्दी

भाषा की पाठ्यचर्या मूलतः विद्यालयीय स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण के महत्व और उद्देश्यों की चर्चा करती है, किसी स्तर विशेष की नहीं।

प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम की संरचना–

जैसा कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि पाठ्यक्रम में विभिन्न अनुशासनों या विषयों के खास उद्देश्यों, शिक्षण–पद्धतियों और आकलन की चर्चा की जाती है। इसके माध्यम से उन सभी बृहद् उद्देश्यों की स्तरानुसार योजना या रूपरेखा बनाई जाती है जिन्हें प्राप्त किया जाना अभीष्ट है। हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम में भी इसी तरह कक्षानुसार/स्तरानुसार उद्देश्यों, शिक्षण–पद्धति, पाठ्य–पुस्तक, मूल्याकन और परीक्षा की विस्तृत चर्चा की गई है। बिहार की विद्यालयी शिक्षा हेतु नवीन पाठ्यक्रम से कुछ उदाहरण द्वारा इसे समझा जा सकता है

वर्ग III-V

उद्येश्यः

1. *पूर्व अर्जित भाषायीकौशलों का उत्तरोत्तर विकास करना।*
2. *सरल कहानियों, संवादों, कविताओं आदि को समझते हुए पढ़ना।*
3. *सरल व्याकरण सम्मत वाक्य लिखना।*
4. *दूसरों के सरल विचारों तथा आकाशवाणी व दूरदर्शन आदि के कार्यक्रमों को समझने की योग्यता का विकास।*
5. *अपने विचारों एवं अनुभवों को दूसरों के बीच सहजता से कह सकना। .....*

शिक्षण–युक्तियाँः

(क) बच्चों की रुचि के अनुसार परिचित विषय–वस्तु या प्रसंग पर चर्चा।

(ख) कहानी, वर्णन, विवरण आदि पर प्रश्नोत्तर।

(ग) शब्द–सीढ़ी, शब्द–लड़ी और वर्ग पहेली भरवाना।

वर्ग III

पाठ्य–पुस्तकः

इस वर्ग की पाठ्य–पुस्तक में गद्य और पद्य में विविधता होनी चाहिए।कहानियाँ , लेख, पत्र तो होने ही चाहिए, वाक्य–रचना भी विकसित होनी चाहिए।... प्रत्येक पाठ के साथ विभिन्न प्रकार के ऐसे अभ्यासार्थ प्रश्न होंगे जो पाठ पर आधारित होने के साथ–साथ इस प्रकार के होंगे जिससे बच्चों के चिंतन, अवलोकन एवं अनुमान लगाने की क्षमता, कल्पनाशीलता और सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास हो सके। अभ्यास में व्याकरण के निर्धारित बिन्दुओं से संबद्ध अभ्यास भी होंगे।

पाठ्य–पुस्तक में गद्य–पद्य का अनुपात 1:1 होगा। पुस्तक की प्रस्तावित रूपरेखा इस प्रकार है –

- *देशप्रेम पर एक लयपूर्ण कविता।*

- *पशु–पक्षियों की बातचीत पर आधारित कोई शिक्षाप्रद पाठ।*
- *'बैलगाड़ी' पर एक पाठ।*
- *किसी त्योहार पर एक पाठ।*

व्याकरण के बिंदुः

संज्ञा और उसके भेदों की पहचान

वचन और उसके भेदों की पहचान

मूल्यांकन

वर्ग III से V

....शिक्षकों को चाहिए कि बच्चों की प्रगति पर लगातार बारीक नज़र रखें और प्रत्येक बच्चे का रिकॉर्ड रखें जिसमें हर सप्ताह या पखवाड़े संबद्ध शिक्षार्थी की प्रगति पर टिप्पणी लिखें। सतत और व्यापक मूल्यांकन का सही आधार है।

परीक्षा

वर्ग III-V

सतत और व्यापक मूल्याकन को मज़बूत बनाने के लिए इसे परीक्षा से जोड़ना लाभकारी हो सकता है। अतः इसके भीतर एक निश्चित अंक का प्रावधान होना चाहिए।... प्रथम सावधिक के पाठ्यक्रम से 30 प्रतिशत प्रश्न द्वितीयक सावधिक परीक्षा में पूछे जाएँगे एवं वार्षिक परीक्षा में प्रथम सावधिक के पाठ्यक्रम से 10 प्रतिशत एवं द्वितीय सावधिक के पाठ्यक्रम से 20 प्रतिशत प्रश्न पूछे जाएँगे।

(बिहार की विद्यालयीय शिक्षा हेतु नवीन पाठ्यक्रम, 2009: 9–14)

पाठ्यक्रम संबंधी इस उद्धरण का गौर से अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि इसमें स्तरानुसार और वर्गानुसार हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्यों आदि की चर्चा की गई है। इतना ही नहीं शिक्षण–पद्धति, पाठ्यपुस्तक के स्वरूप की भी बात की गई है। सतत और व्यापक मूल्यांकन एवं परीक्षा को भी विस्तार दिया गया है। इस प्रकार हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम के अंतर्गत बच्चों की हिन्दी भाषा प्रयोग संबंधी कुशलता और क्षमता का विकास तथा उनका सही–सही आकलन को स्थान दिया गया है। पाठ्यक्रम में हिन्दी भाषा के बृहद् उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए उन्हें बच्चों की अवस्थाओं, उनकी रुचियों और मनोविज्ञान के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है ताकि क्रमशः उन उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके। हम यह भी जानते हैं कि बच्चों में भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात होती है और बच्चे अपने परिवेश से ही भाषा अर्जित करते हैं। इस बिंदु का महत्व पाठ्यक्रम में यह है कि हिन्दी भाषा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों के परिवेश को समुचित स्थान दिया जाए इतना ही नहीं, हिन्दी भाषा बच्चों के ज्ञानार्जन और अवधारणाएँ बनाने, उनके चिंतन का भी माध्यम है। अतः पाठ्यक्रम में बच्चों को प्रश्न करने और अपनी बात कहने के भरपूर अवसर मिलें– यह भी एक उद्देश्य के रूप में रखा गया है। हिन्दी भाषा के सभी कौशलों अथवा क्षमताओं के विकास की वर्गानुसार चर्चा की गई है। उदाहरण के लिए सुनना कौशल के

उद्देश्य को वर्गानुसार विस्तार दिया गया है और उत्तरोत्तर उसके विकास का उल्लेख किया गया है, जैसे वर्ग 1 में ध्यानपूर्वक सुनने का उद्‌देश्य रखा गया है तो वर्ग 2 में विभिन्न ध्वनियों को सुनकर उनमें अंतर करने का उद्देश्य रखा गया है। इसी प्रकार अन्य कुशलताओं के क्रमिक विकास को उद्‌देश्यो के रूप में जगह दी गई है। हिन्दी भाषा के पाठ्‌यक्रम में शिक्षण–पद्धतियों में भी वैविध्य मिलता है और शिक्षकों को यह दिशा–निर्देश कि वे अपने–अपने वर्ग में अपने बच्चों की भाषिक ज़रूरतों के अनुसार उचित पद्धति का चयन करें। पाठ्‌यपुस्तक निर्माण की प्रस्तावित रूपरेखा अथवा योजना पाठ्‌यपुस्तक निर्माताओं की इस रूप में मदद करती है कि वे बिहार के खास संदर्भ को ध्यान में रखकर बेहतर पाठ्‌यपुस्तक का निर्माण कर सकें। आकलन की प्रक्रिया हिन्दी भाषा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है और बच्चों का सतत और व्यापक आकलन कैसे किया जाए इसकी विस्तृत योजना शिक्षकों की मदद करेगी। वर्ग 1 और 2 में इस बात पर बल दिया गया है कि बच्चों का मूल्यांकन अप्रत्यक्ष और अनौपचारिक होना चाहिए तथा उसकी प्रक्रिया निरंतर चलती रहनी चाहिए। हिन्दी भाषा का पाठ्‌यक्रम इस बिंदु का पक्षधर है कि मूल्यांकन बच्चों की क्षमताओं और सीखने की प्रवृत्ति का विकास करे, उनकी मदद करे। परीक्षा के भी विभिन्न रूपों, जैसे– मौखिक और लिखित को भी समुचित स्थान दिया गया है।

इस पूरी चर्चा के आधार पर कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा के पाठ्‌यक्रम में सिलसिलेवार तरीके से वे सभी बिंदु उल्लिखित हैं जो शिक्षकों, पाठ्‌यपुस्तक निर्माताओं, मूल्यांकन की योजना बनाने वाले व्यक्तियों आदि की इस रूप में मदद करते हैं ताकि वे वर्गानुसार हिन्दी भाषा संबंधी विभिन्न पक्षों को क्रमबद्ध और सुनियोजित तरीके से क्रियान्वित कर सकें।

विचारणीय बिन्दु– 6

6.1–बिहार की विद्यालयीय शिक्षा हेतु नवीन पाठ्‌यक्रम हिन्दी भाषा के उद्‌देश्यों, शिक्षण–पद्धति, पाठ्‌यपुस्तक और मूल्यांकन संबंधी ऐसे बिंदुओं का उल्लेख कीजिए जिन्हें आप –

उचित समझते हैं

उचित नहीं समझते

अपने उत्तर के लिए ठोस तर्क भी दीजिए।

6.2–हिन्दी भाषा पाठ्‌यक्रम के कौन–से बिंदु ऐसे हैं जिन्हें आप अपनी कक्षा में शिक्षण के दौरान व्यवहार में लाते हैं?

6.3–यदि आपको हिन्दी भाषा के पाठ्‌यक्रम के निर्माण का उत्तरदायित्व दिया जाए तो आप क्या–क्या परिवर्तन करेंगे और क्यों?

प्रारंभिक कक्षाओं में हिन्दी की पाठ्‌यपुस्तकें

हिन्दी भाषा की पाठ्‌यपुस्तकों का क्या महत्व है? आखिर क्यों बनाई जाती होंगी पाठ्‌यपुस्तकें? इसके संभावित जवाब में कहा जा सकता है कि पाठ्‌यपुस्तक हमें दिशा–निर्देश देती है कि क्या करना है, कैसे करना है? यह भी कहा जा सकता है कि

हिन्दी भाषा शिक्षण में एकरूपता लाने में पाठ्यपुस्तकें मददगार होती हैं ताकि बिहार के किसी भी हिस्से में कोई भी विद्यालय हो, एक कक्षा के सभी बच्चे एक जैसी सामग्री पढ़ते हैं और जब सामग्री समान है तो उनकी हिन्दी भाषा संबंधी क्षमताओं का आकलन करने का पैमाना भी समान हो जाएगा। इसके अतिरिक्त यह भी कहा जा सकता है कि पाठ्यपुस्तक एक ऐसी सामग्री है –

- जो सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले प्रारंभिक स्तर तक के सभी बच्चों को निःशुल्क प्राप्त होती है।
- जो संभवतः बच्चों के पास एकमात्र पठन सामग्री है।
- जिसमें उन रचनाओं को रखा, गढ़ा जाता है जो बच्चों की हिन्दी भाषा की क्षमताओं, कुशलताओं को विकसित करने में मदद करती है।
- जिसमें बच्चों के हिन्दी भाषा संबंधी आकलन करने की भी वैविध्यपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है।
- जो बच्चों के साथ–साथ शिक्षकों और अभिभावकों के लिए सहायक है कि वे किस रूप में बच्चों की हिन्दी भाषा के प्रयोग संबंधी क्षमताओं का विकास कर सकते हैं।
- हिन्दी भाषा के विविध रूपों से परिचित होने का अवसर देती हैं।

विचारणीय बिन्दु –7

7.1–हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक के संबंध में आप किन जवाबों से सहमत हैं/नहीं हैं और क्यों?

7.2–आप जिस वर्ग को हिन्दी भाषा पढ़ाते हैं उसकी पाठ्यपुस्तक क्या आपको हिन्दी भाषा के शिक्षण में और बच्चों को हिन्दी भाषा सीखने में मदद करती है? अपने उत्तर के लिए ठोस तर्क भी दीजिए।

दरअसल, हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक हिन्दी भाषा सीखने–सिखाने के उद्देश्यों को प्राप्त करने का साधन मात्र है साध्य नहीं। यह बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों की इस रूप में मदद करता है कि वे हिन्दी भाषा सीखने–सिखाने की दिशा तय कर सकें। वास्तव में हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में भाषा सीखने के नज़रिए या उपागम के दर्शन होते हैं। यदि हम हिन्दी भाषा को संवाद और संप्रेषण का माध्यम मानते हैं तो हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में ऐसे ही अभ्यास मिलेंगे जो बच्चों को संवाद आदि करने के अवसर उपलब्ध कराएँगे। यदि हम हिन्दी भाषा सीखने–सिखाने में उच्चारण की शुद्धता को ही सर्वोपरि मानते हैं तो हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों के अभ्यासों और पाठ रूप में विभिन्न रचनाओं में इसी कठोर रवैये के दर्शन होंगे। पाठ्यपुस्तक में ऐसी रचनाएँ रखी जाती हैं जो बच्चों को रोचक लगें, जिनके माध्यम से बच्चों को हिन्दी भाषा के विविध रूपों से परिचय करने का अवसर मिले, क्योंकि अंततः वे समाज में तरह–तरह की हिन्दी सुनते हैं। विभिन्न संदर्भों में प्रयुक्त हिन्दी का स्वरूप भिन्न होता है और हम बच्चों से उद्देश्य रूप में इन विभिन्न संदर्भों में संवाद करने की अपेक्षा करते हैं। हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में दिए गए अभ्यास कार्य भी इसी प्रकार के होते हैं जो हिन्दी भाषा सीखने–सिखाने के उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करते हैं। फिर चाहे वह कल्पनाशीलता का विकास हो या सुनकर,

पढ़कर समझने की योग्यता का विकास हो। बच्चों के स्वतंत्र चिंतन के विकास के अवसर भी इन अभ्यासों के माध्यम से उपलब्ध कराए जाते हैं।

हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों के कुछ उदाहरणों को देखते हैं –

- वर्ग दो की पाठ्यपुस्तक ***'अंकुर भाग 2'*** में *'कौआ और लोमड़ी'* जैसी चित्रकथा भी है तो *'दो बकरियाँ, कितने कौए, बंदर और टोपी, किसान, भालू और आलू'* जैसी अन्य रोचक कहानियाँ भी हैं। इसमें *'नानी तेरी मोरनी, बहुत हुआ, होली, इच्छा, अगर पेड़ भी चलते होते'* जैसी मज़ेदार कविताएँ भी हैं। *'चूँ–चूँ की टोपी'* जैसी काव्यात्मक एकांकी भी है और *'निशा की चिट्ठी'* भी है। यानि कुल मिलाकर साहित्य की हर विधा को समुचित स्थान दिया गया है। विधा के अनुसार हिन्दी भाषा की संरचना में भी अंतर आता है और बच्चों का हिन्दी भाषा की विविध संरचनाओं से सहज परिचय होता है। इतना ही नहीं रचनाओं के विषयों में भी विविधता है– प्रसिद्ध फिल्मी बाल गीत भी है और होली का त्योहार भी है। इसमें पशु–पक्षियों का रोचक संसार है, बादल के रूप में प्रकृति भी है, कौओं की गिनती और पहेलियों में उलझाने वाला चिंतन भी है, बाल मन की इच्छाएँ भी हैं। विविध रंगों से सराबोर हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक में बच्चों का विविधरूपी अनुभव संसार है।

प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम की संरचना–

विद्यालयों में एक विषय के रूप में एक से अधिक भाषाएँ प्रायः प्रथम भाषा, द्वितीय भाषा और तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती हैं। जिसका सीधा–सा अर्थ यह है कि बच्चों में इन भाषाओं के प्रयोग की कुशलता विकसित करना। विभिन्न स्थितियों में भाषा का प्रयोग करने की कुशलता या क्षमता उन्हें जीवन की अनेक आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करती है वे अपने जीवन में भाषा का अनेक प्रकार से प्रयोग करते हैं, जैसे– अपनी इच्छा को प्रकट करना, किसी की राय लेना, अपना तर्क प्रस्तुत करना, किसी घटना के होने की संभावना को व्यक्त करना, संदेह करना, कल्पना करना, अतीत की घटनाओं को प्रस्तुत करना, किसी को समझाना इत्यादि। हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक में दिए गए पाठ बच्चों को यह अवसर देते हैं कि वे भाषा–प्रयोग की कुशलता विकसित कर सकें। हिन्दी की पाठ्यपुस्तक में से कुछ अभ्यास प्रश्नों को पढ़कर इस बात को समझने की कोशिश की जा सकती है–

बिहार की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों के कुछ अभ्यासों को ध्यान से पढ़िए और बताइए कि ये अभ्यास भाषा सिखाने के किन उद्देश्यों को पूर्ण करते हैं –

1. क्या होता अगर कौवे को हिरन दिखाई न देता?
2. मान लीजिए, बहेलिया दूसरी बार भी हिरन को पकड़ लेता, फिर कहानी आगे कैसे बढ़ती? अपने मन से कहानी लिखिए।
3. गोपी ने ऊँट वाली घटना के बारे में अपनी मां को क्या बताया होगा? संवाद लिखिए।
4. शंकर ने बरगद की कहानी अपने दोस्तों को कैसे सुनाई होगी? सुनाइए।
5. शिवांक की डायरी का एक अंश पढ़िए और सवालों के जवाब दीजिए। (कोंपल, भाग 2, कक्षा 4 से उद्धृत)
6. पता कीजिए कि जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल कैसा होता है?

7. कसारा से चप्पल माँगने पर खेमा को फटकार लगी। उसके बावजूद वह काम करने लगा। आप रहते तो क्या करते?
8. अपने आस–पड़ोस के किसी बाल मजदूर से बात कर यह पता कीजिए कि किन कारणों से वह बाल मजदूर बना?
9. हामिद मिठाई या खिलौने के बदले चिमटा पसंद करता है। क्यों?

(किसलय, भाग 3, कक्षा 8 से उद्धृत)

आइए, कुछ सवालों पर एक बार और गौर करते हैं। सवाल 2 'अपने मन से कहानी लिखिए।' इस सवाल के मुख्य रूप से जो उद्देश्य नज़र आते हैं, वे हैं– कल्पनाशीलता, सृजनशीलता और लेखन का विकास। बच्चे को इस सवाल का जवाब देने के लिए कहानी की आगे की घटनाओं के बारे में कल्पना करनी होगी। यह कल्पना अलग–अलग बच्चों की अलग ही होगी। कुछ बच्चे यह कल्पना कर सकते हैं कि दूसरी बार भी वही हुआ होगा जो पहले घटित हुआ था। (कहानी में चूहे ने जाल को काटकर उसमें कैद हिरन को) कुछ बच्चे यह कल्पना कर सकते हैं कि दूसरी बार हिरन को किसी और ने बचा लिया होगा जो कुछ बच्चे यह कल्पना कर सकते हैं कि दूसरी बार हिरन को कोई भी नहीं बचा पाया होगा। अपनी इस कल्पना को वे किन शब्दों या भाषा में व्यक्त करेंगे, उसमें भी अंतर होगा। हो सकता है कि कुछ बच्चे सात वाक्यों में ही आगे की कहानी बता दें तो कुछ दो वाक्यों में ही समाप्त कर दें, जैसे– कौवे ने बहेलिए की आँख में चोंच मार दी, जिससे उसे दिखाई देना बंद हो गया। हिरन ने हाथ– मारे और वह आजाद हो गया। कौवे ने सोचा कि अगर मैं बहेलिए की आँख फोड़ दूं तो इसे कुछ नजर नहीं आएगा। फिर हम हिरन को आजाद कर लेंगे। कौए ने ऐसा ही किया। उसने बहेलिए की दोनों आँखों में चोंच मारी तो वह रोने लगा–'मुझे कुछ नज़र नहीं आ रहा।' कौवा बहेलिए को परेशान करता रहा। उधर हिरन ने हाथ–पैर मारे तो उसका जाल खुल गया। वह आजाद हो गया। दूसरी कल्पना में विस्तार है और यह विस्तार भाषा में भी नजर आता है। उसे भाषा गढ़नी होगी। जब बच्चा अपनी कल्पना को लिखेगा तो उसके लेखन कौशल का विकास होगा यानि अपने कल्पना को भाषा के सृजन के माध्यम से कागज पर उकेरना। सवाल 7 'कसारा से चप्पल माँगने पर खेमा को फटकार लगी। उसके बावजूद वह काम करने लगा। आप रहते तो क्या करते? सवाल 8 'अपने आस–पड़ोस के किसी बाल मजदूर से बात कर यह पता कीजिए कि किन कारणों से वह बाल मज़दूर बना।' और सवाल 9, 'हामिद मिठाई या खिलौने के बदले चिमटा पसंद करता है। क्यों? दरअसल संवेदनशीलता से जुड़े हैं। सवाल 7 और 8 में बाल मजदूरों के प्रति संवेदनशीलता है तो सवाल 9 में बुजुर्गों के प्रति भाषा आंतरिक संवेदनाओं का विकास करने में महत्ती भूमिका निभाती है भाषा एक तरह से उस संसार को हमारे समक्ष ला खड़ा करती है जिसकी कल्पना भी शायद हमने नहीं की थी या जिसके बारे में महज हमने सुना ही था। खेमा जिस तरह की यंत्रणा से गुजरते हुए काम करने को विवश है उसे उसी स्तर पर और उसी गहराई से महसूस कर पाने के लिए जिस तरह की संवेदनशीलता चाहिए वह इस कहानी में भाषा के माध्यम से संभव है। इस कहानी को पढ़ते हुए बच्चे कहीं न कहीं खेमा के चरित्र को जी रहे होंगे और यह संवेदनशीलता उन्हें समझा पाएगी कि उन्हें काम करने को विवश बाल मजदूरों के लिए क्या करना है, उनके साथ कैसा व्यवहार करना है, ऐसी कौन–सी बातें हैं जो किसी के मन को ठेस पहुंचाती हैं। सवाल 9 दादी अमीना के प्रति हामिद की संवेदनशीलता को व्यक्त करता है हमारे बुजुर्ग किन मुश्किलों से हमें पालते–पोसते हैं और अपनी इच्छाओं को ताक पर रख देते हैं।

उनके लिए हमारा क्या कर्तव्य बनता है, यह संवेदनशीलता हामिद के माध्यम से हमें छू जाती है। अपने परिवार, समाज, जेंडर, आस–पड़ोस, पशु–पक्षी आदि के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना भाषा का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य है अनेक भाषाओं में लिखा गया विभिन्न प्रकार का साहित्य पढ़ने–पढ़ाने का एक उद्देश्य यह संवेदनशीलता भी है।

सवाल 10 '9वर्षीय शिवांक की डायरी का एक अंश पढ़िए और सवालों के जवाब दीजिए। इस प्रश्न में बच्चे की पढ़ने की कुशलता का विकास करने की कोशिश की गई है। किन्हीं सवालों के जवाब देने के लिए उसे दिए गए अंश को ध्यान से पढ़ना होगा और पढ़ने का अर्थ है– समझना यानि उस अंश में कही गई बातों को समझना होगा न कि केवल लिखे गए शब्दों को उच्चरित करना। इस चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि भाषा सीखने का उद्देश्य बच्चों में वह कुशलता या योग्यता विकसित करना है जिससे वे स्थिति के अनुसार अपनी बात कह सकें और दूसरों की बातों को सुनकर विश्लेषण करते हुए उसकी गहराई को समझ सकें विभिन्न संदर्भों में अपनी बात को प्रभावी तरीके से कहने के लिए विभिन्न प्रयुक्तियों या 'रजिस्टरों पर भी अधिकार प्राप्त करना होगा। अतः भाषा की कक्षा में और अन्य गतिविधियों के द्वारा बच्चों को पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाएँ कि वे भाषा का सार्थक प्रयोग कर सकें। कक्षा 4 और कक्षा 7 की हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों से कुछ और अभ्यास के प्रश्नों को देखा जा सकता है–

- बहेलिया क्या काम करता है?
- अपने मित्र को देखकर जाल में फँसे हिरन की आँखों में आँसू क्यों आ गए?
- आज तो दिन ही खराब है, बहेलिए ने सोचा जब उसके हाथ कोई शिकार नहीं लगा। आपके लिए स्कूल में अच्छा दिन कब होता है और कौन–सा दिन बुरा होता है?
- चारों मित्र मिलकर क्या करते होंगे?
- आपको अपने दोस्तों की ज़रूरत कब–कब पड़ती है?
- ऐसे कौन–से काम हैं जो आप अपने दोस्तों के साथ करना पसंद करते हैं?

(कोंपल भाग–2, 2012–13 : 5)

निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए –

- अगर नहीं तो क्षमा करना!
- मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है।
- नदियों के रोने से क्या तात्पर्य है?
- पृथ्वी को बूढ़ी क्यों कहा गया है?
- पेड़ों का कटकर गिरना एवं पेड़ों का टूटकर गिरना में क्या अंतर है?

(किसलय भाग–2, 2012–13 :67)

इन अभ्यासों का गहन अवलोकन करें तो यह पाएँगे कि इनमें हिन्दी भाषा के अनेक उद्देश्यों को प्राप्त करने का अवसर दिया गया है, जैसे– पाठ को पढ़कर उसे समझने, उसके बारे में बात करने का अवसर, पाठ के बहाने या पाठ से आगे जाकर बच्चों को अपने अनुभव, अपनी बात कहने के अवसर, किसी स्थिति की कल्पना करने, अनुमान लगाने के अवसर और पाठ को अपनी निजी ज़िंदगी से जोड़ने के अवसर, हिन्दी भाषा की बारीकियों

को पहचानने की क्षमता का विकास करने के अवसर आदि। शिक्षक पाठ पढ़ाते समय इन अभ्यास–प्रश्नों का प्रयोग कर सकते हैं और इनके आधार पर सतत आकलन भी।

इस प्रकार हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकें उद्देश्यों को प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। ज़रूरत इस बात की है कि शिक्षक इनके निर्माण के उद्देश्यों, इनमें निहित नज़रिए और इनमें शामिल अभ्यासों के विविध प्रयोगों को समझें और इनका सृजनात्मक प्रयोग करें।

विचारणीय बिन्दु –8

8.1–अपने वर्ग की हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक के दिए गए विभिन्न पक्षों के संबंध में आपका क्या विचार है?

विधाएँ और उन विधाओं की रचनाएँ

8.2– अभ्यास–प्रश्न

1. किसी पाठ विशेष के अभ्यास प्रश्नों को देखें और प्रकृति के आधार पर उनका विश्लेषण करें।
2. आप जिस वर्ग को हिन्दी भाषा पढ़ाते हैं उसकी पाठ्यपुस्तक में आपके बच्चे किन रचनाओं को सबसे अधिक पसंद करते हैं और क्यों?
3. यदि आपको अपनी कक्षा की हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक फिर से बनाने का उत्तरदायित्व दिया जाए तो क्या आप उसमें परिवर्तन करेंगे? अपने उत्तर के लिए ठोस तर्क भी दीजिए।

समेकन

- पाठ्यचर्या एक ऐसा दस्तावेज़ है जिसमें बृहद् रूप से बच्चों की विद्यालयीय शिक्षा के बारे हर परिप्रेक्ष्य में गहन विचार किया जाता है।
- पाठ्यचर्या राष्ट्रीय और सामाजिक सरोकारों को केंद्र में रखने के साथ–साथ बच्चों को ऐसे नागरिक बनाना चाहती है जो स्वयं के विकास के साथ राष्ट्र और समाज का विकास कर सकें।
- प्रायः पाठ्यचर्या को (curriculum) पाठ्यक्रम (syllabus) के रूप में समझ लिया जाता है। जबकि दोनों में मूलभूत अंतर है।
- राष्ट्रीय पाठयचर्या रूपरेखा 2005 के संदर्भ में गठित 'पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों' के लिए राष्ट्रीय फोकस ग्रुप के अपने आधार–पत्र *(2009:11–12)* में पाठ्यचर्या को इस प्रकार परिभाषित किया है – *'पाठ्यचर्या का सर्वोत्तम अर्थ योजनाबद्ध गतिविधियो का ऐसा समुच्चय है जिसे पाठ्य की विषय–वस्तु तथा सुविचारित ढंग से पोषित किए जाने वाले ज्ञान, कौशल व अभिवृत्तियों के साथ–साथ विषय–वस्तु के चयन के लिए सिद्धांत वक्तव्य और पद्धतियों, सामग्री तथा मूल्यांकन के चयन के अर्थों में एक खास शैक्षिक लक्ष्य – लक्ष्यों के समुच्चय– को क्रियान्वित करने के लिए बनाया जाता है।....सोचे–समझे रूप में शैक्षिक अनुभवों के नियोजित समुच्चयों का संपूर्ण योग पाठ्यचर्या है, जो बच्चों को विद्यालय द्वारा दिए जाते हैं। ....पाठ्यचर्या शैक्षिक उद्देश्यों को क्रियान्वित करने की योजना है।'*

- बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 के अनुसार – *'पाठ्यचर्या के दायरे में हर वह चीज़ आती है जिसे बच्चा स्कूल के अंदर सीखता है, इसमें पाठ्यचर्येतर क्रियाकलाप तथा सामाजिक और वैयक्तिक रिश्ते भी शामिल हैं। पाठ्यचर्या की परिभाषा को विस्तारित कर इसमें कथित 'प्रछन्न पाठ्यचर्या' अथवा विद्यार्थियों को मानकों, मूल्यों और प्रवृत्तियों ..... का अव्यक्त शिक्षण भी समाविष्ट कर लिया गया है।*
- पाठ्यचर्या शैक्षिक अनुभवों का लेखा–जोखा है जिसके माध्यम से शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति की जाती है।
- पाठ्यक्रम पाठ्यचर्या का एक हिस्सा है, जिसमें विभिन्न अनुशासनों या विषयों के खास उद्देश्यों, शिक्षण–पद्धतियों और आकलन की चर्चा की जाती है।
- पाठ्यक्रम वास्तव में यह बताता है कि किसी विषय विशेष को पढ़ाने के उद्देश्य क्या हैं? किसी विषय विशेष की स्तरानुसार विषयवस्तु क्या होगी,उसे बेहतर तरीकों से कैसे पढ़ाया जा सकता और उस विषय का आकलन करने के तरीके क्या होंगे।
- पाठ्यपुस्तकें पाठ्यक्रम में निर्दिष्ट विषयगत उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करती हैं। पाठ्यपुस्तकें स्तरानुसार बनाई जाती हैं और विभिन्न अभ्यासों के माध्यम से आकलन की प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है।
- पाठ्यपुस्तकें शिक्षकों और बच्चों के लिए दिशा–निर्देश का कार्य करती हैं कि विषय विशेष के अंतर्गत किस स्तर पर कितनी अवधारणाओं को स्थान दिया जाना है और किस प्रकार उन अवधारणाओं को बच्चों तक संप्रेषित किया जाना है।
- पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते समय यह ध्यान में रखा जाता है कि पाठ्यपुस्तक में बच्चों के अनुभव संसार को समुचित स्थान दिया जाना चाहिए ताकि वे अपने अनुभवों के आधार पर ज्ञान की पुनर्रचना कर सकें। चूँकि बच्चों का परिवेश और संसार बेहद महत्वपूर्ण हैं अतः पाठ्यपुस्तकों में भी स्थानीयता का पुट झलकता है।
- हमारे विद्यालयों में हिन्दी भाषा एक विषय के रूप में भी मौजूद है और माध्यम के रूप में भी।
- हिन्दी भाषा केवल आपसी बातचीत का माध्यम ही नहीं है बल्कि ज्ञानार्जन और विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति का भी माध्यम है। अतः हिन्दी भाषा शिक्षण में केवल साहित्य पर ही बल न दिया जाए बल्कि विविध क्षेत्रों की जानकारी के लिए उसे माध्यम भी बनाया जाए।
- हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम के अंतर्गत बच्चों की हिन्दी भाषा प्रयोग संबंधी कुशलता और क्षमता का विकास तथा उनका सही–सही आकलन को स्थान दिया गया है।
- हिन्दी भाषा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों के परिवेश को समुचित स्थान दिया जाए। इतना ही नहीं, हिन्दी भाषा बच्चों के ज्ञानार्जन और अवधारणाएँ बनाने, उनके चिंतन का भी माध्यम है अतः पाठ्यक्रम में बच्चों को प्रश्न करने और अपनी बात कहने के भरपूर अवसर मिलें – यह भी एक उद्देश्य के रूप में रखा गया है।
- हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक हिन्दी भाषा सीखने–सिखाने के उद्देश्यों को प्राप्त करने का साधन मात्र है साध्य नहीं। यह बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों की इस रूप में मदद करता है कि वे हिन्दी भाषा सीखने–सिखाने की दिशा तय कर सकें।
- वास्तव में बच्चों के साहित्य या बाल साहित्य से तात्पर्य ऐसे साहित्य से है जिसे पढ़कर बच्चे मज़ा लेते हैं। उसे वे बार–बार पढ़ते हैं, किताबों के पन्नों को बार–बार पलटते हैं, जिनमें बच्चों की दुनिया की झलक मिलती है।

- बाल साहित्य के अंतर्गत कहानी, कविता, नाटक, हास्य–रोमांच से भरी बातें, संस्मरण इत्यादि वह सभी कुछ आता है जिसे पढ़कर बच्चों को मज़ा आए।
- बाल साहित्य बच्चों की कल्पना शक्ति को बढ़ाता है और साथ ही उनकी चिंतन–क्षमता, तर्क शक्ति का भी विकास करता है।
- बाल साहित्य में भाषा के विभिन्न रंगतों को देखने, समझने और अपने लिए उनका अर्थ गढ़ने का अवसर मिलता है। इस तरह बाल साहित्य बच्चों के भाषा विकास में भी सहायक है।
- शब्द–भंडार, वाक्य–संरचना, संदर्भ के अनुसार शब्दों का चयन आदि ऐसी कई भाषागत खास बातें जो बच्चे कहानी पढ़ने–सुनते आत्मसात करते चलते हैं।
- बाल साहित्य को उचित स्थान देने के लिए आप अपने कक्षाकक्ष में 'पढ़ने का कोना' यानि 'रीडिंग कॉर्नर' बना सकते हैं। जहाँ एक मेज़ पर या मेज़ के चारों तरफ प्लास्टिक की रस्सी अथवा सुतली बाँधकर किताबों को प्रदर्शित किया जा सकता है। आप चाहें तो अपने कक्षा की दीवारों पर ही रस्सी बाँधकर किताबों को बच्चों के लिए प्रदर्शित कर सकते हैं।
- 'पढ़ने का कोना' में इस बात का ध्यान रखें कि किताबें बच्चों की पहुँच के भीतर हों जिससे वे उन्हें छू सकें, उन्हें आराम से उठा–रख सकें।
- बच्चों को कहानी की किताब पढ़कर सुनाएँ और उनसे भी पढ़कर सुनाने के लिए कहें या उनसे कहें कि जो किताब पढ़ी है, उसके बारे में कक्षा में सभी बच्चों को बताएँ। ऐसा करने से आप उनमें पढ़ने का आत्मविश्वास पैदा करेंगे।

महत्वपूर्ण लिंक

1. www.ncert.nic.in
2. www.nuepa.org
3. http://www.educationbihar.gov.in
4. http://mhrd.gov.in/elementaryeducation.

मूल्यांकन

- पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
- क्या आपको बिहार राज्य द्वारा विकसित पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक में कोई अन्तर्सम्बन्ध नज़र आता है? हिन्दी भाषा के संदर्भ में विश्लेषण कीजिए।
- अपने शिक्षण–अनुभव के आधार पर बताइए कि आपके वर्ग के बच्चे हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के किन पाठों को बहुत पसंद करते हैं और किन्हें नहीं। उनसे बातचीत करते हुए कारणों की सूची बनाइए।
- हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में दिए गए गए अभ्यास प्रश्नों की महत्ता पर प्रकाश डालें।
- हिन्दी की पाठ्यपुस्तक किस सीमा तक हिन्दी भाषा–शिक्षण के उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम है? कक्षाई अनुभव, उदाहरण और तर्क के साथ अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

- हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक *किसलय* भाग–1, 2 और 3 में से क्रमशः 'दादा–दादी के साथ', 'वर्षा बहार' और 'अशोक का शस्त्र त्याग' पाठों को ध्यान से पढ़िए और बताइए ये पाठ बच्चों में हिन्दी भाषा की किन क्षमताओं का विकास करने में सक्षम हैं?
- तर्क और उदाहरण सहित बताइए कि हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न विधाओं के पाठ क्यों रखे जाते हैं।
- नीचे दिए गए कथन के संदर्भ में हिन्दी भाषा की पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक के बीच अंतर्संबंधों को व्याख्यायित कीजिए –

'पाठ्यचर्या अधिक अमूर्त श्रेणी है जबकि पाठ्यक्रम पाठ्यपुस्तकों के रूप में ठोस आकार ग्रहण कर लेता है।'

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पढ़े भारत बढ़े भारत (2014), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा– 2005, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
3. बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा– 2008, एससीईआरटी, पटना, बिहार
4. पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें : राष्ट्रीय फोकस ग्रुप का आधार–पत्र (2009), एनसीईआरटी, नई दिल्ली
5. बिहार की विद्यालयीय शिक्षा हेतु नवीन पाठ्यक्रम (2009), एससीईआरटी, पटना, बिहार
6. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ, भाषा शिक्षण, माहेश्वरी वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. शिक्षा और भाषा (डी.एल.एड प्रथम वर्ष, 2013) एससीईआरटी, पटना, बिहार
8. कुमार, कृष्ण (2000), बच्चे की भाषा और अध्यापक – एक निर्देशिका, नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
9. भारतीय भाषाओं का शिक्षण (आधार पत्र) (2009), एनसीईआरटी, नई दिल्ली
10. पढ़ने की समझ (2009), एनसीईआरटी, नई दिल्ली
11. पढ़ने की दहलीज़ पर (2009), एनसीईआरटी, नई दिल्ली
12. पढ़ना सिखाने की शुरुआत (2009), एनसीईआरटी, नई दिल्ली
13. शर्मा, उषा (2012), एक शिक्षक के अनुभव, पावन चिंतनधारा चैरिटेबल ट्रस्ट, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश
14. उषा शर्मा (2013), *बाल साहित्य के झरोखे से* (लेख), प्राथमिक शिक्षक, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

इकाई **3**

भाषायी क्षमताओं का विकास : सुनना व बोलना

बच्चों में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। उन्हें अपने परिवेश में सुनने और बोलने का भरपूर अवसर मिलता है और वे अपनी भाषा सहजता से सीख लेते है। बच्चों को आगे चलकर घर की भाषा के अलावा अन्य भाषाएँ भी सीखनी होती हैं। स्कूल में बच्चे हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, मैथिली इत्यादि भाषाएं सीखते हैं। इसके लिए भी जरुरी है कि बच्चों को इन भाषाओं के उपयोग के भरपूर मौके दिए जाए। भाषायीकौशलों में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना शामिल है। सहज मान्यता है कि इन कौशलों का आपसी सम्बन्ध है। ये सभी कौशल एक दूसरे के विकास में सहायक है लेकिन सीखने सिखाने के समय आम तौर पर इन कौशलों को अलग–अलग करके देखा जाता है।

विद्यालय आने से पहले बच्चे/बच्चियाँ घरेलू भाषाओं में अपनी पूरी दुनिया प्रकट करने के काबिल हो जाते हैं। ऐसा कहा जा सकता है कि सुनना और बोलना जैसे कौशल अनेक बार स्वतः अर्जित कर लिए जाते हैं। प्राथमिक स्तर पर बच्चे/ बच्चियाँ अपने परिवेश में उपलब्ध भाषा को विविध परिस्थितियों में प्रयोग होते, सुनते और समझते हैं। साथ ही उनसे लगातार अपने शब्द भंडार में वृद्धि करते चलते हैं। यह वह चरण है जब बच्चों को समृद्ध भाषायीमाहौल उपलब्ध होता है एवं सार्थकता के साथ अर्थ निर्माण करने के भरपूर अवसर होते हैं। दरअसल तीन वर्ष की उम्र तक बच्चे/ बच्चियाँ अपना शब्द भंडार पूरी तरह विकसित कर चुके होते हैं। उन्हें भाषा की पूरी व्यवस्था उतार चढ़ाव, समय आदि सबके बारे में जानकारी होती है। विद्यालय आने पर उनके सुनने और बोलने की दुनिया में अलग तरह के परिवेश, समाज और संस्कृति की दुनिया मिलती है। इस इकाई में हम विस्तार से सुनने और बोलने के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करेंगे।

भाषायी क्षमताओं की संकल्पना, विभिन्न भाषायी क्षमताओं और उनके बीच आपसी सम्बन्ध

बच्चे जब पहली बार स्कूल आते हैं, तो काफी दिनों तक उन्हें वर्णमाला, प्रार्थना, कविता, गिनती, पहाड़ा आदि रटवाया जाता है। शिक्षक की यह अपेक्षा रहती है कि बच्चे बार–बार दुहराकर उन्हें याद कर लेंगे। बच्चे भले ही इस प्रकार रटी हुई चीजों का मतलब समझ ना रहे हों उन्हें तब तक इन चीजों को दुहराते रहना पड़ता है जब तक वे उसे रट ना लें। इस तरह के दुहराव करवाने के पीछे की आम धारणा यह रहती है कि बार–बार एक ही ध्वनि सुनने और दुहराने से बच्चे उसे सीख जाते है और उन्हें याद हो जाता है। यह धारणा इस निष्कर्ष को मान्यता देती है कि बिना सुने बच्चा नए शब्द और वाक्य नहीं बोल सकता मतलब बच्चा पहले सुनता है और फिर बोलता है। जबकि दोनों प्रक्रियाएँ साथ साथ चलने वाली है।

जब हम कुछ बोलते हैं तो उसे सुन भी रहे होते है। कभी–कभी ऐसा होता है कि हम बिना बोले सुन रहे होते है। टी.वी., रेडियो आदि देखते–सुनते समय ऐसा होता है लेकिन यह प्रक्रिया इस रूप में नहीं होती कि जैसा सुन लिया गया वैसे ही याद कर लिया गया हो और जरुरत पड़ने पर उसे पुनः दोहरा दिया गया। वास्तव में सुनने–बोलने की प्रक्रियाँ इससे अलग है। सुनने बोलने में 'समझना' महत्त्वपूर्ण है। समझने के साथ ही हम किसी संवाद को आगे बढ़ा सकते हैं, दरअसल सुनना और बोलना दोनों साथ–साथ चलने वाली प्रक्रियाँ है इसलिए भाषा सीखने में इन दोनों को अलग–अलग करके नहीं देखा जा सकता है। समझ के आधार पर खड़ी ये दोनों परस्पर आश्रित प्रक्रियाएँ हैं।

विचारणीय प्रश्न 1

1.1. सुनने–बोलने की प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण हिस्सा क्या है और क्यों?

1.2. सुनने–बोलने की प्रक्रिया और सूचना ग्रहण करने में क्या अंतर है?

1.3. आमतौर पर स्कूलों में शुरुआती स्तर पर बच्चों को सुनने–बोलने के लिए किस तरह के मौके दिए जाते हैं? क्या ये मौके पर्याप्त होते हैं? अपना मत दीजिए।

हम हमेशा अपने आस–पास तरह–तरह की आवाजें सुनते रहते हैं। इसमें प्रकृति, इंसान, मशीन, जानवर इत्यादि की आवाजें शामिल होती है। यदि इन सभी आवाजों पर गौर करें तो क्या सही मायने में हम इन्हें सुन पाते हैं? जैसे लकड़ी काटे जाने, मशीन चलने आदि की ध्वनियों का क्या कोई अर्थ है?

जब हम किसी से बातचीत करते हैं तो उसके अर्थ को हमें उसी समय समझना होता है लेकिन यह समझना हमेशा एक ही तरह से नहीं होता। किसी संवाद को हम उसमें प्रयोग हो रहे शब्दों के आधार पर समझते है। इसमें सुनी जाने वाली ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों, उपवाक्यों और पाठ के आधार पर वाक्य को समझने का पक्ष प्रधान हो जाता है। इसमें सुनने वाले को उपयोग किये गए शब्दों का अर्थ तथा वाक्य में शब्दों के विशेष क्रम (पैटर्न) का पता होना चाहिए।

हम इसे एक उदाहरण से समझते हैं एक शिक्षक बच्चे से कहता है कि–

कुछ चिड़ियाँ पूरब से आई और कुछ चिड़ियाँ पश्चिम से, पूरब की चिड़ियों ने पश्चिम की चिड़ियों से कहा तुम अपने में से एक चिड़ियाँ हमें दे दो तो हम तुमसे दो गुने हो जायेंगे फिर पश्चिम की चिड़ियों ने पूरब की चिड़ियों से कहा तुम अपने में से एक हमें दे दो तो हम तुम्हारे बराबर हो जायेंगे। अब इस सवाल को समझने के लिए बच्चे को शब्दशः शिक्षक की बात पर ध्यान देते हुए आगे बढ़ना हैं और हर निर्देश का अनुसरण करते हुए सवाल को समझना है। इस प्रक्रिया में बच्चे का पूरा ध्यान शिक्षक के संवाद पर होता है। अनुभव ये बताता है कि इसमें क्रम को नहीं तोड़ना है। इसमें ध्वनियों को छोटे–छोटे टुकड़ों में बाँटकर बात को समझना है। यहाँ पूरे संवाद में महत्त्व के शब्दों को पहचानना और उनके टुकड़े करने की योग्यता महत्त्वपूर्ण है जो निरंतर अभ्यास से आती है।

इस रूप में शब्दों का अर्थ समझने में शब्द का अर्थ, वाक्य संरचना का अभ्यास और उसे टुकड़े में बाँटना निहित है। इस प्रकार के निरंतर अभ्यास से निम्न क्षमताएँ विकसित होने में मदद मिलती है। कही गई बात को शब्दशः सुनना तथा शब्द और वाक्य संरचना के विभाजन को समझ पाना, मूल शब्दों को पहचानते हुए वाक्य–शब्द के व्याकरणिक सम्बन्ध को पहचानना तथा उनके लिए बलाघात एवं विराम चिह्नों का प्रयोग करना। अब हम एक–दूसरे वाक्य को लेते है। हमने समाचार में सुना कि 'दरभंगा में बाढ़ आ गई है'। अब यह सूचना हमारे पूर्व अनुभवों के साथ जुड़कर एक विस्तारित समझ के रूप में ग्रहण होती है। इस प्रक्रिया में हमारा बाढ़ सम्बन्धी पूर्व अनुभव महत्त्वपूर्ण पहलू बन जाता है तथा अर्थ ग्रहण करने की प्रक्रिया कथन के अर्थ की संरचना पर निर्भर करती है। बाढ़ देखने या उसके बारे में सुनने और पढ़ने से हासिल हमारा पूरा अनुभव ज्ञान इस न्यूनतम सूचना के साथ जुड़ जाता है कि 'दरभंगा में बाढ़ आ गई है' यदि सुनने वाला इस प्रक्रिया से अर्थ ग्रहण करने में समर्थ नहीं होता है तो इसका अर्थ है कि या तो संवाद अधूरा है या फिर पूर्व ज्ञान सीमित है। इस प्रक्रिया में हम देखते है कि किसी परिस्थिति के अनकहे विवरण के आधार पर अनुमान लगाने के साथ हम उसके कारण और प्रभाव के बारे में मूल शब्दों के आधार पर समझ बनाने की तरफ आगे बढ़ सकते है।

सुनने–सुनाने के समय उपरोक्त प्रक्रियाएँ साथ–साथ चलती हैं। इन प्रक्रियाओं में बातचीत को समझने में संदर्भ, पूर्व ज्ञान और कथन विशेष महत्त्व रखता है। कौन से कथन में कौन सी प्रक्रिया ज्यादा उपयुक्त होगी यह कथन या संवाद के परिचय, सूचना की गहराई एवं प्रकार के साथ सुनने वाले के उद्देश्य पर निर्भर करता।

विचारणीय प्रश्न 2

2.1. शब्दों के आधार पर समझने की प्रक्रिया में संवाद को किस प्रकार से समझा जाता है? उदाहरण देकर विश्लेषण कीजिए।

2.2. रवि ने कहा कि ''मैं दंत चिकित्सक के पास जा रहा हूँ।'' इस कथन को सुनकर हमारे दिमाग में कौन–कौन प्रश्न उठेंगे।

सुनना और बोलना का अर्थ

सामान्यतः बोलने को हम विचारों के आदान–प्रदान से जोड़कर देखते है। बोलना दरअसल ध्वनियों शब्दों वाक्यों का उच्चारण मात्र नहीं है। बोलने से पहले हमारे दिमाग में एक छवि

बनती है कि हमें क्या बोलना है। बोलने में यह समझ निहित होती है कि हम उसे कैसे बोले कि सुनने वाले को समझ में आ जाए। जीन एचिसन ने अपनी पुस्तक 'द आर्टिकुलेट मैमल्स' में इंसानों की भाषायीसमझ के बारे में विस्तार से लिखा है। उनके अनुसार बोलते समय हम कई तरह की प्रक्रियाएँ एक साथ कर रहे होते है, जैसे– बोलने से पहले हमारे दिमाग में योजना बनती है कि हमें किसके सामने क्या कहना है और कैसे कहना है। जब कोई बात हम अपने दादाजी को कहेंगे वही बात दोस्त को कहने में हमारी भाषा में बदलाव आ जाता है। आगे कौन से शब्द बोलने है। हमारा वाक्य विन्यास (शब्द–वाक्य–रचना) किस प्रकार होगा इस पर विचार भी कर रहे होते है इसे एक उदाहरण से देखते है–

'मैं आज घर देर से जाऊँगा',
'माँ नाराज होंगी' और
'मुझे घर से बाहर रहना पड़ेगा'

इन तीनों वाक्यों की बनावट सरल है। यदि इन वाक्यों को इस तरह से बोला जाए, तो ठीक से समझ में आ रहे हैं और इनको बोलना भी आसान है। लेकिन अगर इन वाक्यों को एक–दूसरे पर निर्भर कर दें तो बोलते समय योजना बनाने वाली प्रक्रिया को बारीकी से देख पाएँगे,जैसे–'यदि मैं आज भी घर देर से गया तो माँ नाराज़ हो जाएँगी और या तो मुझे घर से बाहर रहना पड़ेगा या मैं किसी दोस्त के घर चला जाऊँगा'।

उपर्युक्त वाक्य में 'तो', 'यदि' पर आश्रित है। इसी तरह 'या' के साथ एक और 'या' का आना भी जरूरी है। साथ ही माँ के संदर्भ में 'जाएँगी' और अपने सन्दर्भ में 'जाऊँगा' होना ही पड़ेगा। स्पष्टतः यह पूरा वाक्य इसकी हू–ब–हू ध्वनि और लक्षणों के साथ बोलने से पहले ही हमारे दिमाग में बन चुका होता है और यह एक योजनाबद्ध क्रम में ही बनता है। (जीन एचिसन द्वारा 'द आर्टिकुलेट मैमल्स' के अनुवाद पर आधारित)

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि हमें बातचीत करते समय योजना बनाते रहना और बोलते रहना जरूरी है। बोलने के दौरान ये प्रक्रिया इतनी तेजी से होती हैं कि हमें इनका आभास तक नहीं होता। घरेलू भाषा के संदर्भ में यह बात ज्यादा प्रासंगिक है। जबकि दूसरी भाषा सीखने के दौरान ये प्रक्रिया काफी नजदीक से देखी जा सकती हैं।

बोलने में विचारों और भावों के अनुकूल सही शब्दों का चयन एवं सही व्याकरणिक संरचना का होना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। व्याकरणिक संरचना से मतलब है कि हिन्दी भाषा में वाक्य की रचना कर्त्ता + कर्म + क्रिया से होती है, बोलने से पहले हमारे दिमाग में योजना बनाते समय यह संरचना सही–सही बनती है, इसमें कहीं कोई गड़बड़ी नहीं होती है।

इस पूरी प्रक्रिया में हाव–भाव एवं विचारों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। बोलते समय ध्वनि का उतार–चढ़ाव, विराम एवं लय भी अर्थ–बोध में महत्त्व रखती हैं। बोलने में विराम की क्या भूमिका है इसे हम एक उदाहरण द्वारा समझने की कोशिश करेंगे,जैसे– 'पकड़ो मत जाने दो' इस वाक्य को बोलते हुए यदि 'पकड़ो' के बाद एक क्षण का विराम दिया जाए तो इसका अर्थ होता है कि कहीं जाने की मनाही का आदेश दिया जा रहा है परन्तु यदि यही विराम 'पकड़ो मत' के बाद दिया जाए तो वाक्य का जो अर्थ निकलता है वह पहले वाले अर्थ से एकदम उलटा होता है। अतः बोलते समय विराम कहाँ दिया जाए, इसकी समझ होना जरूरी है और यह समझ निरन्तर अभ्यास से ही विकसित होती है। इसी

के साथ बोलते समय किसी शब्द पर ज़ोर देना या अलग लय के साथ बोलना भी वाक्य के अर्थ को प्रभावित करता है, जैसे– 'ये स्कूल है'।

इस वाक्य को बोलते समय यदि हम अलग–अलग शब्दों पर ज़ोर दें या फिर अलग लय के साथ बोलें तो इससे वाक्य का अर्थ बदल जाता है। यह वाक्य लय बदलते ही व्यंग्यात्मक, प्रश्नात्मक या विस्मयात्मक वाक्य का अर्थ दे सकता है। इसी के साथ बोलते वक्त अमौखिक संकेतों (इशारों एवं हाव–भाव) का प्रयोग भी अर्थ को प्रभावित करता है।

विचारणीय प्रश्न 3

3.1.अपने भाव–विचार को स्पष्ट करने के लिए बोलते समय हम किन–किन चीज़ों का सहारा लेते हैं?

3.2. अपने आसपास के 3–4 वर्ष के बच्चों द्वारा बोले जाने वाले 10 वाक्यों को लिखिए और विश्लेषण करके लिखिए कि भाषा के नियम की दृष्टि से वह बच्चा क्या–क्या जानता है?

सुनने एवं बोलने को प्रभावित करने वाले कारक

सुनने एवं बोलने को प्रभावित करने वाले बहुत से कारक हैं इनमें कुछ महत्त्वपूर्ण कारक दिए जा रहे हैं–

1. जैविक कारक
2. परिवेशगत कारक

1. जैविक कारक

भाषा बोलने तथा समझने के लिए स्नायु तन्त्र, तथा वाक्–यन्त्र की महती भूमिका है। इनकी बनावट एवं स्नायु नियन्त्रण सुनने एवं बोलने को प्रभावित करते हैं। जब कोई व्यक्ति बोलता है तो इस क्रम में मुख और नाक से वायु विभिन्न अवरोधों के साथ निकलती है। सुनने के क्रम में ध्वनि कान में स्थित विभिन्न भागों को झंकृत करती है। स्पष्टता के अभाव में व्यक्ति गलत शब्दों को ही आत्मसात कर लेता है। कान और मुख में अगर किसी प्रकार की समस्या होगी तो सुनना और बोलना प्रभावित होगा। किसी प्रकार की मानसिक और बौद्धिक स्थिति भी सुनने और बोलने को प्रभावित करती है।

2. परिवेशगत कारक

व्यक्ति जिस परिवेश में रहता एवं क्रिया करता है, वह उसके व्यक्तित्व के साथ–साथ भाषा को प्रभावित करता है। उसकी पारिवारिक, सामाजिक, भाषिक पृष्ठभूमि भी भाषा को प्रभावित करती है। भाषा विकास में विद्यालय की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। विद्यालय में विभिन्न विषयों एवं क्रियाकलापों के दौरान भाषा सीखना–सिखाना अनवरत जारी रहता है। अध्यापन, वकालत, व्यापार आदि सरीखे व्यवसाय सुनने बोलने के एक अलग ही शैली का निर्माण करते है।

सुनने एवं बोलने को प्रभावित करने में मीडिया की बहुत बड़ी भूमिका है। खासतौर पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रयुक्त होने वाली भाषाएँ हमारे मन पर गहरे प्रभाव डालती है। उदाहरण स्वरुप जिन घरों में टेलीविजन होता है, उन घरों के बच्चों के भाषायीप्रयोग में मीडिया के शब्दों एवं भाषा शैली का धड़ल्ले से प्रयोग देखा जाता है।

प्राथमिक स्तर के बच्चों के सुनने व बोलने की क्षमताओं का विकास

हमने देखा की बच्चों में सुनने एवं बोलने की जन्मजात प्रवृत्ति होती है। स्वभावतः विद्यालय आने से पहले वे इसमें महारत हासिल कर चुके होते है। विद्यालय प्राथमिक स्तर पर बच्चों में सुनने व बोलने की क्षमताओं के विकास हेतु कई तरीकों को अपना सकती है–

- बच्चों की बातचीत का महत्त्व ।
- कक्षा में सुनने–बोलने के मौके उपलब्ध करवाना।
- कविता/बालगीत सुनना और सुनाना।
- चित्रों पर चर्चा करना।
- कहानी सुनना व सुनाना।
- नाटक/रोल प्ले द्वारा भाषायीविकास।
- कुछ अन्य गतिविधियाँ।

बच्चों की बातचीत का महत्त्व

हमारे स्कूलों में 'बात करना' प्रायः गलत समझा जाता है। यह माना जाता है कि यदि कोई बात कर रहा है तो ठीक से पढ़ाई नहीं कर रहा होगा। इसलिए जैसे ही अध्यापक बच्चों को बात करता हुआ देखता है, वह तुरंत उन्हें रोकता है। बात करने की छूट बच्चों को सिर्फ आधी छुट्टी में रहती है जब अध्यापक कोई महत्त्वपूर्ण काम नहीं कर रहा होता है।

बातचीत के प्रति उपेक्षा की वजह से हम शिक्षा में बातचीत के उपयोगों की अवहेलना करते आ रहे हैं। यह स्थिति सभी स्तरों पर है पर प्रारम्भिक स्तर पर यह सब सबसे स्पष्ट है। पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए बातचीत करना सीखने और सीखी हुई चीज को सुदृढ़ बनाने का एक बुनियादी माध्यम है। सच तो यह है कि ऐसे अध्यापक, जो बच्चों को बात नहीं करने देते, किताबों व अन्य सामग्री के लिए पैसे की कमी की शिकायत करने के हकदार नहीं है। वे पहले ही एक ऐसा मूल्यवान साधन बेकार जाने दे रहे हैं जिसके लिए कोई पैसा नहीं खर्च करना पड़ता। इसलिए ऐसा स्कूल जहाँ छोटे बच्चे बात करने को स्वतंत्र नहीं, बड़ा फिजूलखर्च स्कूल कहलायेगा।

यह सही है कि बच्चे तरह–तरह के उद्देश्य लेकर बातचीत करते हैं और वे सभी उद्देश्य अध्यापक के लिए उपयोगी नहीं कहे जा सकते। उदाहरण के लिए बोरियत के मारे बात करने दूसरे की निगाह से चूकी हुई चीज उसे दिखाने के लिए बात करने में फर्क है। दूसरी किस्म की बात बच्चे की सीखने की प्रक्रिया को बल देती है, जैसा कि दो बच्चों के इस संवाद में हो रहा है। ये बच्चे अध्यापिका की मेज़ के पास इन्तजार में खड़े फुसफुसा रहें है और अध्यापिका रजिस्टर भरने में लगी है।

पहला बच्चाः देखा, आज बहन जी अँगूठी पहने हैं!

दूसरा बच्चाः तुमने पहले नहीं देखी?

पहला बच्चाः नहीं .... हाँ, हाँ मैंने पहले देखी है।

दूसरा बच्चाः अरे, लेकिन यह अँगूठी दूसरी है।

पहला बच्चाः बहन जी ने नई अँगूठी खरीदी है। यह पहले वाले से छोटी है।

दूसरा बच्चाः नहीं, पतली है।

यदि आप इस छोटे से संवाद का विश्लेषण करें तो सीखने की उन संभावनाओं को पहचान सकेंगे जो बातचीत के जरिये इन दो बच्चों को उपलब्ध हुईं। यदि पहले बच्चे अध्यापिका की अँगूठी देखकर बात न छेड़ी होती तो उसे यह याद करने का न मौका मिलता कि बहन जी पहले भी अँगूठी पहनती थीं। यदि यह बातचीत न हुई होती तो दूसरे बच्चे को पुरानी और नई अँगूठी में फर्क देखने का अवसर न मिलता, न ही यह समझने का अवसर मिलता कि 'छोटी' और 'पतली' में क्या भिन्नता है। बातचीत के इन उपयोगों के प्रति सचेत होने के लिए जरुरी है कि हम बच्चों की बात सुनने की आदत डालें। यह कहना आसान है, पर इसे करना इसलिए मुश्किल है क्योंकि बड़े यह मान कर चलते हैं कि उनका काम बच्चों को निर्देश देना है और बच्चों का काम सुनना है। बच्चों के बातचीत के अच्छे श्रोता बनने के रास्ते में यह मान्यता अड़चन पैदा करती है। अच्छे श्रोता से मेरा आशय एक ऐसे व्यक्ति से है जो बात के सूक्ष्म उद्देश्य और बातचीत के कारण पैदा हुई सीखने के संभावनाओं को धैर्यपूर्वक पहचान सके।

(आभारः ''बच्चे की भाषा और अध्यापक एक निर्देशिका'', कृष्ण कुमार, NBT द्वारा प्रकाशित)

विचारणीय प्रश्न 4

4.1.कक्षा में बच्चों की बातचीत के प्रति शिक्षक क्या सोचते हैं?

4.2. अपने आस–पास के किन्हीं 3–6 साल के बच्चों की बातचीत का अवलोकन कीजिए और अपने अनुभव लिखिए और विश्लेषण कीजिए कि उनकी बातचीत में ऊपर दी गई क्रियाओं में से कौन–कौन सी शामिल हैं?

कक्षा में सुनने–बोलने के मौके उपलब्ध करवाना

गर्मी की छुट्टियों के बाद स्कूल खुल चुके थे। बरसात हो जाने से आसपास के गड्ढों में पानी भरा हुआ था। इधर स्कूल में पढ़ाई भी शुरू हो चुकी थी। एक कक्षा में शिक्षक पढ़ा रहे थे। कक्षा में पीछे की तरफ बैठे दो बच्चे आपस में बातें कर रहे थे। शिक्षक का ध्यान अचानक उन दोनों की ओर गया। शिक्षक उन बच्चों के पास गए और बड़े प्यार से पूछा 'भई, क्या बात है, हमें भी बताओ। क्या बातें हो रही हैं? और कोई मजेदार बात हो तो अपने दूसरे दोस्तों को भी बताओ।'

कक्षा में दोनों बच्चे कुछ देर के लिए तो सकपका गए। वे चुप ही रहे। फिर से शिक्षक ने कहा– 'डरो मत, आखिर तुम क्या बात कर रहे थे?'

उनमें से एक बच्चा हिम्मत करके बोला– 'है ना, हम घर से आ रहे थे तो गड्ढे में मेंढक जोर–जोर से बोल रहे थे।'

शिक्षक ने हौसला बढ़ाते हुए कहा– 'अच्छा!', फिर क्या हुआ?

बच्चे– 'मेंढक गड्ढे के किनारे उछल रहे थे। मेंढक बड़े–बड़े थे।'

शिक्षक– 'तो फिर क्या हुआ?'

बच्चे– 'फिर...। फिर, हम पास में गए तो पानी में छलाँग लगा दी।'

उन दोनों बच्चों का हौसला बढ़ चुका था। उनको यह भरोसा हो गया था कि वो जो बातें कर रहे थे इस वजह से उनको डाँट पड़ने वाली नहीं है बल्कि वो जो बातें कर रहे थे उसकी वजह से उनको शाबाशी मिल रही है।

उनमें से एक बच्चे ने शिक्षक से पूछा– 'मेंढक बरसात के बाद कहाँ चले जाते हैं?'

शिक्षक जो पढ़ा रहे थे उसको छोड़कर बच्चों की बात को आगे बढ़ाया– 'सभी ने मेंढक देखा है।' उस कक्षा में कोई भी बच्चा ऐसा नहीं था जिसने मेंढक नहीं देखा हो। शिक्षक के इस सवाल पर पूरी कक्षा "हाँ " की आवाज के साथ गूँज रही थी।

अब तो हर बच्चा मेंढक के बारे में कुछ न कुछ कहने को उतावला हुए जा रहा था।

एक बच्चा बोला– मेंढक बरसात में ही टर्र–टर्र करते हैं।

एक बच्चे ने कहा– 'जब मेरे घर के पिछवाड़े खुदाई हो रही थी तो अंदर से मेंढक निकले थे।'

एक ने कहा कि उसने मेंढक को कीड़े खाते हुए देखा है। कोई बता रहा था कि मेंढक बावड़ी की मुंडेर से छलाँग लगा लेते हैं।

कक्षा का माहौल अब मेंढकमय हो गया था। कुछ बच्चे मेंढक की आवाज में टर्र–टर्र कर रहे थे तो कुछ मेंढक की तरह उछल रहे थे।

शिक्षक बच्चों की बातों और क्रियाकलापों को गौर से सुन और देख रहे थे। हालाँकि शिक्षक बीच–बीच में बच्चों को चुप भी करा रहे थे।

शिक्षक ने सभी बच्चों से कहा– 'देखो, अब मेंढकों को ओर ध्यान से देखना और सोचना भी कि आखिर मेंढक बरसात के बाद कहाँ चले जाते हैं।'

अन्त में शिक्षक ने बच्चों को मेंढक पर 5 वाक्य लिखकर लाने को कहा।

मेंढक पर हुई इस बातचीत में शिक्षक ने सहज तरीके से मेंढक के आवास, खान–पान, रंग–रूप, आकार, स्वभाव पर बातचीत की और उसे अपने शिक्षण से जोड़ा। स्कूल में शिक्षक द्वारा बच्चों को इस तरह की बातचीत के मौके देने से वे धीरे–धीरे अपने अनुभवों से जुड़े भावों और विचारों को प्रकट करने में समर्थ हो जाएँगे। साथ ही वे विभिन्न विषयों में शामिल ज्ञान को गहराई से समझ सकेंगे। ऐसे मौके देने के लिए शिक्षकों को ज्यादा दूर जाने की जरूरत भी नहीं है वरन् स्कूल परिवेश में या स्कूल के आस–पास की जगहों, जैसे– बगीचा, खेत, नाला, छोटी पुलिया, फूल, तितलियाँ, सड़क, मिट्टी, फाटक, घोंसले आदि उन तमाम चीजों को आसानी से ढूँढ़ा जा सकता है। जिनका नजदीक से अवलोकन कर बच्चे उनके बारे में बातचीत कर सकते हैं।

यहाँ शिक्षक ने बच्चों को अपनी बात कहने के भरपूर मौके देने के साथ–साथ बोलने के लिए प्रोत्साहित भी किया है। अगर शिक्षक बच्चों को प्रोत्साहित ना करते तो कक्षा में इतनी बढ़िया बातचीत नहीं हो पाती। इस तरह कक्षा को बच्चों के जीवन और अनुभवों से जोड़ने से सीखना सहज एवं स्वाभाविक हो जाता है। इसी प्रकार कक्षा कक्ष में आज की बात , अपने बारे में बातचीत कर, स्कूली अनुभवों के बारे में बताना, आँखों देखी या सुनी हुई घटनाओं के बारे में अभिव्यक्ति के मौके देकर सुनने और बोलने की क्षमताओं का विकास किया जा सकता है।

विचारणीय प्रश्न 5

5.1. आप अपने वर्गकक्ष में बच्चों को बातचीत के कौन–कौन से मौके देंगे और इससे क्या–क्या फायदा होगा?

5.2. कक्षा में बच्चों की बातचीत को सीखने–सिखाने का जरिया आप कैसे बनाएँगे?

आपके अनुसार शिक्षण के दौरान कक्षा का माहौल कैसा होना चाहिए?

कविता/बालगीत सुनना और सुनाना

गोल–गोल पानी
मम्मी मेरी रानी
पापा मेरे राजा
फल खाए ताजा।
सबसे पहले मेरे घर का
अंडे जैसा था आकार
तब मैं यही समझती थी बस,
इतना–सा ही है संसार।
फिर मेरा घर बना घोंसला,
सूखे तिनके से तैयार।
तब मैं यही समझती थी बस,
इतना–सा ही है संसार।
फिर मैं निकल गई शाखों पर,
हरी–भरी थी जो सुकुमार।
तब मैं यही समझती थी बस,
इतना–सा ही है संसार।
आखिर जब मैं आसमान में,
उड़ी अपने पंख पसार,

तभी समझ में मेरी आया,
बहुत बड़ा है यह संसार।

— निरंकार देव 'सेवक'

हरा समन्दर, गोपी चन्दर
बोल मेरी मछली, कितना पानी
इतना पानी, इतना पानी।

हम अक्सर बच्चों को गली–मुहल्ले में अपने साथियों के साथ या अकेले ऐसे कई छोटे–छोटे बालगीत और कविताएँ गाते देखते हैं। ये सब गाते समय ना उन्हें गलत गाने पर डाँट या सजा का डर रहता है और ना ही किसी के टोकने या रोकने का डर। हर बच्चे को कविता/गीत की लय और शब्दावली आकर्षित करती है। कई बार तो वे गीतों के शब्दों को खींचतान कर ऊटपटाँग प्रयोग भी करते हैं और ऐसा करने में उन्हें बहुत ही मज़ा आता है। शब्दों से खेलना, बच्चों की रचनाशक्ति और ऊर्जा को बाहर लाने में अद्‌भुत भूमिका निभा सकता है। ये कविता इसका एक उदाहरण पेश करती है–

घर पीछे तलैया
घास की मड़ैया
पीपल की है छैया
छैया बैठी गैया।

अक्सर इस तरह के गीत गाते समय बच्चे उसमें कई बार अपनी मर्जी से कुछ शब्दों को जोड़ते–तोड़ते रहते हैं, परन्तु कविता की लय टूटती नहीं है, जैसे–एक चार–पाँच साल का बच्चा इस कविता में अपने शब्द जोड़कर गाता है–

घर पीछे गैया
मेरे साथ भैया
पीछे बैठी मैया
भैया मेरा रोया
रात नहीं सोया।

कविता अपने आपको अभिव्यक्त करने तथा अपने जीवन से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है। नियमित रूप से कविताएँ व गीत सुनकर बच्चे भाषा की बुनियादी संरचनाएँ ग्रहण कर लेते हैं, जैसे– कविता में आए नए शब्दों का अर्थ पकड़ लेते हैं, कविता के लय को बना बिगाड़ कर तुकबन्दी भी कर लेते हैं। साथ ही कविता बच्चों को अपने अनुभवों से भी जोड़ती है। अगर एक ही कविता को दो अलग–अलग बच्चों द्वारा पढ़ी जाएगी तो दोनों ही उस कविता का अर्थ अपने–अपने अनुभवों से जोड़ते हुए समझेंगे।

शिक्षकों के लिए यह सोचने वाली बात है कि कक्षा में कविता के साथ किस तरह से काम किया जाए जिससे बच्चों में रचनात्मकता का विकास हो तथा वे अपनी भावनाओं और अनुभवों को कविता व गीतों के द्वारा अभिव्यक्त कर सकें।

विचारणीय प्रश्न 6

6.1. कक्षा एक व दो की हिन्दी पाठ्य–पुस्तक में दी गई कविता, 'मन करता है' तथा 'नानी तेरी मोरनी' नामक कविता के आधार पर बच्चों से क्या–क्या बातचीत की जा सकती हैं?

6.2. प्राथमिक कक्षा के भाषा–शिक्षण में कविताओं की क्या भूमिका है? पुस्तकालय व पाठ्य–पुस्तक में दी गई किन्हीं चार–पाँच कविताओं के उदाहरण से समझाइए?

अगर पेड़ भी चलते होते

अगर पेड़ भी चलते होते
कितने मजे हमारे होते
बाँध तने में उनके रस्सी
जहाँ कहीं उनको ले जाते।

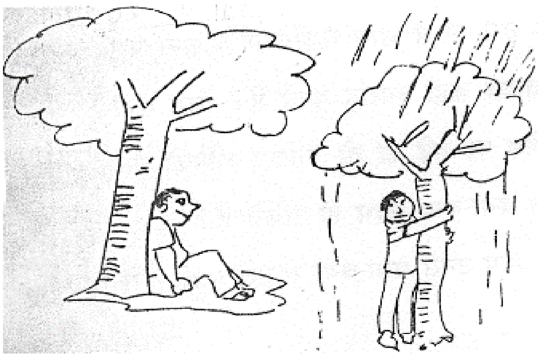

अगर कहीं पर धूप सताती
उनके नीचे झट सुस्ताते
जब कभी भी वर्षा होती
उनके नीचे हम छिप जाते।

भूख सताती अगर अचानक
तोड़ मधुर फल उनके खाते
आता कीचड़ बाढ़ कहीं तो
ऊपर उनके झट चढ़ जाते।

विचारणीय प्रश्न 7

यह कविता बच्चों को भाषा सीखने में क्या–क्या मौके देती है?

चित्रों पर चर्चा करना

चित्र एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम कक्षा 1 से लेकर कक्षा 8 तक के बच्चों के साथ बातचीत एवं चर्चा की बहुत सारी संभावनाएँ खोज सकते हैं। छोटी कक्षाओं में तो बच्चों की चित्रों में बहुत ही रुचि होती है, उन्हें चित्र देखने और बनाने में मजा आता है। किसी किताब में चित्र सबसे पहले बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हैं। उनके साथ चित्रों पर सहज बातचीत करना आसान होता है। बच्चे चित्रों का बारीकी से अवलोकन भी करते हैं तथा उस पर खूब सारी बातचीत भी कर पाते हैं जिसका कि हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते हैं।

कक्षा–3 के बच्चों के साथ जब इस चित्र पर बातचीत की गई तो बच्चे उसमें दिखाई देने वाली चीजों के नाम बताने के साथ–साथ अपने अनुभवों को अवलोकन से जोड़ते हुए कुछ तर्क दे पा रहे थे, पर हर किसी का अलग नजरिया था। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

1. आदमी गाय ले जा रहा है/एक आदमी बैल बाँध रहा है/एक लड़का झोंपड़ी में जा रहा है।
2. एक लड़की पेड़ पर चढ़ रही थी एक लड़के ने उसको रोका कि पेड़ बहुत बड़ा है, तुम गिर जाओगी/लड़की पेड़ पर झूल रही है/पेड़ हिल रहे हैं/पहाड़ पर बहुत सारे पेड़ उग रहे हैं।
3. सुबह सूरज उग रहा है, सुबह पक्षी उड़ रहे हैं/सूरज निकल कर बाहर आ रहा है/शाम का समय है/सूरज डूब रहा है।
4. लुगाई घर जा रही है/औरत पानी ले जा रही है।
5. दो बगुले उड़ रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्य इस बात की ओर इशारा करते हैं कि बच्चे एक चित्र पर कई तरह से बातचीत करते हैं। चित्रों पर की गई बातचीत बच्चों की सृजनात्मकता और विश्लेषण क्षमता को बढ़ावा देती है। चाहे वे चित्र अखबारों में छपे हों, विज्ञापन के हों, कोई टिकट हो या कैलेण्डर के पीछे छपे हों। ये सभी चित्र उच्च प्राथमिक स्तर पर भी अलग–अलग तरीके से बातचीत के लिए उपयोग में लिए जा सकते हैं।

कक्षा में बच्चों के बीच बैठकर किसी तस्वीर को आराम से देखने का अवसर देना और अपनी बात कहने के लिए उन्हें स्वतंत्र छोड़ देना उनमें बेहिचक अभिव्यक्ति के विकास के लिए बहुत उपयोगी होता है। तस्वीर में जिन चीज़ों की तरफ बच्चों का ध्यान नहीं गया हो

उसे शिक्षक प्रश्न पूछकर बच्चों के ध्यान में ला सकते हैं। इस तरह से बच्चे में बारीकी से अवलोकन करने की क्षमता विकसित की जा सकती है। तस्वीरों पर बात करते समय हमारे सवाल, बच्चों को अपने कौशलों को पैना करने का भरपूर मौका देते हैं। प्रश्न ऐसे होने चाहिए जो बच्चों को चीज़ों को ढूँढ़ने, उनके बारे में तर्क करने, कल्पना करने, भविष्यवाणी करने और चीजों और घटनाओं का अपने अनुभवों से संबंध बैठाने के लिए प्रेरित करें। जैसे उपर्युक्त चित्र पर आधारित प्रश्न बच्चों से सवाल पूछकर बातचीत को आगे बढ़ाने का एक नमूना पेश करते हैं–

- पेड़ के नीचे क्या–क्या रखा है? (ढूँढ़ना)
- कुएँ के पास खड़ी बच्ची रो क्यों रही है? (तर्क करना)
- पनघट पर खड़ी औरतें क्या बातें कर रही होंगी? (कल्पना करना)
- औरतें घर जाकर क्या करेंगी? (भविष्यवाणी करना)
- क्या तुम कभी गाँव गए हो यदि हाँ तो तुमने वहाँ क्या–क्या देखा? (संबंध बनाना)

कहानी सुनना व सुनाना

कहानियाँ सुनना–सुनाना प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को भाषा सीखने में बहुत मदद करता है। कहानी सुनना बच्चों के लिए रुचिकर होने के साथ–साथ उनकी सृजनात्मकता को भी बढ़ाने वाला होता है। कई बार बच्चे सुनी हुई कहानी में मनचाहा बदलाव करके अपने मित्रों को सुनाते हैं। इसके द्वारा बच्चे न केवल शब्दों के अर्थ बल्कि विभिन्न घटनाओं को भी समझने लगते हैं और साथ ही यह बच्चों की कल्पनाशीलता को भी बढ़ाती है। कहानी इस मायने में भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह बच्चों में अनुमान लगाने की क्षमता बढ़ाती है जैसे– जब कभी बच्चे कहानी सुन रहे होते हैं तो उनकी जिज्ञासा लगातार बनी रहती है कि आगे क्या होगा? वे अपने स्तर पर अनुमान लगाते रहते हैं और अगर कहानी उनकी सोच के अनुरूप आगे बढ़ती है तो वे ज्यादा आत्मविश्वासी होने लगते हैं और समय के साथ–साथ उनके अनुमान ज्यादा सटीक होते जाते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कहानियाँ उनको भावी जीवन के लिए तैयार करने में भी मददगार होती हैं। जैसे– खरगोश–शेर वाली कहानी बच्चों को जीवन में आने वाली मुश्किलों का सामना करने हेतु मानसिक रूप से तैयार करती है। कहानियाँ सुनाते समय हम अपने जीवन के अनुभवों को भी उसमें शामिल करते चलते हैं। कई बार सुनाने वाले को उसमें से कोई बात ज्यादा महत्त्वपूर्ण लगती है तो वह उस हिस्से को बढ़ा–चढ़ाकर भी सुनाता है। ऐसा करते समय जीवन की घटनाओं, चरित्रों आदि को गढ़ना और उसके द्वारा सुनने वाले का ध्यान आकर्षित करना मुख्य उद्देश्य होता है। साथ ही सुनाने वाले का तरीका और हाव–भाव भी इसकी रोचकता पर प्रभाव डालते हैं तथा जब कहानी में नए शब्दों का उपयोग होता है तो बच्चे हावभाव के साथ सुने गए शब्दों से उसके अर्थ का अनुमान भी लगा लेते हैं। यह उनके शब्दकोश, सुनने–समझने और अनुमान लगाने की क्षमता में भी इज़ाफा करता है।

कहानी सुनाकर उस पर चर्चा करना थोड़ा मुश्किल काम है, परन्तु अगर शिक्षक की तैयारी हो कि चर्चा का उद्देश्य क्या है तो यह काफी आसान व सफल साधन बन सकता है। अधिकतर शिक्षकों को लगता है कि कहानी सुनाते ही उससे क्या शिक्षा मिलती है यह

प्रश्न पूछना उनका अधिकार है जबकि बच्चों के साथ सार्थक संवाद की शुरुआत के लिए यह प्रश्न बिल्कुल भी ठीक नहीं हैं।

बच्चों को कहानी सुनाना जितना जरूरी है उतना ही जरूरी है उनसे कहानी सुनना। इससे बच्चों में अपने आपको अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास होता है। शिक्षक द्वारा सुनायी गई कहानी को दोहराने के बजाय बच्चों से उनकी मर्जी की कहानी सुनना ज्यादा फायदेमंद होता है। कहानी के व्यक्तित्व व चरित्र के बारे में प्रतिक्रिया देते समय वह अपने अनुभवों को भी उसमें शामिल करता है। प्रत्येक बच्चे को कक्षा में इस बात की स्वतन्त्रता देनी होगी कि वह कहानी के बारे में किसी भी तरह की बात करे, उसे कल्पना से बढ़ा–चढ़ा कर बताए।

विचारणीय प्रश्न 8

8.1. कक्षा एक व दो की हिन्दी पाठ्य–पुस्तक में से आपको कौन–कौन सी कहानियाँ पंसद है और ये कहानियाँ आपको क्यों पंसद है? उस पर अपने विचार लिखिए।

8.2. कक्षा एक व दो की हिन्दी पाठ्य–पुस्तक में से बच्चों को कौन सी कहानी ज्यादा अच्छी लगी। इसके बारे में बच्चों से बातचीत कीजिए कि यह कहानी क्यों अच्छी लगी?

8.3. कक्षा एक की पाठ्य–पुस्तक अंकुर में 'शेर और सियार' की कहानी पर बच्चों से बातचीत के लिए निम्नलिखित बिन्दु दिए गए है–

कहानी में यदि आप शेर होते तो क्या करते?

कहानी में यदि आप सियार होते तो क्या करते?

लोमड़ी नहीं भागी होती तो क्या होता?

इस कहानी में बुद्धिमान कौन है और क्यों?

इस तरह के प्रश्न बच्चों से पूछने के क्या उद्देश्य रहे होंगे?

नाटक/रोल प्ले द्वारा भाषायी विकास

बच्चों के लिए नाटक कोई नई चीज़ नहीं है। हम अक्सर बच्चों को कार्टून या फिल्म के पात्रों की नकल, अपने मम्मी–पापा, गुडिया की शादी, स्कूल–स्कूल आदि खेल खेलते देखते हैं। इस तरह से बच्चे खेल–खेल में किसी की नकल उतारना, किसी चीज़ को बढ़ा–चढ़ाकर बताना, बहाने बहाना जैसे कई नाटक करते रहते हैं। हर बच्चे में एक नाटकीय कौशल होता है लेकिन उन्हें कक्षा में इस कौशल का प्रयोग करने का अवसर नहीं मिलता। इसका कारण यह भी है कि नाटक–अभिनय जैसी गतिविधियों को स्कूलों में वार्षिक उत्सव या किसी विशेष अतिथि के सामने प्रदर्शन के लिए ही करवाया जाता है। इस स्थिति में भी संवाद शिक्षकों द्वारा लिखे होते हैं तथा प्रदर्शन के समय बच्चों में हमेशा ही गलती हो जाने का डर बना रहता है।

अभिनय को रोज़मर्रा की कक्षा–गतिविधि के रूप में इस्तेमाल करना इससे काफी अलग है। एक भाषायीगतिविधि के रूप में नाटक में दो बातों को शामिल करना जरूरी है– आजादी

और आनन्द। नाटक को कक्षा में करवाने के लिए शिक्षक व बच्चों को कोई विशेष तैयारी की जरूरत नहीं होती। बस शिक्षक को इतना करना होता है कि वह बच्चों को स्वाभाविक रूप से अपने अनुभवों के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करे। प्राथमिक स्तर पर तो अभिनय के लिए किसी भी ऐसी घटना, कहानी या कार्टून को लिया जा सकता है जो बच्चे अपने आस–पास देखते हैं। जैसे– कोई जानवर, उसकी चाल, उसका रंग–रूप आदि। उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षक बच्चों को इस बात के लिए प्रेरित करें कि वे छोटे–छोटे समूहों में खुद ही नाटक का विषय चुनें, खुद ही उसके संवाद लिखें एवं अभिनय करें। साथ ही बच्चों को पारम्परिक खेलों व लोककथाओं का अभिनय करने के लिए भी उत्साहित करना चाहिए जिससे उनमें सृजनात्मकता के विकास के साथ–साथ अपने सांस्कृतिक वातावरण से भी जुड़ाव बढ़े।

कुछ अन्य गतिविधियाँ

कक्षा में बच्चों को सुनने–बोलने के मौके देने के लिए कुछ अन्य गतिविधियाँ भी करवायी जा सकती है। जो बच्चों को स्वयं सोच–विचारकर उसे अपने शब्दों में प्रस्तुत करने के मौके दे। जैसे– आशुभाषण, जिसमें बच्चों को दिए गए विषय पर तत्काल अपने विचार प्रस्तुत करने होते हैं। इसे रोचक बनाने के लिए ऐसे मनोरंजक विषय रखे जा सकते हैं जिससे बच्चे आनन्द लेते हुए बोल व सुन पाएँ जैसे– 'अगर मुझे अलादीन का चिराग मिल जाए', 'अगर मैं जादूगर होता', 'अगर मैं जोकर होता' आदि। दूसरी गतिविधि है, वाद–विवाद। इसमें बच्चों को किसी विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करने होते हैं और विपक्षी विचारों के सामने ऐसे मजबूत तर्क रखने होते हैं जिससे वक्ता अपनी बात से ज्यादा से ज्यादा श्रोताओं को प्रभावित करे एवं उनको सहमत कर पाए। जैसे– 'उद्योग वरदान या अभिशाप', 'फास्टफूड बनाम स्वास्थ्य'। इस तरह की गतिविधियाँ सभी कक्षा के बच्चों के साथ की जा सकती है। इनके द्वारा बच्चों को ऐसे अवसर मिलते हैं जिससे कि वे विचारों व बोलने में संबंध बैठा पाते हैं, उन्हें व्यवस्थित क्रम में जमाते हैं तथा तर्क के साथ अपने अनुभवों को जोड़ते हुए प्रभावी वक्ता एवं कुशल श्रोता बनते हैं। इसके साथ साथ सुने गये विचारों एवं बातों को अपने शब्दों में संक्षेप एवं विस्तारित करना, परिचित सम–सामयिक विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करना। बच्चों को कहानी, कविता, नाटक आदि रचने एवं उसे आगे बढ़ाने तथा प्रस्तुतीकरण कराना। इसके लिए अध्यापक को शुरू से ही बच्चों में धैर्यपूर्वक सुनने तथा दूसरों के विचारों का सम्मान करने की आदत विकसित करनी चाहिए।

विचारणीय प्रश्न 9

चित्र कथाओं के साथ भाषा–शिक्षण की कक्षा में क्या–क्या किया जा सकता हैं और इसे करने के क्या फायदे हैं?

भाषा सीखने के संकेतक–सुनने एवं बोलने के सन्दर्भ में

बच्चे में सीखने की प्रक्रिया जन्म से ही शुरू हो जाती है और यह आजीवन चलता रहता है। विद्यालय परिवेश में निर्धारित पाठ्यक्रम के ज़रिए सीखने–सिखाने के दरम्यान इस सीखने की प्रक्रिया को चिह्नित करना भी उतना ही ज़रूरी है, जितना कि सीखना–सिखाना।

भाषा सीखने की संप्राप्तियों को समझने के लिए बच्चों के सामाजिक परिवेश, मनोवैज्ञानिक स्वरूप और उससे जुड़े इशारों और अभिव्यक्तियों को भी समझने की ज़रूरत होगी। यदि कोई बच्चा अपने सामाजिक परिवेश से अलग परिवेश का सामना करता है, कोई बच्चा संकोची हो सकता है, कुछ बच्चे इशारे से अपनी बात करते हैं, तो कुछ सांकेतिक भाषा में लिखते–बोलते हैं, तो शुरू–शुरू में उसकी अभिव्यक्तियाँ हमारी अपेक्षा के अनुकूल नहीं होंगी। तब आवश्यक है कि इनके स्वतः स्फूर्त अभिव्यक्ति को सँवारने का इनको मौका मिले एवं इससे संबंधी गतिविधियों का आयोजन विद्यालय में भरपूर हो। इसलिए हमें भाषा की संप्राप्तियों को समझने के दौरान सुनने–बोलने, पढ़ने–लिखने जैसे कौशलों को व्यापक नज़रिए से समझना होगा और भाषायीकौशलों को यांत्रिकता के सीमित दायरों से बाहर निकालना होगा। तभी हम सही मायने में भाषिक विविधता (बच्चों की सांकेतिक भाषाएँ ब्रेल आदि अपनी भाषा के साथ–साथ भाषा अभिव्यक्तियों के अलग–अलग ढंग, इशारे, संकेत) को एक समावेशी कक्षा में स्थान दे पाएँगे। इस दृष्टि से संकेतक शिक्षाशास्त्रीय के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक और सामाजिक भी होंगे।

प्राथमिक कक्षाओं में भाषा की संप्राप्ति सुनने और बोलने के सन्दर्भ में दिया जा रहा हैं-

कक्षा एक

- अपने आसपास की आवाज़ों को ध्यान से सुनकर (लोगों, बस, रेल, बैलगाड़ी, पशु–पक्षी आदि) उसको पहचानते हैं।
- अपनी, अपने परिवार, परिवेश की बात को कहने में दिलचस्पी दिखाते हैं, जैसे– मेरे बहन का नाम भी शबनम है।
- अपने घर और परिवेश की चीज़ों से जोड़कर चित्रों और रचनाओं पर अनुमान लगाने की कोशिश करते है, जैसे–ये तो मेरे घर के सामने वाले आम के पेड़ जैसा है।
- किसी सुनी गई बातों को अपनी भाषा में कहने की कोशिश करते हैं।
- अपने आस–पास नज़र आने वाली प्रिंट सामग्री पर ध्यान देकर उस पर सवाल करते है, जैसे–पेंसिल पर दोनों किनारों पर ये बच्चे कैसे बैठ गए?
- •सुनी अथवा पढ़ी गई रचनाओं की विषय–वस्तुओं घटनाओं, चित्रों और पात्रों, आदि के बारे में बातचीत करने में रुचि प्रदर्शित करते है।
- आस–पास मौजूद परिस्थितियों, मौसमों के बारे में बातचीत करते है, जैसे– आज बारिश होगी।
- शब्दों और ध्वनियों के खेल को खेलना, जैसे–सर–सर, फर–फर, अक्कड़–बक्कड़, अटकन–चटकन की तुकबंदी वाला खेल।
- अपने मन की बातों को पाठ या चित्र के आधार पर बातचीत करना, अनुभव कहानी, कविता आदि को उतार–चढ़ाव के साथ सुनाना।

कक्षा दो

- दूसरों की बातों को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते है। उदाहरण के लिए रोज़मर्रा की घर, खान–पान, खेल–कूद, स्कूल और साथियों की बातें, जैसे–मेरी दीदी भी मेरे लिए नया स्कूल बैग लाई आदि।
- चित्रों और रचनाओं पर अनुमान लगाते हुए अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते है, जैसे–घोंसले में चिड़िया अंडे छोड़कर कहाँ गई होगी?

- हिन्दी में सुनी गई बातों को अपनी भाषा में कहते है।
- अपने आस–पास नज़र आने वाली प्रिंट सामग्री पर ध्यान देकर उस पर सवाल करते हैं, जैसे–इस फूल का रंग लाल क्यों है?
- सुनी अथवा पढ़ी गई रचनाओं की विषय–वस्तुओं, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, आदि के बारे में बातचीत करते है, जैसे–भालू ने खेली फुटबॉल कहानी में जब भालू के बच्चे ने किक लगाई तो बड़ा मज़ा आया।
- अपने मन से कहानी/कविता आदि बनाने का प्रयास करते हैं, जैसे– आज परी के पापा आए, साथ में वो गुब्बारे लाए।
- कहानी/कविता अथवा अन्य बातों को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हैं।

कक्षा तीन

- सुनी अथवा पढ़ी गई रचनाओं की विषय–वस्तुओं, घटनाओं, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत/सवाल पूछते है, जैसे इस चित्र में मछली उड़ क्यों रही है?
- सुनी गई ऑडियो–वीडियो सामग्री पर बातचीत करता है। जैसे– बूढ़ी अम्मा ने झाड़ू मारा तो चाँद ऊपर आसमान में जाकर बैठ गया।
- कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी/बात पूछते है।

कक्षा चार

- दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनने में दिलचस्पी दिखाते है। जैसे– सिर हिलाकर समझ व्यक्त करता है।
- दूसरों की बातों को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते है। जैसे– सोनी, तुम्हारी किताब भी तो फ़ट गई है। कल तो छुट्टी है, दादी के साथ पार्क में खूब खेलूँगा।
- अपनी और अपने परिवार की बात को कहने में दिलचस्पी और आत्मविश्वास दिखाते है। जैसे– मेरी दीदी के पैर में चोट लग गई है।
- भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ता और उसका इस्तेमाल करता है।
- हिन्दी में सुनी गई बातों को अपनी भाषा में आत्मविश्वास से कहते है।
- चित्रों और अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर अनुमान लगाते हुए रचनाओं पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते है।
- अपने आस–पास नज़र आने वाली प्रिंट सामग्री पर ध्यान देते हुए उसे समझने और उस पर बातचीत करने की कोशिश करते है। जैसे– दवा पिलाने वाले कल हमारे मोहल्ले में भी आए थे। मेरी छोटी बहन को भी दवा पिलाई थी।
- सुनी अथवा पढ़ी गई रचनाओं की विषय–वस्तुओं,घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते/सवाल पूछते है। जैसे– अब तक हमने जो कविताएँ पढ़ी थीं, उनमें हर पंक्ति का अंतिम शब्द मिलता–जुलता था।
- कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी/बात पूछते है।

कक्षा पाँच

- दूसरों द्वारा कही जा रही बात को धैर्य तथा ध्यान से सुनने में दिलचस्पी दिखाते हैं जैसे– प्रश्न करके समझने की कोशिश करता है।
- दूसरों की बातों को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया तथा अपना मत व्यक्त करते है।
- अपनी, अपने परिवार और अपने परिवेश की बात को कहने में दिलचस्पी और आत्मविश्वास दिखाते है जैसे– अरे! यहाँ पानी भी बोतल में बिकता है। हमारे गाँव में तो नदी है।
- भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ता और भाषायीखेल करते है, जैसे– अपने साथियों से कहता है कि जल्दी–जल्दी बोलकर दिखाओ– 'गोपगपंगमदास'।
- हिन्दी में सुनी गई बातों को अपनी भाषा में आत्मविश्वास से कहते है।
- चित्रों और अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर अनुमान लगाते हुए रचनाओं पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते है, जैसे– इस बाज़ार में कॉमिक्स भी मिलती होगी।
- सुनी अथवा पढ़ी गई रचनाओं की विषय–वस्तुओं,/ घटनाओं/चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/सवाल पूछते है।
- कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी/बात पूछते है। जैसे फिर मंगू ने रुपये वापस कर दिए।

यहाँ भाषा सीखने की संप्राप्ति को कक्षावार देने का यह कतई तात्पर्य नहीं है की किसी विशिष्ट कक्षा से सम्बंधित ये संप्राप्ति किसी अन्य कक्षा में परिलक्षित नहीं होंगी, अपितु यह कुशलता अन्य कक्षाओं में भी विभिन्न स्तरों पर दिख सकती है। भाषा सीखने के क्रम में इस बात का खास ध्यान रखना होगा कि इस संप्राप्ति के लिए पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यसामग्री को देखना और समझना ज़रूरी होगा।

समेकन

सुनने व बोलने का अर्थ केवल यांत्रिक रुप से सुनना या बोलना नहीं है बल्कि इसमें वैचारिक प्रक्रिया भी काफी महत्त्वपूर्ण है। बच्चे घर की भाषा में इन कौशलों में सहजता से प्रवीण हो जाते हैं परन्तु स्कूल की भाषा में ऐसी प्रवीणता हासिल करने के लिए विशेष प्रयासों की जरूरत होती है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण, कक्षा में बातचीत के मौके देना जो कि सीखने का एक अनोखा साधन है और जिसका बच्चों के सामाजिक व्यवहार और व्यक्तित्व पर गहरा असर पड़ता है। साथ ही इस बात पर भी चर्चा हुई कि कक्षा में इन मौकों को उपलब्ध करवाने में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है और वह बच्चों को बेहिचक अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। चित्र एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम कक्षा 1 से लेकर कक्षा 8 तक के बच्चों के साथ बातचीत एवं चर्चा की बहुत सारी संभावनाएँ खोज सकते हैं। छोटी कक्षाओं में तो बच्चों की चित्रों में बहुत ही रुचि होती है उन्हें चित्र देखने और बनाने में मजा आता है। किसी किताब में चित्र सबसे पहले बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हैं। उनके साथ चित्रों पर सहज बातचीत करना आसान होता है। बच्चे चित्रों का बारीकि से अवलोकन भी करते हैं तथा उस पर खूब सारी बातचीत भी कर पाते हैं जिसका कि हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते हैं।

कहानियाँ सुनना–सुनाना प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को भाषा सीखने में बहुत मदद करता है। कहानी सुनना बच्चों के लिए रुचिकर होने के साथ–साथ उनकी सृजनात्मकता को भी बढ़ाने वाला होता है। कई बार बच्चे सुनी हुई कहानी में मनचाहा बदलाव करके अपने मित्रों को सुनाते हैं। इसके द्वारा बच्चे न केवल शब्दों के अर्थ बल्कि विभिन्न घटनाओं को भी समझने लगते हैं और साथ ही यह बच्चों की कल्पनाशीलता को भी बढ़ाती है। कहानी इस मायने में भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह बच्चों में अनुमान लगाने की क्षमता बढ़ाती है जैसे– जब कभी बच्चे कहानी सुन रहे होते हैं तो उनकी जिज्ञासा लगातार बनी रहती है कि आगे क्या होगा? वे अपने स्तर पर अनुमान लगाते रहते हैं और अगर कहानी उनकी सोच के अनुरूप आगे बढ़ती है तो वे ज्यादा आत्मविश्वासी होने लगते हैं और समय के साथ–साथ उनके अनुमान ज्यादा सटीक होते जाते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कहानियाँ उनको भावी जीवन के लिए तैयार करने में भी मददगार होती हैं। जैसे– खरगोश–शेर वाली कहानी बच्चों को जीवन में आने वाली मुश्किलों का सामना करने हेतु मानसिक रूप से तैयार करती है। कहानियाँ सुनाते समय हम अपने जीवन के अनुभवों को भी उसमें शामिल करते चलते हैं। कई बार सुनाने वाले को उसमें से कोई बात ज्यादा महत्त्वपूर्ण लगती है तो वह उस हिस्से को बढ़ा–चढ़ाकर भी सुनाता है। ऐसा करते समय जीवन की घटनाओं, चरित्रों आदि को गढ़ना और उसके द्वारा सुनने वाले का ध्यान आकर्षित करना मुख्य उद्देश्य होता है। साथ ही सुनाने वाले का तरीका और हाव–भाव भी इसकी रोचकता पर प्रभाव डालते हैं, तथा जब कहानी में नए शब्दों का उपयोग होता है तो बच्चे हावभाव के साथ सुने गए शब्द से उसके अर्थ का अनुमान भी लगा लेते हैं। यह उनके शब्दकोश, सुनने–समझने और अनुमान लगाने की क्षमता में भी इज़ाफा करता है।

कविता अपने आपको अभिव्यक्त करने तथा अपने जीवन से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है। नियमित रूप से कविताएँ व गीत सुनकर बच्चे भाषा की बुनियादी संरचनाएँ ग्रहण कर लेते हैं। जैसे– कविता में आए नए शब्दों का अर्थ पकड़ लेते हैं, कविता के लय को बना बिगाड़ कर तुकबन्दी भी कर लेते हैं। साथ ही कविता बच्चों को अपने अनुभवों से भी जोड़ती है। अगर एक ही कविता को दो अलग–अलग बच्चों द्वारा पढ़ी जाएगी तो दोनों ही उस कविता का अर्थ अपने–अपने अनुभवों से जोड़ते हुए समझेंगे।

शिक्षकों के लिए यह सोचने वाली बात है कि कक्षा में कविता के साथ किस तरह से काम किया जाए जिससे बच्चों में रचनात्मकता का विकास हो तथा वे अपनी भावनाओं और अनुभवों को कविता व गीतों के द्वारा अभिव्यक्त कर सकें।

भाषा सीखने की संप्राप्तियों को समझने के लिए बच्चों के सामाजिक परिवेश, मनोवैज्ञानिक स्वरूप और उससे जुड़े इशारों और अभिव्यक्तियों को भी समझने की ज़रूरत होगी। यदि कोई बच्चा अपने सामाजिक परिवेश से अलग परिवेश का सामना करता है, कोई बच्चा संकोची हो सकता है, कुछ बच्चे इशारे से अपनी बात करते हैं, तो कुछ सांकेतिक भाषा में लिखते–बोलते हैं, तो शुरू–शुरू में उसकी अभिव्यक्तियाँ हमारी अपेक्षा के अनुकूल नहीं होंगी। तब आवश्यक है कि इनके स्वतः स्फूर्त अभिव्यक्ति को सँवारने का इनको मौका मिले एवं इससे संबंधी गतिविधियों का आयोजन विद्यालय में भरपूर हो। इसलिए हमें भाषा की संप्राप्तियों को समझने के दौरान सुनने–बोलने, पढ़ने–लिखने जैसे कौशलों को व्यापक नज़रिए से समझना होगा और भाषायीकौशलों को यांत्रिकता के सीमित दायरों से बाहर निकालना होगा।

महत्त्वपूर्ण लिंक

1. www.ncert.nic.in
2. www.nuepa.org
3. http://www.educationbihar.gov.in
4. http://mhrd.gov.in/elementaryeducation

मूल्यांकन

1. कहानियाँ बच्चों की कौन–सी क्षमताओं को विकसित करने में सहायक होती हैं?
2. बच्चों को कक्षा में बात करते ही टोक दिया जाता है, क्या यह रवैया आपको सही लगता है? अपना मत दीजिए।
3. आप एक ऐसी कहानी लिखिए जिस पर कक्षा में खूब सारी बातचीत हो सके। जिससे कि बच्चों के सुनने और बोलने की क्षमताओं का विकास हो सके।
4. बच्चों की बातचीत को प्रोत्साहित करने वाला कौन–सा तरीका आपको ज्यादा पसंद है और क्यों? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
5. कक्षा में जो बच्चे अक्सर बातचीत में भाग नहीं लेते, उन्हें बातचीत में शामिल करने के लिए आप किस तरह के उपाय करेंगे? कोई दो उपाय विस्तार से बताइए।
6. कक्षा 3 के बच्चों के लिए ऐसी चार पंक्तियों की कविता ढूँढ़िए जिसे बच्चे अपने मन से आगे बढ़ा सकें। कक्षा में यह अभ्यास करवाइए।
7. एक बच्चा यदि कक्षा में कहानी सुनाते समय अटक–अटक कर बोले या गलत उच्चारण करें तो आप उसके साथ किस प्रकार से काम करने की योजना बनाएँगे।
8. आपसी बातचीत में मशगूल कुछ बच्चों का छिपकर अवलोकन कीजिए और देखिए कि वे क्या–क्या बातें करते हैं। उनकी बातचीत को आप कक्षा में कैसे इस्तेमाल करेंगे?
9. भाषा सीखने भाषा की संप्राप्ति – सुनने और बोलने के सन्दर्भ में, की चर्चा कीजिए।

संदर्भ

- Agnihotri, R.K. and Bagchi, Tista. eds. (2007), *Construction of Knowledge.* Udaipur: Vidya Bhawan Society.
- Agnihotri, R.K. (1999), *Bachchon ki Bhaashaa Sikhane ki Kshamataa, Bhag-1, 2 (Shaikshik Sandarbh). Bhopal: Eklavya*
- Kumar, Krishna (1996), *Bachchon ki Bhaashaa Or Adhyaapak.* New Delhi: National Book Trust.
- Richards, Jack C. (2008). *Teaching Listening and Speaking: From Theory to Practice.* New York: Cambridge University Press.

- Chafe, Wallace (1985). *Differences between Speaking and Writing.* New York: Cambridge University Press.
- बच्चों की भाषा और अध्यापक, कृष्ण कुमार
- सरल हिन्दी भाषा शिक्षण, डा० सत्यप्रकाश दुबे
- लिखने की शुरूआत– एक संग्रह, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
- भाषा और शिक्षा– स्व–अधिगम सामग्री, एस.सी.ई.आर.टी., पटना
- अंकुर भाग–1 एवं 2, एस.सी.ई.आर.टी, पटना
- दिवास्वपन, गिजुभाई बधेका
- बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008
- कहानी सुनने का हुनर (लेख), कृष्ण कुमार
- प्राथमिक शिक्षक, त्रैमासिक पत्रिका, अंक– अक्तूबर,2014, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

शब्दावली

रोल प्ले– किसी के चरित्र और व्यवहार के नक़ल करने की क्रिया है।

बहुभाषिकता– किसी व्यक्ति अथवा समुदाय के द्वारा दो या अधिक भाषाओं का प्रयोग करना बहुभाषिकता है। यह सुनकर समझने, बोलने, पढ़ने, लिखने में से किसी भी स्तर पर हो सकता है।

इकाई 4

पढ़ने की क्षमता का विकास

बच्चों में जन्म के साथ ही सुनने तथा बोलने की क्षमता का विकास स्वाभाविक रूप से शुरू हो जाता है। सुनना एवं बोलना मानव का सहजात गुण है अतः इस हेतु विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं पड़ती। किन्तु पढ़ने एवं लिखने की क्षमता के विकास हेतु प्रायः तमाम विद्यालयीय व्यवस्था की आवश्यकता पड़ती है।

पठन क्षमता का विकास भाषा शिक्षण का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर पर ही पठन क्षमता की नींव पड़ती है। अतः मजबूत नींव के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक पठन कौशल के महत्व, इसके विभिन्न पहलुओं, शिक्षार्थियों के पूर्वज्ञान एवं आवश्यकताओं आदि को भली भाँति समझें और भाषा शिक्षण में दक्षता हासिल करें। यह इकाई पढ़ने का अर्थ, पढ़ने की प्रक्रिया, पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीकों, पठन प्रक्रिया के दौरान बच्चों और शिक्षकों को आनेवाली चुनौतियाँ, पठन के विभिन्न प्रकारों, पढ़ना सीखने–सिखाने में बाल साहित्य की भूमिका इत्यादि के बारे में बातें करते हुए इसकी समझ बनाने का प्रयास करती है।

सबने विद्यालय को नजदीक से देखा है। बच्चे–बच्चियों के माता–पिता बड़ी उम्मीदों से उनको स्कूल भेजते हैं। वे भी बड़ी उत्साह के साथ पढ़ने की दहलीज पर कदम रखते हैं। लेकिन पहली कक्षा के अन्त तक आते–आते पढ़ना सीखने की आशा पूरी नहीं हो पाती। कुछ अध्ययनों में ऐसा पाया गया है कि स्कूल में साल भर पढ़ना सिखाया जाता है फिर भी अनेक बच्चे–बच्चियाँ पढ़ना सीख नहीं पाते। पढ़ना सीखना उनके लिए आनन्ददायी हो इसके लिए पढ़ना सीखने की प्रक्रिया कैसी हो, इसपर विस्तृत चर्चा प्रस्तुत पाठ में की गई है। अगर बच्चे को पढ़ना सिखाने में सार्थक संदर्भों का उपयोग किया जाए तो पढ़ना सीखना आसान एवं सुखद हो जाता है।

विचारणीय प्रश्न–1

1.1 पहली कक्षा के अंत तक भी बच्चे–बच्चियाँ पढ़ना नहीं सीख पाते। आपके विचार से इसके क्या–क्या कारण हो सकते हैं?

1.2. पढ़ना सीखना बच्चे–बच्चियों के लिए आनन्ददायी होना क्यों जरूरी है?

पढ़ने का अर्थ

पढ़ने का मतलब आखिर है क्या? विचारकों एवं भाषाविदों के अनुसार लिखे हुए से अर्थ गढ़ना ही पढ़ना है। पढ़ने का अर्थ है लिखे हुए धारणाओं को गढ़ना और साथ ही विचारों को आपस में जोड़ पाना और उन्हें अपनी स्मृति में रखना। पढ़ना सिर्फ वर्णमाला की पहचान, शब्द तथा वाक्य को बोल भर पाना नहीं है, बल्कि इसके आगे बहुत कुछ और भी है। यानि कि लिखे हुए के अर्थ को समझकर अपना नजरिया बनाना या फिर अपनी निजी समझ विकसित करना है। शब्द के हिज्जे (वर्तनी) बोलना पढ़ना नहीं है। पढ़ने का अर्थ है, लिखे हुए के साथ संवाद करना, अपने अनुभवों एवं सैद्धान्तिक संरचना के साँचे में लिखे हुए को ढ़ालना ।

पढ़ना एक एकाकी प्रक्रिया नहीं है। इसमें शामिल है अक्षरों की आकृतियाँ और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ, वाक्य विन्यास, शब्दों और वाक्यों के अर्थ और साथ ही अनुमान लगाने का कौशल। पढ़ने में महत्वपूर्ण है लिखी हुई जानकारियों या संकेतों को उनके अर्थ के साथ ग्रहण करना। एक उदाहरण से इसको समझने की कोशिश करते है – यहाँ नीचे के वाक्य 'जे रेन्त्रे चीज माई' को पढ़े, देवनागरी लिपि में होने के कारण हम इसे पढ़ने में सक्षम है लेकिन पढ़ने के उपरांत इसके अर्थ को क्या समझ पा रहे है? अगर नहीं तो इसका मतलब है की मात्र लिखे गए को पढ़ना, पढ़ना नहीं कहेंगे। स्पष्ट है बिना अर्थ का पढ़ना, आधा–अधूरा पढ़ना कहा जाएगा। बॉक्स में दिया गया वाक्य फ्रेंच भाषा का वाक्य है जिसका अर्थ होगा–

जे रेन्त्रे चीज माई

मै घर जाता हूँ।

बहुधा यह मान लिया जाता है कि लिखी या छपी हुई शब्दावली को उच्चरित करने की क्षमता ही पठन है। यह धारणा सही नहीं है। इसे हम वाचन कहते हैं, पठन नही। वाचन शब्द 'वाक्' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है– शब्द, वाणी या कथन। वाचन में शब्दों के उच्चारण की प्रधानता होती है, जबकि पठन में अर्थग्रहण पर बल होता है। पठन एक सोद्देश्य, सार्थक तथा चिंतन प्रधान क्रिया है। पाठक लिखी या छपी हुई शब्दावली का उच्चारण करे या न करे किन्तु अर्थग्रहण अवश्य करता है तथा उसका मूल्यांकन भी करता है। पढ़ना और वाचन में अंतर को इस उदाहरण से समझा जा सकता है। दूरदर्शन या आकाशवाणी पर समाचार प्रस्तुत करनेवालों का उद्देश्य श्रोताओं को समाचार स्पष्टतः सुनाना होता है। अतः उनके द्वारा शब्दों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वे वस्तुतः वाचन करते हैं अतः उन्हें 'समाचारवाचक' कहा जाता है। वहीं समाचारपत्र पढ़नेवाला कोई सामान्य व्यक्ति समाचार पढ़कर उसका अर्थग्रहण करता है, अनुमान लगाता है तथा उसका मूल्यांकन भी करता है। वह वास्तव में पठन कार्य करता है और समाचारपत्र का 'पाठक'

कहा जाता है। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में कुछ स्तम्भ होते हैं जो उनके पढ़नेवालों को पाठक कहकर संबोधित करते हैं, यथा– पाठकों के पत्र, पाठकीय, पाठकों की समस्याएँ, पाठकों के विचार इत्यादि।

विचारणीय प्रश्न– 2

2.1. आपके विचार से पढ़ने का अर्थ क्या हैं?

2.2. सिर्फ वर्णमाला की पहचान करना पढ़ना नहीं है। क्या आप इस मत से सहमत हैं?

2.3. पढ़ना और वाचन कैसे अलग है?

शुरुआती पढ़ना क्या है?

शिक्षकों में यह मान्यता बैठी हुई है कि पढ़ना सिखाने की शुरुआत वर्ण परिचय से होनी चाहिए। इस मान्यता के चलते वे पहली कक्षा की पाठ्यपुस्तक में शुरुआत से ही मात्रा वाले शब्द देखकर परेशान हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि जब बच्चा अक्षरों को ही नहीं पहचानता तो मात्रा वाले शब्दों को कैसे पढ़ेगा?

अंकुर भाग–1 (प्रथम वर्ग की पाठ्य पुस्तक) की सोच यह है कि पढ़ना सिखाने का उद्देश्य बच्चों को एक जिज्ञासु एवं नियमित पाठक बनाना है। वर्ण–परिचय से शुरू होनेवाली शिक्षण पद्धति ज्यादातर बच्चों को साक्षर तो बना देता है, परंतु उत्साही पाठक नहीं बना पाती। ऐसा इसलिए क्योंकि अक्षर सार्थक नहीं होते। हर अक्षर की आकृति और ध्वनि को बच्चे की स्मृति में बिठाने के लिए शिक्षकों को अधिक समय और श्रम लगता है। वर्णमाला और बारहखड़ी को पूरा करते–करते महीनों बीत जाता है।

पढ़ना सिखाने की शुरुआत सार्थक शब्दों और रुचिकर संदर्भो से करना चाहिए। पढ़ना सीखने की प्रक्रिया की स्वाभाविक शुरुआत बच्चे स्मृति चिह्न बनाकर करते हैं। यदि एक बच्चे को घर का चित्र और चित्र के नीचे लिखा शब्द 'घर' दिखाते है तो बच्चा चित्र के बिना लिखा गया 'घर' शब्द पहचान लेता है। भले ही वह 'घ' व 'र' जैसे अक्षर नहीं पहचानता हो। एक बार जब बच्चे साथ में दिए गए चित्रों या शिक्षक के साथ बातचीत के सहारे कई शब्द पहचानने लगते है, तब उन शब्दों में आए अक्षरों की ओर ध्यान दिलाया जाता है। मात्राओं को भी बच्चे स्वयं पहचानने लगते है। इस पद्धति में शिक्षक की स्नेही भूमिका बहुत महत्व रखती है।

शिक्षक पढ़ना सिखाने के लिए तरह–तरह के तरीके इस्तेमाल करते है, जैसे–फ्लैश कार्ड, चार्ट, रबर के अक्षरों जैसे प्रचलित सामग्री का उपयोग। पढ़ने की प्रक्रिया में कई क्रियाएँ शामिल हैं। पढ़ते समय भाषा के उपयोग से जुड़े तीन तरह के संकेत सामने आते हैं–

- अक्षरो की आकृतियाँ और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ।
- वाक्य विन्यास।
- शब्दों के अर्थ।

पढ़ने में अनुमान लगाने के कौशल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस कौशल के विन्यास में कहानी और कविताएँ आश्चर्यजनक योगदान करती है। नियमित रूप से इन्हें सुनने से बच्चे

भाषा की बुनियादी संरचनाएँ ग्रहण कर लेते है। अंकुर पाठ्य पुस्तक में बच्चों के लिए रोचक कहानियाँ और कविताएँ दी गई है। बच्चों को चारों ओर गोल घेरे में बैठाकर पुस्तक बीच में रखकर इन्हें सुनाएँ।

कहानियों को स्वर में उतार–चढ़ाव एवं हाव–भाव के साथ बच्चों को सुनाने से वे कहानी में खो जाते हैं। पुस्तक मे दी गई कहानियों के अलावे अन्य कहानियाँ व लोककथाएँ सुनानी चाहिए। कहानी सुनते समय बच्चे अनुमान लगाते है कि आगे क्या होगा? अनुमान का सही सिद्ध होना बच्चे को आनंदित तो करता ही है, उनका विश्वास भी बढ़ाता है। यही विश्वास पढ़ने की क्षमता के विकास में सहायक होता है। कहानी सुनते समय नन्हें बच्चें जो अभी साक्षर नहीं बने है, अपनी वास्तविक दुनिया से कही बड़ी काल्पनिक दुनिया बनाते हैं। इसलिए बच्चों को प्रतिदिन कहानियाँ सुनाएँ। पहले से सुनी कविता–कहानी बच्चे अनुमान लगाते–लगाते पढ़ना सीख जाते है। वे जल्दी पढ़ भी लेते है। अक्षर, शब्द एवं वाक्य की पहचान सहज हो जाती है। वास्तव में पढ़ना सीखने–सिखाने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि बच्चे वही पढ़े जो उनके लिए सार्थक हो। बाल–कहानियाँ उनके लिए ऐसी ही एक सार्थक सामग्री हैं क्योंकि वे उनके लिए एक परिचित, रोचक एवं आनन्ददायी दुनिया रचती है।

भाषा सीखने के साधन के रूप में कविता विशेष रूप से उपयोगी होती है क्योंकि कविता आसानी से स्मृति का हिस्सा हो जाती है। बार–बार सुनने, मजा लेने और दोहराने से कविता अपने आप धीरे–धीरे स्मृति में आ जाती है। कविताओं को गाकर सुनाएँ और बच्चे साथ में गाएँ। बाद में जब वे उसे पुस्तक से पढेंगे तो शब्दों का सरलता से अनुमान लगा लेंगे। पुस्तक में दी गई रचनाओं के अतिरिक्त रचनाएँ भी बच्चों को सुनाएँ। शिक्षक के लिए जरूरी है कि अच्छी कहानी, कविताओं का चयन करें।

पढ़ना सिखाने के लिए सबसे अच्छी सामग्री शिक्षक ही बना सकते हैं। रोचक कहानियाँ, कविताएँ, गीतों एवं खेल–गीतों का संग्रह बना सकते है। पढ़ने में बच्चे की रुचि शिक्षक ही जगा सकते हैं। इसमें शिक्षक का स्नेहिल व्यवहार एवं पठन कौशल विकसित करने के लिए चुनी गई सामग्री के उपयोग की महत्वपूर्ण भूमिका है।

इस प्रकार रोचक कहानियों, कविताओं और तस्वीरों पर बच्चों से बातचीत करके उनमें पढ़ने की इच्छा जगाकर उन्हें पढ़ना सिखाया जा सकता है। जब बच्चा अपनी जिंदगी और आसपास हो रही चीजों के बारे में आत्मविश्वास से बातें करने लगे तो समझिए कि वह लिखना सीखने के लिए तैयार है। बच्चे को सुनाई गई कहानी कविताओं तथा उस दौरान दिखाए गए चित्रों के इस्तेमाल के दौरान की गई गतिविधियों से उपजी बातचीत से प्रत्येक बच्चे के लिए एक शब्द या वाक्य चुनकर बच्चे की कॉपी/श्यामपट्ट पर साफ–साफ लिख दीजिए। फिर उसे पढ़कर सुनाएँ। इसके बाद बच्चे से कहें कि वह आपकी लिखावट को उतारे या उसी पर लिखें। प्रतिदिन जब आप बच्चे को एक नया शब्द या वाक्य लिख कर दीजिए तो पिछली सामग्री अवश्य दुहरायें। बच्चे से कहिए कि पिछले शब्दों या वाक्यों को पढ़कर सुनाएँ और जब उसे दिक्कत हो तो आप पढ़कर सुनाइए। साथ ही जब प्रतिदिन नवीन वाक्य लिखने और पुराने वाक्य सुनने के लिए बच्चे के पास बैठें तो वाक्यों को थोड़ा विस्तार देकर उनपर बातचीत करना न भूलें। आप जब बच्चे की लिखाई प्रतिदिन देखेंगे तो पाएँगे कि अलग–अलग अक्षरों में उसे एक बराबर कठिनाई नहीं होती। कुछ अक्षर अधिक अभ्यास माँगते है और उनका अभ्यास जितनी बार चाहे कराया जा सकता है। लक्ष्य यह है

कि जो भी भाषा आप सिखा रहे हैं उसके वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को लिखने और पहचानने में बच्चा प्रवीण हो जाए।

शुरुआती 'पढ़ना' की चरणबद्ध प्रक्रिया को समझना

बिहार के सन्दर्भ में देखें तो बहुत से बच्चों के घर पर प्रिंट सामग्री और किताबों के अनुभव नहीं होते। उन्हें घर पर किसी ने किताब से कहानियाँ पढ़ कर सुनाई नहीं होतीं, न ही उन्हें किताबें उलटने–पुलटने के अवसर मिलते हैं। वे घर पर वयस्कों को पढ़ते और लिखते नहीं देखते। ऐसे में प्रिंट सामग्री या लिखाई उनके लिए स्कूल आने तक एक अजनबी और शायद रहस्यमयी दुनिया बनी रहती है। छपे कागज़ और किताबें उस बच्चे के लिए अर्थहीन और अभेद वस्तुएँ होती हैं।

पढ़ना और लिखना, एक तरह से मौखिक भाषा के पहलुओं तथा सुनकर समझने और बोलकर अपनी बात कह पाने का ही विस्तार है। इस सन्दर्भ में पठन और लेखन के लिए मौखिक भाषा विकास आधारभूत पृष्ठभूमि का कार्य करता है। जब बच्चे कक्षा में कहानियाँ सुनते हैं और बातचीत करते हैं तो उन्हें नए शब्दों का भी पता लगता है और सामान्य–ज्ञान भी बढ़ता है, जो आगे पठन और लेखन के लिए पृष्ठभूमि का काम करता है। जिन बच्चों के घर की भाषा स्कूल की भाषा से काफ़ी अलग होती है, उनके साथ अगर शुरुआत में हर रोज़ मौखिक भाषा विकास की गतिविधियाँ की जाएँ, जैसे–चित्रों पर चर्चा, अनुभवों पर चर्चा, कहानी–कविता–गीत आदि को हाव–भाव से सुनाना और चर्चा करना आदि तो बच्चों को भाषा विकास में बहुत मदद मिलती है। बच्चे धीरे–धीरे स्कूल की औपचारिक भाषा समझने लगते हैं।

शुरुआती अवस्था में बच्चों का पठन विकास निम्नलिखित चरणों में होता हैं। यहाँ इसे क्रमवार दिया गया है, पर बहुत हद तक यह साथ–साथ चलने वाली प्रक्रिया है। सरल रूप से समझने के लिए इन्हें अलग–अलग चरणों के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं–

- उभरता पठन
- डिकोडिंग या परंपरागत पठन की शुरूआत
- प्रारंभिक एवं मध्यवर्ती पठन–स्तर
- प्रवाहपूर्वक पठन

उभरता पठन

इस शुरुआती चरण में बच्चों की प्रिंट की समझ पक्की हो जाती है और बच्चे पढ़ने का अभिनय करने लगते हैं। बच्चे कई बार सुनी हुई कहानी को पढ़ते हैं, कुछ शब्दों को वस्तुओं या तस्वीरों के रूप में पहचानते हैं और उनकी आकृति–संबंधित विशेषताओं को याद रख लेते हैं (लोगोग्राफ़िक पठन)। बच्चे अपना नाम या फिर वस्तुओं के नाम (जैसे–बिस्किट) या दूसरे कई चीजों को इसी तरह पहचानते हैं। इस चरण में बच्चों को अक्षरों या लिपि के बारे में कोई ज्ञान होना ज़रूरी नहीं।

जब बच्चे लिखे हुए शब्दों को अर्थपूर्ण चित्र के रूप में पहचानने लगते है, उसे लोगोग्राफिक पठन कहते हैं। जैसे– पोस्टर, किताबों पर छपे चित्र आदि। अध्यापक को चाहिए की

कविता–कहानियों को पढ़ाते समय इन सामग्री का उपयोग करते हुए विभिन्न गतिविधियाँ करवाते है तो बच्चे धीरे–धीरे कुछ शब्द, चित्र के रूप में पहचानने लगते हैं।

बच्चों को किताब से पढ़कर सुनाने और उन्हें किताब से चित्र देखने, उलटने पलटने के मौके देने से उनमें यह चेतना विकसित होती है कि लिखित सामग्री में अर्थ होता है। अगर कहानी उनकी सुनी हुई हो तो वे चित्र की तरह कुछ शब्दों को पहचानने लगते हैं। यह समझ शब्द पहचानने के लिए मज़बूत आधार बनती है। जिन बच्चों ने घर में किसी को किताबें या अख़बार पढ़ते या फिर लिखकर कोई काम करते हुए नहीं देखा हो, उनके लिए यह जानना आश्चर्यजनक होता है कि बोली गई बात को लिखा जा सकता है। हम लिखते हैं, उसे पढ़ सकते हैं और पढ़ने के साथ–साथ उसका अर्थ भी समझ सकते हैं, हिन्दी बाएँ से दाएँ पढ़ी जाती है। शब्दों के बीच खाली जगह रखी जाती है, एक पृष्ठ पढ़ने के बाद पलटकर दूसरे पृष्ठ को बाएँ और ऊपर से पढ़ना शुरू करते हैं, इत्यादि। साक्षर लोगों को यह बात बहुत साधारण लग सकती है लेकिन किसी अनजान व्यक्ति के लिए यह एक गूढ़ और रहस्य जैसी बात है, जब तक कि इसका खुलासा न किया जाए। हम कह सकते हैं कि उभरता पठन स्तर जन्म से लेकर कक्षा–1 तक चलने वाला चरण है। घर में जब माँ–बाप बच्चों को कहानी की किताबें पढ़कर सुनाते हैं, और जब बच्चे पढ़ने का अभिनय करते हैं, तब वे कई शब्दों से तस्वीरों की तरह परिचित हो जाते हैं। चूँकि हमारे संदर्भों में किताबें देखने, सुनने, उलटने–पुलटने के मौके बच्चों को घर पर बहुत ही कम मिलते हैं, इसलिए कक्षा–1 की शुरुआत में ऐसे खेलों और गतिविधियों से शुरू करना बहुत उपयोगी होता है, जहाँ बच्चे शब्दों और वाक्यों को पढ़ने का अभिनय करें और उन्हें चित्रों की तरह नकल करके लिख लें। सामान्यतः यह माना जाता है कि जब बच्चे वर्ण–मात्राओं को पहचान कर पढ़ने लग जाएँ तभी, बच्चों को पढ़ने के लिए किताबें देनी चाहिए। लेकिन एक शिक्षिका/शिक्षक को यह समझना ज़रूरी है कि उससे पूर्व भी किताबें पढ़ना सीखने में काफ़ी मददगार होती है। बच्चों के साथ एवं बच्चों के लिए पुस्तकें पढ़ना तथा उन्हें पुस्तके देखने एवं पढ़ने का मौका देना, उनमें पढ़ने के प्रति रूचि जाग्रत करता है, उन्हें लिखित सामग्री के प्रति सहज बनाता है, साथ ही उन्हें प्रेरित करता है कि वे जल्द से जल्द पढ़ना सीखें। इस स्तर पर यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि बच्चों को अधिक चित्रों एवं कम शब्दों वाली, शब्दों को दोहराने वाली तथा जिनमें अर्थ का अनुमान लगाना आसान हो– इस प्रकार की किताबें देनी चाहिए।

डिकोडिंग या परंपरागत पठन की शुरुआत

इस चरण में बच्चे शब्द को अक्षरों जैसी छोटी इकाइयों में तोड़ सकते हैं, उससे जुड़ी ध्वनियाँ (बो/त/ल), जोड़कर शब्द का उच्चारण कर सकते हैं। इस अवस्था में पहुँचने से पहले उन्हें किसी छोटे चिह्न (जैसे– वर्ण या अक्षर) और उसकी ध्वनि के बीच में रिश्ते पर पूरी महारत हासिल करनी होगी। यह रिश्ता समझने से भी पहले बच्चे को यह समझ आना चाहिए कि बोलने की भाषा छोटी ध्वनियों से मिलकर बनी है, यहाँ तक कि शब्द भी छोटी–छोटी ध्वनियों में तोड़े जा सकते हैं। केवल तभी बच्चे ध्वनि की छोटी इकाइयों जैसे– स/की/ला आदि को पहचान सकते हैं और इनका चिह्न से मिलान कर सकते हैं।

शब्दों में ध्वनि की लघु इकाइयाँ समझना (जैसे– शुरुआती ध्वनि) ध्वनि और चिह्न के बीच में अटूट रिश्ता पहचान पाना लिखित शब्दों को लघु में तोड़ना और उनकी ध्वनियों को

मिलाकर शब्द उच्चारित करना। इस स्तर पर बच्चों द्वारा सीखे जा चुके वर्ण–मात्रा समूह पर आधारित पठन–कार्ड, डिकोडेबल पाठ पढ़ने को मिले तो डिकोडिंग सीखने और अर्थ समझने का संबंध शुरू से ही बन जाता है। डिकोडिंग क्षमता को मज़बूत करने के लिए, पढ़ने में गति व सही उच्चारण कर पाने के लिए यह प्रभावी माना गया है। इस प्रकार के अभ्यास बच्चों में खुद से नये पाठ पढ़ने का आत्मविश्वास और पढ़ने की प्रेरणा बढ़ाते हैं।

प्रारंभिक एवं मध्यवर्ती पठन स्तर

इस स्तर पर बच्चे शब्दों को तोड़कर व अक्षरों को जोड़कर ज्यादा तेज़ी से डिकोड करने लगते हैं। बहुत–से शब्दों को दृश्य शब्दों की तरह पढ़ने लगते हैं, जो कुछ पढ़ा, उसका अर्थ समझने लगते हैं। हमारे विद्यालयों में कक्षा–1 की समाप्ति व कक्षा–2 की शुरुआत में ज्यादातर बच्चे इस स्तर पर होते हैं। इस स्तर पर बच्चों को उनके स्तर की पठन सामग्री पढ़ने के अवसर मिलते हैं तो शब्द पहचान में तेज़ी आती है और दृश्य शब्दों की संख्या में बढ़ोतरी होती हैं। इस स्तर पर बच्चों को उनके स्तर के अनुसार पठन कार्ड , रीडिंग कार्ड, सरल कहानियों की किताबें, स्तरीकृत कहानियों की किताबें, सरलीकृत पाठ आदि अध्यापक के मार्गदर्शन में, छोटे समूह में और स्वतंत्र रूप से पढ़ने के मौके दिए जाने चाहिए। पढ़ने के काम के साथ पढ़कर समझने की गतिविधियाँ भी आयोजित की जानी चाहिए। दृश्य–शब्दों का विशाल भंडार केवल तभी विकसित होगा जब पठन के बहुत सारे मौके मिलेंगे। जिन बच्चों को आसान पाठों को बार–बार पढ़ने के ढ़ेर सारे अवसर नहीं मिल पाते, उनके पास दृश्य–शब्दों का खज़ाना कम रहता है और वे पठन में प्रवाह हासिल नहीं कर पाते।

प्रवाहपूर्वक पठन

बच्चों के पठन अभ्यास से दृश्य शब्दों की संख्या इतनी बढ़ चुकी होती है कि धीरे–धीरे पढ़ने में प्रवाह विकसित होने लगता है। अब बच्चे कक्षा–2 व 3 के स्तर के लंबे पाठ पढ़ते हैं और पढ़ते वक्त अपनी समझ पर नज़र रखने लगते हैं। यदि कोई बच्चा/पाठक पाठ को सटीक ढंग से (बिना गलतियों के), उपयुक्त गति से और आवश्यक भाव के साथ पढ़ सकता है तो इसे प्रवाहपूर्ण पठन कहते हैं। प्रवाहपूर्ण पठन के लिए ज़रूरी है कि पाठक को शब्द पहचानने के लिए सचेत रूप से बहुत चेष्टा न करनी पड़े। पढ़ने में प्रवाह ही असल में संकेत देता है कि पाठक पढ़ी जा रही सामग्री कितनी अच्छी तरह समझ पाने की क्षमता रखता है।

प्रवाहपूर्ण पठन में तीन मुख्य तत्त्व शामिल होते हैं–

1. प्रवाहपूर्ण पठन के तत्त्व शब्द–पहचान में सटीकता पाठ के शब्द सटीक ढंग से पहचाने की क्षमता।
2. शब्द–पहचान में स्वतःस्फूर्तता पाठ के शब्दों को बहुत कम ध्यान देते हुए और बिना प्रयास किए तेज़ी से डिकोड करने या पहचानने की क्षमता।
3. भाव के साथ पढ़ना भावों को उचित ढंग से प्रयोग करने की क्षमता।

बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों के पठन विकास के लिए बच्चों को एक और शुरूआती समग्र पठन के अनुभव, जैसे– शिक्षक द्वारा बच्चों को कहानी–

कविता की किताबों से पढ़कर सुनाना, बच्चों को किताबें उलटने–पलटने व पढ़ने के मौके देना आदि कक्षा–1 की शुरूआत से ही दिए जाने चाहिए। इससे बच्चों को पढ़ने का वास्तविक उद्देश्य पता चलता है। वे पढ़ने मे आंनद लेने लगते हैं तथा बच्चों को और ज्यादा पढ़ने की प्रेरणा मिलती है। साथ–साथ बच्चों को रोज़ उनके स्तर के अनुसार अन्य पठन सामग्री जैसे–बच्चों द्वारा सीखे गए वर्ण–मात्रा पर आधारित शब्द कार्ड, डिकोडेबल पाठ, सरल रीडिंग कार्डस आदि पढ़ने का अभ्यास भी करवाया जाना चाहिए। इससे वे खुद समझते हुए पढ़ने के लिए ज़रूरी शब्द–पहचान और अर्थ–निर्माण के कौशलों को तेज़ी से सीखते हैं। प्रवाहपूर्ण पठन वास्तव में पठन दक्षता का वह स्तर है, जहाँ पहुँचकर पाठक किसी पाठ को बिना प्रयास किए और सहज ढंग से पढ़ने और फलस्वरूप स्वतःस्फूर्त ढंग से समझने में सक्षम हो जाते हैं। अर्थात् समझते हुए पढ़ना ही प्रवाहपूर्ण पठन का अंतिम लक्ष्य है। प्रारंभिक कक्षाओं में प्रवाहपूर्ण पठन और समझते हुए पढ़ने के बीच ज्यादा गहरा रिश्ता होता है।

इस तरह, स्कूल के शुरुआती 2 सालों में, समझते हुए पढ़ने की क्षमता बनाने के लिए तीव्र और सटीक शब्द–पहचान एक अति महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। जब भी कोई बच्चा बहुत प्रयास के साथ, धीमा पढ़ता है तो समझना काफ़ी कम होता है। पढ़ने में प्रवाह, विशेषकर उपयुक्त भावों के साथ, तभी आता है जब पाठ को साथ–साथ समझा भी जा रहा हो। अच्छे पाठक शब्द पहचानने में प्रवाहपूर्ण और लगभग स्वचालित होते हैं, तब ही अर्थ बूझना, पाठ का सार समझना, कड़ियाँ जोड़ना, निष्कर्ष निकालना, पिछले ज्ञान का प्रयोग करना जैसे कार्यों पर ध्यान दे सकते हैं। उनके मस्तिष्क की कार्य–स्मृति लगभग पूरी तरह समझने पर खर्च होती है।

पढ़ने की प्रक्रिया

पढ़ने की शुरुआत से एक उत्तम पाठक बनने तक पढ़ने की एक लम्बी प्रक्रिया है और इसके विभिन्न सोपान हैं। उनपर चर्चा से पूर्व निम्नलिखित उद्धरण पर विचार करें–

हाल में एक शिक्षिका मुझे हासिए पर रहने वाले बच्चों के साथ अपने काम के बारे में बता रही थी जो या तो पढ़ नहीं पाते थे या पढ़ते नहीं थे। बात–बात में उन्होंने कहा, ''हमारे पास कक्षा में ढेरों किताबें है और सभी उसको इस्तेमाल करते है। पर वे उसे पढ़ते नहीं है। वे सिर्फ पन्नें पलटते हैं और उन्हें देखते हैं। मैं कैसे पढ़ने में उनकी रुचि जगाऊँ ? मैने एक–दो बातें बताई जो शायद उस समय उन्हें ठीक लगी। मुझे बाद में ये बात समझ में आई कि इन बच्चों ने शायद पहले कभी कोई किताब नहीं देखी। उनके लिए सरकारी तौर पर किताबें को देखना, पढ़ने की एक लाजमी और आवश्यक पहली सीढ़ी थी। इससे पहले कि वे बच्चे सोचते कि कोई शब्द या शब्दों का समूह क्या कहता है, उनके लिए शब्दों की सूरत से परिचित हो जाना बेहद जरूरी है। ठीक उसी तरह जिस प्रकार एक बच्चा जो बोलना सीख रहा है उसके लिए बात करने की आवाज से परिचित होना बहुत जरूरी है। अधिकांश बच्चे जब वे पढ़ना शुरू करते है, वर्णो को देखते और उनपर गौर करते है। यही वे अनुभव है जिनकी खानापूर्ति वंचित बच्चों को करनी है।

(जॉन हॉल्ट, साभार पढ़ने की समझ, एनसीईआरटी, नई दिल्ली)

पढ़ने की प्रक्रिया के विभिन्न सोपान

- किताबों को उलटना–पलटना
- चित्र पठन
- अनुमान लगाते हुए पढ़ना
- लिपि पहचानना
- अर्थ समझना
- पढ़कर प्रतिक्रिया देना
- पढ़कर सार प्रस्तुत करना

किताबों को उलटना–पलटना

बच्चों द्वारा किताबों का उलटना–पलटना पढ़ने की प्रक्रिया का प्रथम सोपान है। यह बच्चों में किताबों के प्रति जिज्ञासा एवं पढ़ने की इच्छा को प्रदर्शित करता है। जब कोई बच्चा ऐसा कर रहा होता है तो पूछे जाने पर उसका जवाब यही होता है कि वह किताब को पढ़ रहा है। साथ ही वह इसके संबंध में पूछे गए कुछ प्रश्नों का उत्तर भी दे पाता है। बच्चों के पहुँच में ढ़ेर सारी ऐसी रंग–बिरंगी किताबों का होना उनमें किताबों से लगाव उत्पन्न करेगा। किताबों से लगाव होना पढ़ने की नींव है।

चित्र पठन

किताबों को उलटने–पलटने के क्रम में किताबों के रंग–बिरंगे चित्र बच्चों को सर्वाधिक आकर्षित करते हैं। बच्चे चित्रों को ध्यान से देखते हैं और चित्र के बारे में मन में उठ रहे विभिन्न सवालों –क्या, कौन, कहाँ आदि का जवाब अपने पूर्वज्ञान के आधार पर ढूँढने में लग जाते हैं। चित्र के साथ बच्चों का यह कार्य–कलाप 'चित्र पठन' कहा जाता है। बच्चों से चित्र पठन करवाते हुए उनसे दिए गए चित्र के संबंध में बातचीत कर उनके सुनने, बोलने और लिखने के कौशलों का विकास किया जा सकता है। चित्र पठन करने से बच्चों में कल्पनाशीलता का विकास होता है। पहली कक्षा की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'अंकुर' भाग–1 में चित्र पठन के पर्याप्त अवसर दिए गए हैं। पाठ–1 'हमारा गाँव', पाठ–2 'हमारा शहर', पाठ–4 'आओ खेलें खेल' तथा पाठ–10 'पटना का चिड़ियाघर' चित्रपठन पर ही आधारित पाठ हैं। इनके अतिरिक्त भी पाठ्यपुस्तक में चित्र पठन के अनेक अवसर दिए गए हैं।

अनुमान लगाते हुए पढ़ना

चित्र पठन करने क्रम में बच्चे चित्र के साथ दिए गए गद्यांश को भी पढ़ने का अभिनय करते हैं। उनके द्वारा किए जानेवाले ऐसे पठन प्रायः अनुमान आधारित होते हैं। वर्ग–1 में पाठ्यपुस्तक की बाल कविता को गाने के साथ–साथ कविता की पंक्तियों पर उंगली फिराने की क्रिया भी प्रायः अनुमान आधारित ही होती है। शब्दों के उच्चारण एवं पंक्तियों पर उंगली की स्थिति में साहचर्य का अभाव होता है। कभी–कभी ऐसे शब्दों का भी उच्चारण हो जाता है जो वाक्य में कहीं है ही नहीं।

किन्तु उच्चतर स्तर पर अनुमान लगाने का कौशल पढ़ने की कुंजी है। एक दक्ष पाठक एक शब्द के सारे अक्षरों या एक वाक्य के सारे शब्दों को नहीं देखता है बल्कि पढ़ते समय

उसकी आँखें मुद्रित सामग्री के एक छोटे अंश पर ही गौर करती है। शेष भाग वह अनुमान के आधार पर ग्रहण कर लेता है। अनुमान का आधार होता है—अक्षरों की आकृतियाँ, शब्द एवं उनके अर्थ व संयोजन और पाठक का पूर्वज्ञान। अनुमान लगाते हुए पढ़ना, पढ़ने की एक प्रभावी विधि है।

लिपि पहचानना

पठन प्रक्रिया के इस सोपान में शब्द के लिपियों को पहचानना, उससे जुड़ी ध्वनियों को उच्चारण एवं उसके मानसिक बिंब की रचना करना सम्मिलित है। शब्द के रूप, ध्वनि एवं अर्थ तीनों मिलकर हमारे मस्तिष्क में शब्द का एकचित्र या बिंब का निर्माण करते हैं। मस्तिष्क में शब्द से संबंधित चित्र या बिंब का निर्माण होना हमारे पूर्व अनुभव पर निर्भर करता है। एक दक्ष पाठक शब्द को संपूर्णता में देखता है। इससे मस्तिष्क में उसके चित्र या बिंब का निर्माण अपेक्षाकृत शीघ्रता से होता है। पठन प्रक्रिया के इस सोपान में भी अनुमान के आधार पर मस्तिष्क में शब्दों के चित्रों का निर्माणकर पठन में गतिशीलता लाई जाती है।

मस्तिष्क में शब्दों के चित्रों के निर्माण में दक्षता प्राप्त कर लेने के उपरांत पाठक शब्दों को अक्षरों में तोड़कर उन लिपि चिह्नों की भी पहचान सुगमतापूर्वक कर सकता है।

अर्थ समझना

अर्थ समझना पढ़ने की अनिवार्य शर्त्त है। इसके बिना पढ़ना केवल 'वाचन' है। पढ़ने का अर्थ है— मुद्रित सामग्री से मानसिक बिंबों का निर्माण करने के बाद विचारों के साथ साहचर्य स्थापित कर अपना नजरिया बनाना, मुद्रित सामग्री के साथ संवादकर अपने अनुभवों एवं सैद्धांतिक संरचना के साँचे में उसे ढालना। इस प्रकार पठित सामग्री के अर्थग्रहण का आशय उसके निहितार्थ को समझना है। अर्थग्रहण की दक्षता पाठक के पूर्व अनुभव पर निर्भर करती है। साथ ही यह पाठक के चिन्तन—मनन की भी अपेक्षा रखती है। पठन के क्रम में अर्थग्रहण के साथ—साथ व्याख्या एवं विश्लेषण भी चलती रहती है ताकि पाठक वहीं पहुँचे जहाँ लेखक उसे ले जाना चाहता है।

पढ़कर प्रतिक्रिया देना

मानव चिंतनशील प्राणी है। अतः यह स्वाभाविक है कि मुद्रित सामग्री के अर्थग्रहण के उपरांत अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करे। एक अच्छा पाठक पठन के साथ—साथ विभिन्न दृष्टिकोणों से पठित सामग्री का मूल्यांकन करते हुए उसके प्रति अपना विचार प्रकट करता जाता है। साथ ही साथ उसके मन में कुछ भावनाएँ भी उत्पन्न होतीं हैं जिसे वह अपनी हाव—भाव से प्रदर्शित करता है। किसी साहित्य को पढ़कर उसके रस का अनुभव एक अच्छा पाठक ही कर सकता है और इसके उपरांत वह प्रतिक्रिया भी अवश्य देगा। प्रतिक्रिया से पता चलता है कि पाठक द्वारा किस स्तर तक अर्थग्रहण किया गया है।

एक शिक्षक को बच्चों को प्रतिक्रिया देने हेतु प्रेरित करना चाहिए उनकी प्रतिक्रिया का स्वागत करें। उदाहरण स्वरूप, पहली कक्षा की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'अंकुर' भाग—1 के पाठ—15 'शेर और सियार' बच्चों को पढ़ने को कहा। पढ़ने के बाद बच्चों को उसी कहानी को संक्षेप में सुनाने को कहा साथ ही कहानी के घटनाओं के संबंध में कुछ चर्चा भी की।

बच्चों ने कहानी को अपने–अपने अंदाज में सुनाया। सुनाने के क्रम में उन्होंने अपने रुचि के एवं दैनिक जीवन से जुड़ाववाले बिन्दुओं पर विशेष चर्चा की। किसी ने अपने झूला झूलने के अनुभव को बताया तो किसी ने खेल में आपस में होनेवाली बेईमानी की चर्चा की। अधिकांश बच्चों ने अपने दोस्तों पर बेईमानी करने का इल्जाम लगाया तो कुछ बच्चों ने बेईमानी करने की बात को स्वीकार करने का साहस भी दिखाया। एक बच्चे ने तो अपने–आपको ग्रील गेट में फँस जाने की घटना को भी विस्तारपूर्वक सुनाया।

पढ़कर सार प्रस्तुत करने का तात्पर्य और महत्त्वः–

किसी मुद्रित सामग्री पढ़कर सार प्रस्तुत करना पठन प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण सोपान है। जब किसी मुद्रित सामग्री के पठन के फलस्वरूप उसमें निहित जिस भाव, आदर्श अथवा मूल्य से हम सहमत हों उसे आत्मसात् कर लें, पठन का उद्देश्य तभी पूरा माना जाता है। एक पाठक किसी मुद्रित सामग्री को पढ़कर उसके विषयवस्तु को लेखक की भावना के अनुरूप ग्रहणकर लेता है एवं उसकी भावाभिव्यक्ति संक्षिप्त रूप से कर सकने में समर्थ होता है तो पठन को सफल एवं पाठक को सुविज्ञ समझा जाता है।

एक शिक्षक को बच्चों को पढ़ी गई कविता एवं कहानियों को संक्षिप्त रूप में अपनी भाषा में अभिव्यक्त करने हेतु प्रेरित करना चाहिए। इससे बच्चों में गहन पठन के क्षमता का विकास होगा।

पढ़ने/पठन के प्रकार

पढ़ना कई प्रकार से हो सकता है, कुछ प्रचलित विधियों को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है–

- सस्वर पठन
- मौन पठन
- गहन पठन
- विस्तृत पठन
- शब्द और अर्थ का अनुमान लगाते हुए पढ़ना
- स्किप रीडिंग
- स्कैन रीडिंग

सस्वर पठन

प्राथमिक कक्षाओं में सस्वर वाचन का अधिक महत्व है। पठन की प्रारम्भिक अवस्था में लिपि प्रतीकों को देखकर उन्हें ध्वनि में परिवर्तित करना होता है। लिपि में निबद्ध विचारों को वाणी निकल कर मस्तिष्क तक पहुँचाने का काम करती है। अतः कहा जाता है कि "लिपिबद्ध भाषा को मुखरित करना ही सस्वर वाचन है।" सस्वर पठन वह पठन होता है जिसमे बच्चे ऊँचे स्वर में अपने पाठ को तल्लीनता में पढ़ते है इसका प्रयोग विद्यालय एवं घर में व्यक्तिगत या सामूहिक तौर पर भी किया जाता है। इस पठन का लाभ यह है कि इसमे वर्तनी, उच्चारण कौशल पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस पठन से हमारी दक्षता बढती है और स्वाध्याय की प्रवृति का विकास होता है पठन में दक्ष बनाने के लिए इसका अभ्यास सहायक होता है।

सस्वर वाचन का सम्बन्ध भावोद्रेक, रस–निष्पत्ति एवं आनन्द प्राप्ति से होता है। यदि कविता, भावात्मक गद्य या गद्य–गीत के रस सौन्दर्य का आनन्द लेना हो तो सस्वर वाचन

ही उपयुक्त है। प्रभावपूर्ण सस्वर वाचन के लिए वाचन सम्बन्धी कलात्मक गुणों एवं विशेषताओं (गति, लय, ध्वनि, अनुतान, संहति आदि) पर विशेष ध्यान देना होता है।

मौन पठन

मौन पठन, पठन कौशल सीखने का अंतिम चरण है। लिखित सामग्री को मन ही मन में शांतिपूर्वक बिना उच्चारण किए पढ़ने को मौन पठन कहते है।

मौन पठन के मुख्य रूप से दो प्रयोजन है– पाठ्य सामग्री में निहित विचारों को आत्मसात् करना तथा पठन–गति में तीव्रता लाना। मौन पठन के द्वारा हम गहराई से अर्थग्रहण करते हुए चिन्तन–मनन एवं तर्क शक्ति का विकास करते हैं। उस समय हमारा सारा ध्यान पाठ्यवस्तु में निहित विचार पर ही होता है। अवकाश के क्षणों में मनोरंजक सामग्री को पढ़कर आनंद लेने में मौन पठन बहुत सहायक होता है। पुस्तकालय तथा सार्वजनिक स्थलों पर मौन पठन का महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

मौन पठन के लाभों को देखते हुए शिक्षक के नाते आपको अपने शिक्षार्थियों को यथाशीध्र मौन पठन में प्रवर्तित करना चाहिए। तीसरी कक्षा के अंत तक आप इसे सरलता से आरंभ करा सकते है। फुसफुसाते हुए बोलकर पढ़ना मौन पढ़न नहीं है। अतः आपको शब्दों को फुसफुसाने या बुदबुदाने की प्रकृति पर सावधानीपूर्वक रोक लगाते हुए मौन पठन का पर्याप्त अभ्यास कराना चाहिए। मौन पठन का एक उद्देश्य गति के साथ पढ़ने की क्षमता का विकास करना है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने का एक तरीका यह है कि कक्षा का कोई एक अनुच्छेद या एक से अधिक अनुच्छेद एक निश्चित समय के लिए पढ़ने को दिया जाए। जब किसी अनुच्छेद के मौन पठन का समय समाप्त हो जाए तो आप प्रश्नों के माध्यम से यह जाँच कर सकते है कि शिक्षार्थियों ने क्या सीखा ? मौन पठन के परीक्षण के लिए शिक्षार्थियों से अनुच्छेद का सार या केन्द्रीय भाव पूछा जा सकता है। मौन पठन के समय कक्षा में पूर्ण शांति होनी चाहिए। मौन पठन के विकास और परीक्षण का अन्य तरीका यह है कि पढ़ने से पहले शिक्षार्थियों से एक या दो दिशा–निर्देशक प्रश्न पूछे। इससे शिक्षार्थियों को पढ़ने के प्रयोजन का बोध हो जाएगा और अनुच्छेद को पढ़ते समय यह अहसास रहेगा कि किन बातों पर ध्यान देना है। मौन पठन में उच्चारण अपेक्षित न होने के कारण विरामों की संख्या कम हो जाती है और पठन की गति बढ़ जाती है।

गहन पठन

गहन पठन के द्वारा हम पाठ्य सामग्री के भाव, विचार, भाषा, शैली तथा कलात्मक सौंदर्य की व्याख्या करते हुए उन्हें आत्मसात् करते हैं। गहन पठन द्वारा शिक्षार्थी– पाठ्यवस्तु की भाषा में प्रयुक्त शब्द, पदबंध, वाक्यांश के विशिष्ट अर्थ तथा प्रयोग से परिचित होता है। पाठ में निहित विचार या भाव का सूक्ष्म विश्लेषण करता है, घटनाओं के औचित्य तथा लेखक के मंतव्य को समझकर उनका मूल्यांकन करता है, अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर प्रतिक्रिया करते हुए अपनी स्वतंत्र विचारधारा का निर्माण करता है।

वस्तुतः गहन पठन करते समय शिक्षार्थी भाषा के प्रत्येक अंग का गहन अध्ययन करता है, विचार की एक–एक बारीकी का अवलोकन करता है, भाव की प्रत्येक लहर में डूबता–उतराता है। 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का गहन पठन करनेवाला पाठक कविता में व्यक्त फूल की प्रत्येक चाह को गहराई से समझने का प्रयास करेंगे, जैसे– 'पुष्प किसी

सुन्दरी के गले का हार क्यों नहीं बनना चाहता? वह सम्राटों के शव पर डाला जाना क्यों नहीं चाहता? वह देवताओं के सिर पर चढ़कर गर्व का अनुभव भी क्यों नहीं करना चाहता ? आखिर वह चाहता क्या है? वह देशभक्त वीरों एवं शहीदों को इतना सम्मान क्यों देना चाहता है? इत्यादि।

गहन पठन करनेवाला एक पाठक ऐसे तमाम प्रश्नों के उत्तर तक पहुँचने के साथ–साथ उपर्युक्त सभी पात्रों की कल्पना करेगा एवं बिम्बों को भी समझेगा। वह उन परिस्थितियों व दृश्यों की भी कल्पना करेगा जिनमें उन पात्रों के साथ पुष्प के उपयोग की चर्चा की गई है। साथ ही उन सभी परिस्थितियों के तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त देशभक्ति के भावना से ओत–प्रोत वीरों एवं शहीदों को सम्मान देने के लिए पुष्प की भी प्रशंसा करेगा। उसमें देशभक्ति की भावना का भी संचार होगा। गहन पठन के फलस्वरूप ही कविता के उद्देश्यों की पूर्ति होती है।

व्यापक पठन/विस्तृत पठन

व्यापक पठन को विस्तृत अध्ययन भी कहते है। इसका प्रयोजन है– शब्दावली विस्तार, ज्ञान की परिधि की वृद्धि, पठन रुचि का विकास, मनोरंजन तथा तीव्र गति से पढ़ने की दक्षता का विकास। भाषा पर अधिकार करने तथा जीवन और जगत के प्रति दृष्टिकोण को व्यापक बनाने के लिए व्यापक पठन आवश्यक है। इसके द्वारा हमारे मौन पठन की दक्षता बढ़ती है जिससे स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास होता है। अध्ययन में शिक्षार्थी को दक्ष बनाने के लिए व्यापक पठन का अभ्यास सहायक होता है।

शब्द और अर्थ का अनुमान लगाते हुए पठन

यह पढ़ने की प्रक्रिया का हिस्सा है। बच्चा प्रिंट के प्रति सजग एवं उत्सुक होता है और अनुमान लगाते हुए पढ़ने का प्रयास करता है। साथ ही अर्थ प्राप्त करने की कोशिश करता है। यह वह पठन है जहाँ बच्चे अक्षरों की एकाकी पहचान भले ही न कर पाएँ लेकिन चित्र/शब्द आदि से संबंध जोड़ते हुए अपने स्तर पर अर्थ का निर्माण करते है। यहाँ पर यह बात अत्यंत महत्वपूर्ण है कि पढ़ने का संबंध केवल शब्दों या वाक्यों से नहीं होता बल्कि चित्र आदि को पढ़ना भी इसमें शामिल होता है, क्योंकि यह अंततः अर्थ से जुड़ता है।

स्किप रीडिंग

जब कोई पाठक पढ़ रहा होता है तब वह किसी वाक्य के सभी शब्दों को नहीं पढ़ता है। वह वाक्य के एक–दो शब्दों को पढ़कर पूरे वाक्य को समझ लेता है। इस प्रकार वह पढ़ते हुए आगे बढ़ता है। इस प्रकार का रीडिंग स्किप रीडिंग कहलाता है।

उपन्यास, नाटक एवं बड़ी कहानी आदि पढ़ते समय पाठक स्किप रीडिंग करते है। वह सरसरी निगाहों से शब्दों को देखते हुए आगे बढ़ जाते है। स्किप रीडिंग का उद्देश्य उस लिखित सामग्री का सामान्य अर्थ प्राप्त करना होता है।

स्कैन रीडिंग

किसी सूचनापट्ट, शादी–कार्ड या इसी तरह के अन्य लिखित सामग्री पर अंकित सूचना को सरसरी निगाहों से पढ़ने की क्रिया स्कैन रीडिंग कहलाता है। इसमें सम्पूर्ण लिखित सामग्री को न पढ़कर महत्त्वपूर्ण सूचनाओं पर विशेष नजर दौड़ाई जाती है।

पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीके और उनकी समीक्षात्मक समझ

पढ़ना सिखाने के लिए अनेक विधियाँ है जिनमें से वर्ण विधि, शब्द विधि, वाक्य विधि इत्यादि प्रमुख है। कुछ विद्वानों के अनुसार बच्चे को अक्षरों का ज्ञान वाक्यों से आरम्भ करना उचित है, परन्तु कुछ के अनुसार शब्दों से किया जाए। पढ़ना सिखाने के निम्नलिखित विधियाँ प्रचलित हैः–

- वर्ण विधि
- शब्द विधि
- वाक्य–शिक्षण विधि
- संदर्भ आधारित उपागम

वर्ण विधि

अनिता प्रा० वि० काजीपुर की शिक्षिका है। वह अपने विद्यालय में कई दिनों से वर्णमाला सिखा रही है। वह श्यामपट्ट पर क, ख, ग, घ, एवं ङ लिख देती है एवं बच्चों को दुहराने व देखकर लिखने के लिए कहती है। अत्यधिक प्रयास के बावजूद अनेक बच्चे–बच्चियाँ सीख नहीं पा रहे हैं। अनिता परेशान है कि इतना मेहनत करने पर भी परिणाम उत्साहवर्द्धक नहीं है। ऐसा क्यों आइए इसपर विचार करें–

यह एक अत्यत प्राचीन विधि है। इसमें बच्चे क्रमानुसार वर्णमाला के भिन्न–भिन्न अक्षरों का ज्ञान प्राप्त करते है। जब बच्चे वर्ण का ज्ञान भली प्रकार कर लेते है, तब उन्हे शब्द बनाने के लिए सिखाया जाता है। उदाहरण के लिए ट, मा, ट, र = टमाटर।

अ– आ– ट–

इसी प्रकार प, न, घ, ट = पनघट। कुछ विद्वान इस विधि को अमनोवैज्ञानिक बताते है क्योंकि इसमें अज्ञात से ज्ञात को बताया जाता है। बच्चे वर्ण को नहीं जानते परन्तु वर्ण से बननेवाले शब्दों से परिचित होते हैं। चूँकि वर्ण का स्वतंत्र रूप से कोई अर्थ नहीं होता है। इसलिए यह बच्चे के लिए अरुचिकर होता है। बच्चे एकदम वर्णमाला को रटने में घबराते हैं क्योंकि रटना एक नीरस कार्य है। यदि वह मनोयोग से क, ख, ग, घ, ङ जैसे– वर्ण सीख लेता है तो भी इससे बहुत कम सार्थक शब्द बन पाते है।

विचारणीय प्रश्न– 3

3.1. अनिता को अपेक्षित परिणाम क्यों नहीं मिल पा रहा है?
3.2. आपके विचार से अनिता का पढ़ना सिखाने का तरीका कैसा है?
3.3. आप अनिता के जगह होते तो क्या करते?

शब्द विधि

जीतेन्द्र कन्या प्रा० वि० मई के शिक्षक हैं। वह वर्ग 1 के नामित शिक्षक हैं। भाषा की कक्षा में वे पूरे मनोयोग से पढ़ा रहे हैं। बच्चों को सबसे पहले चित्र दिखाकर पहचान करवाते हैं। चित्र के बाद उससे संबंधित शब्द कार्ड दिखाते हैं। चित्र एवं उससे संबंधित शब्द से परिचय कराने के बाद शब्द में आए अक्षरों को अलग–अलग कर बताते हैं। पुनः उन अक्षरों से बच्चों को उलट–पलटकर शब्द बनाने के लिए कहते हैं। उनके पढ़ाने का तरीका इस प्रकार है–

शब्द विधि में प्रारम्भ में ही बच्चे को शब्दों से परिचय कराया जाता है। शब्दों का ज्ञान कराने के लिए परिचित चित्रों को माध्यम बनाया जाता है। यह विधि बड़ी ही आकर्षक और रोचक है। अनेकों बार उस चित्र और उससे संबंधित शब्द को देखने के बाद उस शब्द का चित्र बच्चे के मानस पटल पर गहरा अंकित हो जाता है। जब–जब वह उस वस्तु का चित्र स्मरण करता है, तब–तब उसे वह शब्द भी चित्र की तरह याद आ जाता है। चूँकि इस विधि में ज्ञात की सहायता से अज्ञात को बताया जाता है अतः इस विधि को मनोवैज्ञानिक माना जाता है।

इस शब्द चित्र में कई वर्ण होते है, जैसे– 'शलगम' में 'श',ल, ग तथा म । इन सभी वर्णो से वह भली भाँति परिचित हो जाता है। उदाहरण के लिए– बच्चे को नल का चित्र दिखाया जाएगा और उन्हें नल पढ़ना सिखाकर 'न, ल' अक्षरों का ज्ञान कराया जाएगा। शब्द संदर्भ से जुड़े होते है, अर्थपूर्ण होते है। इस कारण बच्चे सीख जाते हैं। सीखे हुए वर्णों से नए–नए शब्द बनवाए जाते हैं, जैसे- कल, मल आदि।

विचारणीय प्रश्न– 4

4.1. आपकी दृष्टि में जीतेन्द्र का तरीका कैसा है? तर्कपूर्ण उत्तर दें।
4.2. जीतेन्द्र एवं अनिता के तरीकों में किसका पढ़ना सिखाने का तरीका अच्छा है और क्यों?

वाक्य–शिक्षण विधि

राकेश म० वि० मकनपुर के शिक्षक हैं। वे अपनी कक्षा में बच्चों को जब पढ़ना सिखाते हैं तब बच्चों के द्वारा बोले गए वाक्य को श्यामपट्ट पर लिख देते हैं। जैसे-
घर चल। गगन घर चल। गगन घर चलकर पढ़।
वाक्य अंकित करने के बाद वह खुद बोलते हैं एवं बच्चों को दुहराने के लिए कहते हैं। इसके बाद कोई एक बच्चा आकर वाक्य को बोलता है और अन्य बच्चे दुहराते हैं। धीरे–धीरे बच्चे उस वाक्य को पढ़ने लगते हैं एवं उनके अक्षरों की पहचान करने लगते

हैं। राकेश के प्रयास का अच्छा परिणाम मिलता है।

उल्लिखित उदाहरण में पढ़ाने का क्रम वाक्य से आरम्भ किया गया है। मनोवैज्ञानिकों की यह मान्यता है कि बच्चे अपने मनोभावों को न तो अक्षरों द्वारा प्रकट कर सकते हैं और न वह अक्षरों को जोड़–तोड़ कर शब्दों का निर्माण ही कर सकते हैं। बच्चे अपने मनोभावों को वाक्यों में ही प्रकट कर सकते हैं। अतः इस विधि के समर्थकों के अनुसार पढ़ना सिखाने के लिए वाक्य शिक्षण विधि को ही आधार बनाना चाहिए। इस विधि में सार्थक वाक्यों के माध्यम से ही पढ़ना सिखाया जाता है। वाक्य संदर्भ से जुड़कर अर्थ प्रदान करते है। जैसे– लाठी का हम विभिन्न संदर्भों में अलग–अलग अर्थ पाते हैं–

वह उसके बुढ़ापे की लाठी है।
वह लाठी टेककर जाता है।
जिसकी लाठी उसकी भैंस।

पहले वाक्य में लाठी का अभिप्राय सहारा, दूसरे में उपकरण एवं तीसरे में सामर्थ्य के रूप में है।

विचारणीय प्रश्न– 5

5.1. वाक्य–शिक्षण विधि की खूबियाँ/कमियाँ बताएँ।

5.2. वाक्य–शिक्षण विधि, शब्द–शिक्षण विधि से किस प्रकार भिन्न है?

अर्थपूर्ण संदर्भ आधारित उपागम–

पढ़ना सिखाने के लिए जब परिचित संदर्भ का सहारा लिया जाता है तो उसे संदर्भ आधारित शिक्षण विधि कहा जाता है। अलग–अलग क्षेत्र विशेष के लिए परिचित संदर्भ अलग–अलग हो सकते हैं। साथ ही अलग–अलग उम्र के शिक्षार्थियों के लिए रोचक संदर्भ भी अलग–अलग हो सकते हैं।

चालाक चीकू

चार बिल्लियों ने मिलकर चीकू चूहे को पकड़ा।
मैं खाऊँगी, मैं खाऊँगी,हुआ सभी में झगड़ा।।
बोला चीकू अरे मौसियों! आपस में मत झगड़ों।
दूर नीम का पेड़ खड़ा है, जाकर उसको पकड़ो।।

जो भी उसको छूकर सबसे पहले आ जाएगी।
बिना किसी को हिस्सा बाँटे वही मुझे खा जाएगी।।
मूर्ख बिल्लियाँ समझ न पायीं, सरपट दौड़ लगाई।
बिल के अन्दर भागा चीकू, अपनी जान बचाई।।

हिन्दी की कक्षा 1 की पाठ्यपुस्तक अंकुर भाग–1 को दिलीप अपने कक्षा में बच्चों को पढ़ाते हैं। सबसे पहले वह अपने वर्ग के बच्चों के साथ सस्वर गायन करते हैं। बच्चे आनन्दित होकर कविता की पंक्तियों को गाते हैं। जिस बच्चे को कविता की पंक्तियाँ याद हैं वह आगे–आगे गाता है, अन्य बच्चे उसे दुहराते हैं। तत्पश्चात शिक्षक पाठ में आए परिचित संदर्भों से जुड़े हुए कई सवाल, जैसे–

चित्र में दिखनेवाले जानवरों के बारे में बताओ–

(क) चूहा (ख) बिल्ली

बिल्ली क्या–क्या खाती है?
नीम का पेड़ हमारे किस काम आता है?
चूहा क्या–क्या खाता है?
चूहे को हमलोग कहाँ–कहाँ देखते हैं?
बिल्ली क्या–क्या खाती है?

इत्यादि के माध्यम से बातचीत करते हैं। बच्चे खुलकर अपनी बातों को रखते हैं। धीरे–धीरे बच्चे अनुमान के आधार पर पढ़ने लगते हैं। इसके बाद शिक्षक चित्र एवं उससे संबंधित शब्द कार्ड के माध्यम से पहचान करवाते हैं। धीरे–धीरे बच्चे अनुमान के आधार पर पढ़ने लगते हैं। इस तरह बच्चे पढ़ना सीख जाते हैं।

दिलीप के द्वारा अपनाए गए तरीके पर विचार किया जा सकता हैं– यहाँ दिलीप के द्वारा कक्षा 1 के शिक्षार्थियों के लिए कुछ परिचित संदर्भों की सहायता भाषा शिक्षण का कार्य किया जा रहा है। विभिन्न क्षेत्र एवं विभिन्न आयु वर्ग हेतु उचित संदर्भ की सहायता से बच्चे को पढ़ने हेतु प्रेरित किया जा सकता है। यह संदर्भ चित्र, कविता, परिस्थिति, घटना, दृश्य आदि हो सकते हैं। किसी कविता की एक पंक्ति के शब्दों को अलग कार्ड पर लिखकर, मिलाने, पहचानने की गतिविधियाँ बनाई जा सकती हैं। जिनमें शब्दों की तुकबंदी करके किसी अक्षर विशेष से प्रारंभ होने वाले शब्दों को इकट्ठा करके शब्दों की ध्वनियों को तोड़कर पढ़ना सीखने–सिखाने की शुरुआत की जा सकती है।

विचारणीय प्रश्न– 6

6.1. आप दिलीप की जगह होते तो 'चालाक चीकू' पाठ किस तरह पढ़ाते?

6.2. 'संदर्भ आधारित उपागम पढ़ना सिखाने का सर्वोत्तम तरीका है।' क्या आप इस विचार से सहमत हैं? हाँ या नहीं, सकारण बताएँ।

6.3. आपके विचार से पढ़ना सिखाने का कौन–सा तरीका सबसे उपयुक्त है?

6.4. आप अपने पड़ोस के विद्यालय में शिक्षक को बच्चों को पढ़ाते देखे होंगे। वे कौन–सी विधि अपना रहे थे?

6.5. आम तौर पर कक्षा 1 एवं 2 में बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए किन तरीकों का प्रयोग किया जाता है?

6.6. पढ़ना सिखाने की अन्य विधियाँ क्या–क्या हो सकती हैं?

पढ़ना सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बाल साहित्य की भूमिका

प्रारंभिक कक्षाओं में लिखित सामग्री से समृद्ध (प्रिंट समृद्ध) माहौल की रचना पढ़ने लिखने के कई मौके देकर विकसित की जा सकती है। पढ़ने–लिखने के मौके हम उन्हें कहेंगे जहाँ वे विविध प्रकार की सामग्री से परिचित होंगे तथा उन्हें पढ़ने की चाह और कोशिश होगी। ये सामग्री कहानी, कविता, गीत, कक्षा टाइम–टेबल कुछ भी हो सकता है। ये सामग्री खासतौर पर उपयोगी है क्योकि ये बच्चों की एक समृद्ध और अर्थपूर्ण लिखित भाषा से जुड़ने के सार्थक अनुभव प्रदान करती है। साक्षरता के सार्थक उपयोगी अनुभव से बच्चों का जब बार–बार वास्ता पड़ता है तो उसकी लिखित भाषा को लेकर उनकी समझ बनती है। उसे लिखित भाषा की उपयोगिता की समझ में आती है। इसी प्रकार जब हम प्रत्यक्ष रूप से वर्ण या ध्वनि से जुड़े निर्देश देते है तो हम भाषा के रूप को लेकर बच्चों की समझ को विकसित करते है ।

इसमे बच्चों द्वारा बनाई गई किताबें, कविता की किताबें' विषय विशेष की किताबें, शब्दकोश और इनसाक्लोपीडिया, डायरी, बाल पत्र–पत्रिकाएँ, फोटो अलबम, गीतों का संग्रह आदि कक्षा में एक ऐसा कोना हो जहाँ इस प्रकार के अच्छे बाल–साहित्य बच्चों के पढ़ने के लिए रखे गए हों। इन पुस्तकों का इस्तेमाल बच्चों को कहानियाँ पढ़कर सुनाने के लिए भी किया जा सकता है।

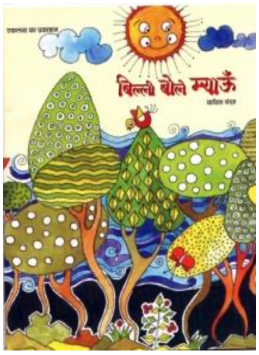

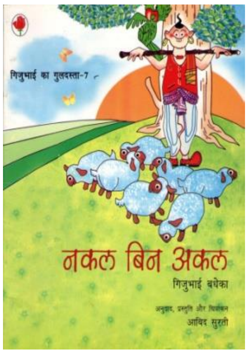

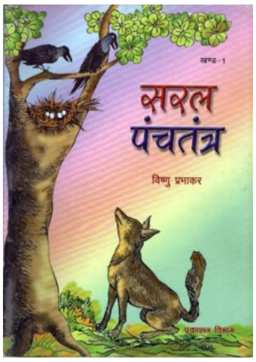

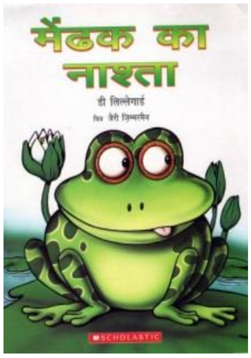

पढ़ना सीखने–सिखाने में बाल साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आइए विचार करें एक ऐसे प्रयास पर जिसमें प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे–बच्चियों को पढ़ना सीखने–सिखाने हेतु कुछेक इस प्रकार की मुद्रित सामग्रियों का प्रयोग किया हो, जैसे– समाचार पत्रों में छपी समाचार, निविदा–सूचना, रोजगार–सूचना, शेयर बाजार–सूचना इत्यादि की कतरनें। इस प्रयास के फलस्वरूप क्या बच्चे–बच्चियाँ पढ़ना सीख पाएँगे ? क्या ऐसी सामग्रियों का जुड़ाव बच्चों की दुनिया से है? क्या इनके पठन से उनके समक्ष कोई ठोस संदर्भ का

निर्माण होगा ? अगर नहीं तो क्या इस तरह की सामग्री बच्चे पढ़ना पसंद करेंगें? अगर रुचि के साथ इन सामग्रियों को पढ़ेंगे ही नहीं तो पढ़ना कैसे सीख पाएँगे? पुनः विचार करें कि बच्चों को कैसी सामग्री दी जाए जिसे वे उत्साहपूर्वक रुचि के साथ पढ़ें।

याद करें हमलोग अपना बचपन जब उम्र 7–8 वर्ष की रही होगी। कॉमिक्स (बाल साहित्य) पढ़ने की दीवानगी हद पार कर जाती थी। कोई नई कॉमिक्स आई नहीं कि उसे हर हाल में पढ़ लेने की होड़ दोस्तों के बीच मच जाती थी।एक बार हाथ लगी नहीं कि उसे आद्योपांत पढ़े बिना चैन नहीं मिलता था। हमारे माता–पिता, अभिभावकगण इसे समय और पैसे की बर्बादी ही समझते थे। अतः प्रायः कॉमिक्स खरीदने से परहेज ही करते थे। अतः अपने यार–दोस्तों के साथ कॉमिक्स की लेन–देन हुआ करती थी। कॉमिक्स–लाइब्रेरी की सदस्यता प्राप्त की जाती थी। वे क्यों इतने अच्छे लगते थे आखिर क्या हुआ करता था उन रंग–बिरंगी पत्रिकाओं में ? चंदामामा, नंदन, चंपक आदि पत्रिकाओं की कहानियों में हमलोग खोए रहते थे। चाचा चौधरी, साबू, छोटू–लम्बू, मोटू–पतलू, राम–रहीम, विक्रम–बेताल, तेनालीराम, गोनू झा, अकबर–बीरबल, 'अमर चित्र कथा' के विभिन्न पात्र, एक लम्बी सूची है उन पात्रों की जो अपनी सूझ–बूझ, बहादुरी, साहस, हास–परिहास इत्यादि से हमारा मनोरंजन करते थे। ये बाल साहित्य क्या सिर्फ मनोरंजन करते थे या इससे बढ़कर कुछ और ? जब शिक्षक के नजरिए से देखेंगे तो महसूस करेंगे कि इनसे न केवल हमारा मनोरंजन हुआ बल्कि हमारी भाषायीक्षमता के विकास में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। जितनी अधिक सामग्री हम पढ़े उतना ही हमारे पढ़ने का अभ्यास हुआ, हमारी भाषायीक्षमता बढ़ी, हमारी जानकारी बढ़ी और हममें मानवीय गुणों का भी विकास हुआ।

जब बाल साहित्य में इतना आकर्षण होता है तो क्या बच्चों की पाठ्यपुस्तकों में बाल साहित्य नहीं होता है जो बच्चों की इसमें रुचि नहीं होती? ऐसी बात नहीं है। बच्चों की पाठ्यपुस्तकों में बाल साहित्य होता तो है लेकिन इसकी मात्रा कम होती है। उसमें भी सीख, उपदेश, नैतिक शिक्षा आदि का दबाव जबरन डाला गया होता है। कविता–कहानी पढ़ने का आनन्द बच्चे लिये नहीं कि प्रश्नों की झड़ी लग जाती है। बच्चे प्रश्नों का जवाब दे सके इस दृष्टिकोण से पढ़ना–पढ़ना होता है, जिसमें आनन्द एवं मनोरंजन का सर्वथा अभाव होता है। साथ ही तीव्र गति से बदल रही बच्चों की दुनिया के अनुरूप उसमें निरंतर परिवर्तन नहीं हो पाता है। पाठ्यपुस्तकों की जो पुरातन परंपरा है उसके कारण वर्तमान संदर्भ, मूल्य, रीति–रिवाज, आदर्श, व्यावहारिकता, सामाजिक–आर्थिक–शैक्षिक विषमताएँ इत्यादि का समावेश पाठ्यपुस्तकों में नहीं हो पाता। जबकि आज के बच्चे तीव्र परिवर्तन के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहें है। पाठ्यपुस्तकें बच्चों की आवश्यकताओं व अपेक्षाओं की पूर्ति नहीं कर पातीं। फलतः पाठ्यपुस्तकों में बच्चों की रुचि अपेक्षाकृत कम होती है।

उपर्युक्त स्थिति में पढ़ना सीखने–सिखाने हेतु पाठ्यपुस्तकों से इतर बाल साहित्य की आवश्यकता है। बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों के पढ़ना सीखने–सिखाने के लिए यह आवश्यक है कि पढ़ने की शुरुआत व इसकी प्रक्रिया, बच्चों की रुचि एवं बाल साहित्य में तालमेल हो। इस हेतु कुछ बिन्दु विचारणीय हैं –

- बच्चों द्वारा किताबों का उलटना–पलटना पढ़ने की प्रक्रिया का प्रथम सोपान है। अतः किताबें बच्चों को अपनी ओर आकर्षित कर सके इसके लिए किताबों को रंग–बिरंगी होना चाहिए।

- किताबों में काफी मात्रा में चित्र हों।ये चित्र उनके परिचित परिवेश, पशु–पक्षी, फल–फूल, खेल–खिलौने आदि के हों।
- चित्र यथासंभव गत्यात्मक हों जिससे बच्चों को कुछ घटित होने का अहसास हो।
- चित्रात्मक कहानियाँ एवं कविताएँ अधिक मात्रा में हों।
- प्रकृति, उत्सव, खेल आदि क्षेत्रों से जुड़ी गेय, तुकांत एवं छोटी–छोटी कविताएँ हो जिन्हें बच्चे सुनते–सुनते गाने लगें।
- गद्यांश एवं उससे जुड़े चित्र में अधिकाधिक जुड़ाव हो ताकि अनुमान लगाकर भी बच्चे कहानी को समझ सकें और आनन्द उठा सकें।
- बच्चे कल्पनाशील होते हैं। अतः उनको कल्पनाशील होने के अवसर भी चित्र एवं कविता–कहानियों के माध्यम से उपलब्ध कराएँ जाएँ।
- आकर्षक, मनोरंजक एवं रोचक होना बाल साहित्य की महत्वपूर्ण शर्त है। इसके बिना बच्चों का लगाव संभव नहीं है। किताबों से लगाव होना पढ़ने की नींव है।
- बच्चों को स्वयं को अभिव्यक्त करने, आत्मपरख व स्वमूल्यांकन करने का भी अवसर उपलब्ध हो।
- अक्षरों का आकार बड़ा हो ताकि बच्चे लिपि चिह्नों को सुगमतापूर्वक पहचान सकें और मिलते–जुलते लिपि चिह्नों के बीच अन्तर कर सकें।
- आत्मविश्वास, स्वाभिमान, देशप्रेम, शिष्टाचार, नैतिकता, आदि मानवीय गुणों को कहानी के पात्रों के माध्यम से प्रेषित किया जाए न कि उपदेश और सूत्रवाक्यों के द्वारा।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहन एवं अंधविश्वास व रूढ़िवाद का विरोध भी कहानी के पात्रों के माध्यम से प्रेषित किया जाए न कि उपदेश और सूत्रवाक्यों के द्वारा।
- क्रियाशीलता, संवेदनशीलता, सृजनशीलता आदि के विकास के अवसर कविता–कहानियों के माध्यम से उपलब्ध कराएँ जाएँ।
- वर्तमान संदर्भ, मूल्य, रीति–रिवाज, आदर्श, व्यावहारिकता, सामाजिक–आर्थिक–शैक्षिक विषमताएँ आदि की समझ कविता–कहानियों के माध्यम से उपलब्ध कराएँ जाएँ।

उपर्युक्त बिन्दुओं से परिपूर्ण बाल साहित्य बच्चों में पुस्तकों के प्रति प्रेम उत्पन्न करेगा जो कालान्तर में पाठ्यपुस्तकों एवं उनके बीच की दूरी को भी पाटेगा। अतः बच्चों में पढ़ने की ललक जगाने एवं पढ़ना सिखाने में बाल साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त बाल साहित्य की उपलब्धता हेतु विद्यालयों में पुस्तकालय की व्यवस्था होनी चाहिए। इस दिशा में विभागीय स्तर से काफी पहले से प्रयास किया जा रहा है। वर्ष 2008–09 में 'वाचन उन्नयन कार्यक्रम' के अन्तर्गत प्रत्येक विद्यालय में भारी मात्रा में ऐसी ही रंग–बिरंगी पत्रिकाओं एवं बाल साहित्य की उपलब्धता सुनिश्चित कराई गई थी। वर्ष 2009–10 में भी इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत पूर्व स्थापित पुस्तकालय को समृद्ध करने का प्रयास किया गया। शिक्षण अधिगम सामग्री अनुदान की राशि से भी पुस्तक क्रय करने का प्रावधान किया गया। इन तमाम प्रयासों के परिणामस्वरूप विद्यालयों में पुस्तकालय की स्थापना तो हो गई किन्तु अधिकांश विद्यालयों में ये पुस्तके आलमारी की शोभा बढ़ा रहीं होती हैं। बच्चे इनका उपयोग नहीं कर पाते हैं। विद्यालयों की पुस्तकालय में बाल साहित्य की पुस्तकों की रखने की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि वे बच्चों की पहुँच में हों। बच्चों को अपनी इच्छानुसार इन्हें छूने, लेने एवं पढ़ने की पूरी आजादी हो। बच्चों के

भाषायीविकास एवं इस माध्यम से मानवीय विकास के लिए उन्हें बाल साहित्य उपलब्ध कराना और उसे पढ़ने का उचित वातावरण देना हमारी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

भाषा सीखने के संकेतकः– पढ़ने के संदर्भ में

कक्षा एक

- पढ़ते समय चित्र के आधार पर अर्थ का अनुमान लगाने की कोशिश करते हैं, जैसे– हाथी बहुत खुश है और शेर को गुस्सा आ रहा है।
- आसपास की वस्तुओं पर लिखी या छपी हुई बातों या चित्रों के अर्थ एवं उद्देश्य का अनुमान लगाते हैं, (वस्तुएँ, जैसे– बिस्कुट पैकेट, फिल्म पोस्टर, साइन–बोर्ड इत्यादि)
- पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनते हैं, जैसे– अरे, मेरी लालू पीलू वाली किताब कहाँ है? मैं तो वही पढ़ूँगी।
- चित्रों को ध्यान से देखकर उनके बारे में बताते हैं।
- कहानी–कविताओं आदि में लिपि चिह्नों, शब्दों, वाक्यों आदि को देखकर तथा उनकी ध्वनियों को सुनकर उनको पहचानते हैं।
- लिखी या छपी हुई सामग्री में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों को पहचानते हैं। (जैसे– मेरा नाम सोहन है, मैं 'में' या 'सोहन' पर उँगली रखना)
- हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनियों को पहचानते हैं।

कक्षा दो

- रचनाओं को आनंद लेकर पढ़ते हैं।
- चित्र और संदर्भ के आधार पर अर्थ का अनुमान लगाते हैं, जैसे– अब वह लड़की ज़रूर फिर से स्कूल जाना शुरू करेगी।
- अपनी पाठ्य–पुस्तक से इतर सामग्री (पोस्टर्स, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को पढ़कर समझते हैं।
- देखी/पढ़ी/लिखी सामग्री पर बातचीत करते हैं, जैसे– ऊँट चला भई ऊँट चला कविता खूब अच्छी है। ऊँट का चित्र भी देखो कितना सुन्दर है।
- पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ते हैं।
- पढ़ी गई कविता या कहानी के बारे में पूछे गए प्रश्नों का मौखिक जवाब देते हैं।
- पढ़ी या सुनी हुई रचनाओं के शीर्षक, विषयवस्तु, घटनाओं, पात्रों आदि के बारे में बातचीत तथा सवाल–जवाब करना।
- अलग–अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों के संदर्भ को समझकर अर्थ लगाते हैं।
- समझ के साथ पढ़ना, सहपाठियों से बातचीत करना तथा पूछे गए सवालों के जवाब देते हैं।

कक्षा तीन

- रुचिकर रचनाओं को आनंद लेकर पढ़ते हैं।
- चित्र और संदर्भ के आधार पर अर्थ का अनुमान लगाते हैं।
- अलग–अलग तरह की रचनाओं को समझते हुए पढ़ने की कोशिश करते हैं।

- अपनी पाठ्य–पुस्तक से इतर सामग्री (अखबार, बालपत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को पढ़कर समझते हैं।
- देखी/पढ़ी/लिखित सामग्री पर अपनी राय देते हैं। जैसे– मुझे यह कहानी अच्छी नहीं लगी।
- पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ते हैं।
- कविता या कहानी पढ़कर उसके बारे में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर लिखते हैं।
- आस–पास मौजूद परिस्थितियों के बारे में सवाल करते हैं, जैसे– मेरे घर के पास कूड़ा क्यों है ?
- पाठ्य–पुस्तक के विभिन्न पाठों में आए संवेदनशील मुद्दों पर प्रतिक्रिया देते हैं।

कक्षा चार

- पढ़ने के प्रति उत्सुक रहते हैं, जैसे– 'मिठाई' कहानी तो मैं भी पढ़ूँगा।
- रचनाओं को आनंद के साथ पढ़ते हैं, जैसे– पढ़ते समय रचना के अनुरूप भाव आ रहे हैं।
- चित्र और संदर्भ के आधार पर अर्थ का अनुमान लगाते हैं ।
- विभिन्न प्रकार की (हास्य, साहसिक आदि) कहानियों, कविताओं आदि रचनाओं को समझते हुए पढ़ते हैं।
- पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ते हैं।
- अपनी पाठ्य–पुस्तक से इतर सामग्री (बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को पढ़कर समझते हैं।
- अपनी पसंद के चित्रों, कहानियों, कविताओं (परिवेश से जुड़ी) आदि की कतरनों को चिपकाकर स्क्रैप बुक तैयार करते हैं।

कक्षा पाँच

- इस स्तर पर वह उत्साही पाठक होते है, जैसे– चल अबकी बार पुस्तक मेले से मिलजुल कर किताबें खरीदें।
- रचनाओं को आनंद तथा आत्मविश्वास के साथ पढ़ते हैं, जैसे– पढ़ने के अपने अनुभवों को साथियों के साथ बाँटता है।
- चित्र और संदर्भ के आधार पर अर्थ का अनुमान लगाने के साथ ही काल्पनिक पात्रों को भी जोड़ते हैं।
- विभिन्न प्रकार की (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि) कहानियों, कविताओं आदि रचनाओं को समझते उन पर पर स्वतंत्र टिप्पणी करते हैं।
- पुस्तक कोना/पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ते हैं।
- विभिन्न उद्देश्यों (सूचना, जानकारी आदि प्राप्त करने) के लिए पढ़ते हैं।
- अपनी पाठ्य–पुस्तक से इतर सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स इत्यादि) को पढ़कर समझते हैं।
- अपरिचित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजते हैं।
- अपनी पसंद के चित्रों, कहानियों, कविताओं (परिवेश से जुड़ी) आदि की कतरनों को चिपकाकर स्क्रैप बुक तैयार करते हैं।

उल्लिखित उदाहरणों से स्पष्ट है कि ये भाषायीसंप्राप्ति कई स्तरों पर देखे जाते है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ये अलग–अलग अवस्थाओं में विविध दक्षता एवं भाव–प्रबलता के साथ लक्षित होता है। अतः सतत् आकलन एवं मूल्यांकन के समय विभिन्न स्तरों पर उक्त विविधता को ध्यान में रखना होगा।

समेकन

बच्चों में जन्म के साथ ही सुनने तथा बोलने की क्षमता का विकास स्वाभाविक रूप से शुरू हो जाता है। सुनना एवं बोलना मानव का सहजात गुण है, अतः इसके लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं पड़ती। किन्तु पढ़ने एवं लिखने की क्षमता के विकास हेतु प्रायः तमाम विद्यालयीय व्यवस्था की आवश्यकता पड़ती है। जहाँ तक पढ़ने का सवाल है समझ के साथ पढ़ना ही पढ़ना है। पढ़ना एक एकाकी प्रक्रिया नहीं है। इसमें अक्षरों की आकृतियाँ और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ, वाक्य विन्यास, शब्दों और वाक्यों के अर्थ और साथ ही अनुमान लगाने का कौशल शामिल है। पढ़ने में लिखी हुई जानकारियों या संकेतों को उनके अर्थ के साथ ग्रहण करना महत्त्वपूर्ण है।

शिक्षक पढ़ना सिखाने के लिए तरह–तरह के तरीके, जैसे–फ्लैशकार्ड, चार्ट, रबर के जैसे प्रचलित सामग्री का उपयोग अक्षरों इस्तेमाल करते हैं। पढ़ने की प्रक्रिया में कई क्रियाएँ शामिल हैं। पढ़ते समय भाषा के उपयोग से जुड़े तीन तरह के संकेत सामने आते हैं–अक्षरो की आकृतियाँ और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ, वाक्य विन्यास और शब्दों के अर्थ।

बच्चों द्वारा किताबों का उलटना–पलटना पढ़ने की प्रक्रिया का प्रथम सोपान है। यह बच्चों में किताबों के प्रति जिज्ञासा एवं पढ़ने की इच्छा को प्रदर्शित करता है। किताबों को उलटने–पलटने के क्रम में किताबों के रंग–बिरंगे चित्र बच्चों को सर्वाधिक आकर्षित करते हैं। बच्चे चित्रों को ध्यान से देखते हैं और चित्र के बारे में मन में उठ रहे विभिन्न सवालों जैसे– क्या, कौन, कहाँ आदि का जवाब अपने पूर्वज्ञान के आधार पर ढूँढने में लग जाते हैं। चित्र पठन के क्रम में बच्चे चित्र के साथ दिए गए गद्यांश को भी पढ़ने का अभिनय करते हैं। उनके द्वारा किए जानेवाले ऐसे पठन प्रायः अनुमान आधारित होते हैं।

पढ़ना कई प्रकार से हो सकता है–सस्वर पठन, मौन पठन, गहन पठन, विस्तृत पठन, शब्द और अर्थ का अनुमान लगाते हुए पढ़ना, स्किप रीडिंग, स्कैन रीडिंग आदि।

प्रारंभिक कक्षाओं में लिखित सामग्री से समृद्ध (प्रिंट समृद्ध) माहौल की रचना पढ़ने लिखने के कई मौके देकर विकसित की जा सकती है। पढ़ने–लिखने के मौके हम उन्हें देंगे जहाँ वे विविध प्रकार की सामग्री से परिचित होंगे तथा उन्हें पढ़ने की चाह और कोशिश होगी। ये सामग्री कहानी, कविता, गीत, कक्षा टाइम–टेबल कुछ भी हो सकती है। पढ़ना सीखने–सिखाने हेतु पाठ्यपुस्तकों से इतर बाल साहित्य की आवश्यकता है। बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों के पढना सीखने–सिखाने के लिए यह आवश्यक है कि पढ़ने की शुरुआत व इसकी प्रक्रिया, बच्चों की रुचि एवं बाल साहित्य में तालमेल हो।

महत्त्वपूर्ण लिंक

1. www.ncert.nic.in
2. www.nuepa.org

3. http://www.educationbihar.gov.in
4. http://mhrd.gov.in/elementaryeducation

मूल्यांकन

1. पठन प्रारम्भ करने से पूर्व शिक्षार्थी को कौन–सी दक्षताओं का अर्जन कर लेना चाहिए?
2. पठन प्रक्रिया के कौन–कौन से चरण हैं?
3. मुखर पठन से क्या लाभ है?
4. मौन पठन का परीक्षण कैसे किया जा सकता है?
5. गहन पठन और विस्तृत पठन के लिए प्रयुक्त प्रक्रियाओं में क्या–क्या अंतर होता है?
6. वाचन एवं पठन में क्या अंतर है?
7. शिक्षार्थियों के मौन पठन का मूल्यांकन आप कैसे करेंगे?
8. शिक्षार्थी के पठन अभ्यास को प्रभावित करने वाले चार प्रमुख निर्धारकों का उल्लेख कीजिए।
9. भाषा शिक्षण में पठन की कौन–कौन सी विधियाँ हैं? प्रत्येक विधि का सविस्तार विवेचना कीजिए।
10. छात्रों में हिन्दी साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करने के लिए पठन के विभिन्न रूपों का प्रयोग कैसे करेंगे?
11. हिन्दी भाषा शिक्षण में मौन पठन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।
12. क्या आप बाल साहित्य से संबंधित केवल दस पुस्तकों के नाम बता सकते हैं?
13. अच्छे बाल साहित्य की विशेषताओं को बताएँ।
14. आप अपनी कक्षा में किस प्रकार से पुस्तक कोने का संयोजन करेंगे? सिलसिलेवार ब्यौरा दें।
15. कक्षा में बाल साहित्य किस प्रकार बच्चों के लिए उपयोगी हो सकता है?
16. कक्षा में पाठ्यपुस्तक के साथ बाल साहित्य का कैसे इस्तेमाल हो सकता है? सुझाएँ।
17. कक्षा में इस्तेमाल की जा रही चार पाठ्यपुस्तकों में से दो पाठ चुने जिनसे किसी बाल–साहित्य की जुड़ने की संभावना है।
18. कक्षा में पुस्तक का कोना होने से बच्चों में पढ़ने के प्रति रूझान कैसे उत्पन्न होगा? तर्क के साथ अपनी बात बताएँ।

संदर्भ

1. रीडिंग डेवलपमेंट सेल, पढ़ने की समझ, एन.सी.ई.आर.टी– 2008 दिल्ली
2. पढ़ना सीखाने की शुरूआत–2011 एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
3. पढ़ने की समझ–2009, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
5. बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008, एस.सी.ई.आर.टी, बिहार, पटना
6. असफल स्कूल, जॉन होल्ट, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल
7. स्वाध्याय सामग्री, लैंग्वेज लर्निंग फाउंडेशन, दिल्ली
8. माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, निरंजन कुमार सिंह, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

शब्दावली

डिकोडिंग–	अक्षर और ध्वनि के संबंध के ज्ञान के आधार पर किसी शब्द को प्रिंट से ध्वनि में बदलकर उच्चारित करने की क्षमता को डिकोडिंग कहते है। इसमें अलग–अलग वर्णों और वर्ण समुच्चयों (अक्षर) की ध्वनियाँ पहचानना, इन ध्वनियों को आपस में जोड़ना, पूरा शब्द एक साथ उच्चारित करना और उसका अर्थ समझना इत्यादि प्रक्रियाएँ आती है।
प्रवाहपूर्वक पठन–	किसी पाठ को एक उचित गति और उपयुक्त हाव–भाव के साथ सटीक ढंग से पढ़ने की क्षमता।
उभरता पठन–	इस शुरुआती चरण में बच्चों की प्रिंट की समझ पक्की हो जाती है और बच्चे पढ़ने का अभिनय करने लगते हैं। जैसे– लोगोग्राफिक पठन
लोगोग्राफिक पठन–	लिखे हुए शब्दों को अर्थपूर्ण चित्र (आकृति) के रूप में पहचानना (पढ़ना) होता है। इसमे पूरे शब्द को उसकी आकृति के आधार पर चित्र की तरह याद रखा जाता है। पढ़ना शुरू करने वाले बच्चे अधिकतर इसी स्तर से प्रारंभ करते है।
बाल साहित्य–	वैसे साहित्य जो बच्चों को ध्यान में रखकर लिखी गई हो। इन किताबों में चित्रों से भरपूर रोचक कहानियाँ, गीत–कविताएँ होती हैं। इस प्रकार की किताबें बच्चे स्वयं बना सकते है साथ ही, बच्चों की समझ रखने वाले साहित्यकारों की किताबे इस श्रेणी में आ सकती है। जैसे– पंचतंत्र, हितोपदेश की कहानियाँ।
पुस्तक कोना–	कक्षा कक्ष का वह स्थान जहाँ ढेरों बाल साहित्य बच्चों को पढ़ने के लिए रखे गए होते है। बच्चे यहाँ अपनी मर्जी के पुस्तक को चुन कर उसे पढ़ने के लिए आजाद होते है।
प्रिंट समृद्ध–	ऐसी कक्षा जहाँ विविध प्रकार की प्रिंट सामग्री उपलब्ध हो और बच्चों की पहुँच में हो। इसमे कविता/कहानी की किताबें, शब्द सूची, लेबल, गीत–कविताओं के चार्ट, लेखन सामग्री आदि शामिल होता है।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.),
महेन्द्रू, पटना, बिहार – 800006